Resource: Open Hindi Contemporary Version

License Information

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Numbers 1:1

1 इस्राएल के घराने के मिस्र देश से निकल जाने के बाद दूसरे
वर्ष के दूसरे महीने की पहली तारीख पर सीनायी के निर्जन
प्रदेश में मिलनवाले तंबू में याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी:

2 “इस्राएल के घराने की सारी सभा की, उनके परिवारों की,
उनके पितरों के अनुसार हर एक पुरुष की, व्यक्तिगत रूप
से गिनती करना.

3 यह आलेख उन सभी का होगा, जिनकी अवस्था बीस वर्ष
तथा इससे अधिक की है, इस्राएल में जो भी युद्ध के लिए योग्य
हैं, तुम तथा अहरोन उनके दल के अनुसार उनकी गिनती
करोगे.

4 इसके अलावा तुम्हारे साथ हर एक गोत्र का एक व्यक्ति
पितरों का प्रधान रहेगा.

5 “तुम्हारी सहायता के लिए ठहराए गए पुरुषों के नाम ये हैं:
“रियूबेन से शेदेउर का पुत्र एलिज़ुर;

6 शिमओन से ज़ुरीशद्दाय का पुत्र शेलुमिएल;

7 यूदाह से अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन;

8 इस्साखार से ज़ुअर का पुत्र नेथानेल;

9 ज़ेबुलून से हेलोन का पुत्र एलियाब;

10 योसेफ़ के पुत्रों में से: एफ्राईम में से अम्मीहूद का पुत्र
एलीशामा; मनश्शेह में से पेदाहज़ुर का पुत्र गमालिएल;

11 बिन्यामिन से गिदयोनी का पुत्र अबीदान;

12 दान से अम्मीशद्दाय का पुत्र अहीएज़र;

13 आशेर से ओखरन का पुत्र पागिएल;

14 गाद से देउएल का पुत्र एलियासाफ़;

15 नफताली से एनन का पुत्र अहीरा.”

16 ये वे व्यक्ति थे, जिनका चुनाव सारी सभा में किया गया. ये
पैतृक गोत्रों के प्रधान तथा इस्राएल के गोत्र के प्रमुख थे.

17 फिर मोशेह तथा अहरोन ने इन चुने हुए व्यक्तियों को अपने
साथ लिया,

18 तथा उन्होंने सारी सभा को इकट्ठा कर लिया, यह दूसरे
महीने की पहली तारीख थी. फिर सभी ने अपने पूर्वजों के नाम
के अनुसार और अपने गोत्रों एवं परिवारों के अनुसार, जितने
भी बीस वर्ष अथवा इससे अधिक आयु के थे, व्यक्तिगत रूप
से अपना अपना पंजीकरण करवाया,

19 ठीक जैसा याहवेह ने मोशेह को आदेश दिया था. इस
प्रकार मोशेह द्वारा सीनायी निर्जन प्रदेश में यह जनगणना पूरी
हुई.

20 इस्राएल के प्रथमजात रियूबेन के वंशज: बीस अथवा इससे
अधिक आयु के वे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके
पितरों के कुटुंब, एवं परिवारों के अनुसार.

21 इस प्रकार रियूबेन के गोत्र के 46,500 पुरुष नामांकित कर
लिए गए.

22 शिमओन के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे
सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके
पितरों एवं परिवारों के अनुसार;

23 शिमओन के गोत्र से 59,300.

24 गाद के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे
पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं
परिवारों के अनुसार,

25 गाद के गोत्र से 45,650.

26 यहूदाह के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे
सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके
पितरों एवं परिवारों के अनुसार,

27 यहूदाह के गोत्र से 74,600.

28 इस्साखार के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे
सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके
पितरों एवं परिवारों के अनुसार,

29 इस्साखार के गोत्र से 54,400.

30 ज़ेबुलून के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे
पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं
परिवारों के अनुसार,

31 ज़ेबुलून के गोत्र से 57,400.

32 योसेफ़-पुत्र: एफ्राईम के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक
आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब,
उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार,

33 एफ्राईम के गोत्र से 40,500.

34 योसेफ़-पुत्र मनश्शेह के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक
आयु के वे सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब,
उनके पितरों एवं परिवारों के अनुसार,

35 मनश्शेह के गोत्र से 32,200.

36 बिन्यामिन के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे
सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके
पितरों एवं परिवारों के अनुसार,

37 बिन्यामिन के गोत्र से 35,400.

38 दान के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे
पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं
परिवारों के अनुसार,

39 दान के गोत्र से 62,700.

40 आशेर के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे सारे
पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके पितरों एवं
परिवारों के अनुसार,

41 आशेर के गोत्र से 41,500.

42 नफताली के वंशज: बीस अथवा इससे अधिक आयु के वे
सारे पुरुष, जो युद्ध के लिए योग्य थे, उनके कुटुंब, उनके
पितरों एवं परिवारों के अनुसार,

43 नफताली के गोत्र से 53,400.

44 ये सभी वे हैं, जो मोशेह तथा अहरोन और इस्राएल के बारह
गोत्र के प्रधानों द्वारा जो अपने-अपने परिवारों का प्रतिनिधित्व
करते हैं, इस गणना में गिने गए थे.

45 फिर उनके पितरों के अनुसार बीस वर्ष तथा इससे अधिक
अवस्था के युद्ध के लिए योग्य इस्राएल के सभी पुरुषों की
गिनती की गई.

46 गणित पुरुषों की संख्या कुल 6,03,550 हुई.

47 किंतु लेवियों के गोत्र की गिनती उनके पितरों के अनुसार
उनमें नहीं की गई.

48 क्योंकि याहवेह मोशेह को यह संदेश दे चुके थे:

49 "मात्र लेवी गोत्र की गिनती न की जाए, वे इस्राएल के घराने
की गिनती में शामिल नहीं होंगे.

50 किंतु तुम लेवियों को साक्षी के तंबू, इससे संबंधित सारी
सज्जा तथा इसकी सारी सामग्री के लिए नियुक्त करोगे. वे ही
साक्षी के तंबू तथा इससे संबंधित सारी वस्तुओं को उठाया
करेंगे, वे ही इनके रख रखाव के अधिकारी होंगे. इसके
अलावा वे साक्षी के तंबू के आस-पास पड़ाव डाला करेंगे.

51 जब कभी साक्षी के तंबू को यात्रा के पहले गिराना आवश्यक
हो, तब लेवी ही इसे गिराएंगे, तथा जब कभी पड़ाव डालना
ज़रूरी हो जाए, तो लेवी ही इसे खड़ा करेंगे. इस अवसर पर
यदि कोई सामान्य व्यक्ति निकट आ जाए, उसे मृत्युदण्ड
दिया जाए.

52 सारा इस्राएल अपने-अपने दल के अनुसार डेरा डालेगा,
हर एक अपने-अपने ठहराए गए समूह में तथा अपने-अपने
झंडे के निकट डेरा डाला करेगा.

53 किंतु लेवी हमेशा ही साक्षी के तंबू के आस-पास ही पड़ाव
डाला करेंगे कि इस्राएल के घराने पर मेरा क्रोध न भड़के. तब
लेवी ही साक्षी के तंबू के अधिकारी होंगे."

54 इस्राएल के घराने ने यही किया, जैसा याहवेह द्वारा मोशेह
को आज्ञा दी गई थी.

Numbers 2:1

1 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आज्ञा दी:

2 "इस्राएल के वंश प्रत्येक अपने-अपने झंडे के नीचे ही पड़ाव
डाला करेंगे. ये झंडे उनके पिता के गोत्रों की निशानी होंगे. वे
मिलनवाले तंबू के आस-पास उसकी ओर मुख किए हुए
अपने-अपने शिविर खड़े करेंगे."

3 वे, जो अपने शिविर सूर्योदय की दिशा, पूर्व में स्थापित करेंगे,
वह होगा यहूदाह गोत्र, वे अपने शिविर अपने झंडे के नीचे
स्थापित करेंगे. यहूदाह के गोत्र का प्रधान होगा अम्मीनादाब
का पुत्र नाहशोन.

4 उनके सैनिकों की संख्या है 74,600.

5 उनके निकट होगा इस्साखार का शिविर. इस्साखार के गोत्र
का प्रधान होगा ज़ुअर का पुत्र नेथानेल.

6 उसके सैनिकों की संख्या है 54,400.

7 इसके बाद होगा ज़ेबुलून का शिविर. ज़ेबुलून गोत्र का प्रधान
होगा हेलोन का पुत्र एलियाब

8 उसके सैनिकों की संख्या है 57,400.

9 यहूदाह के शिविर के लिए गिने गए सैनिक, जिन्हें उनके दलों
के अनुसार तैयार किया गया था, वे गिनती में 1,86,400 थे. वे
सबसे पहले कूच करेंगे.

10 दक्षिण दिशा: ये रियूबेन के झंडे के नीचे उसके सैनिकों का
शिविर होगा तथा रियूबेन गोत्र का प्रधान शेदेउर का पुत्र
एलिज़ुर होगा.

11 उसके सैनिकों की संख्या है 46,500.

12 इसके पास वाला शिविर होगा शिमओन गोत्र का, तथा
उनका प्रधान होगा ज़ुरीशद्दाय का पुत्र शेलुमिएल.

13 इनके सैनिकों की संख्या है 59,300.

14 इसके बाद गाद का गोत्र, और इनका प्रधान था देउएल का
पुत्र एलियासाफ़.

15 इसके सैनिकों की संख्या है 45,650.

16 रियूबेन के शिविर के गिने गए सैनिकों की संख्या है
1,51,450. ये कूच करते हुए दूसरे स्थान पर रहा करेंगे.

17 इनके बाद मिलन वाला तंबू और लेवियों का शिविर कूच
करेगा. लेवियों का शिविर सारे शिविरों के बीच होगा. जिस
प्रकार वे अपने शिविर स्थापित करते हैं, उसी क्रम में वे कूच
करेंगे; अपने-अपने झंडों के साथ.

18 पश्चिमी दिशा में: उनके झंडे के नीचे एफ्राईम गोत्र की सेना
का शिविर होगा. इनका प्रधान होगा अम्मीहूद का पुत्र
एलीशामा.

19 उसकी सेना की, गिन कर लिखी गई संख्या है 40,500.

20 उसके पास होंगे मनश्शेह के गोत्र. उनका प्रधान था
पेदाहज़ुर का पुत्र गमालिएल.

21 उनके सैनिकों की संख्या है 32,200.

22 इसके बाद बिन्यामिन गोत्र के लोग. उनका प्रधान था
गिदयोनी का पुत्र अबीदान.

23 उसके सैनिकों की संख्या 35,400 गिनी गई.

24 एफ्राईम गोत्र के दलों के अनुसार की गई सैनिकों की
गिनती में संख्या है, 1,08,100. यात्रा के अवसर पर वे तीसरे
स्थान पर रहेंगे.

25 उत्तर दिशा में उनके झंडे के नीचे दान गोत्र के सैनिकों का
स्थान होगा. इनका प्रधान था अम्मीशद्दाय का पुत्र अहीएज़र.

26 उसके सैनिकों की संख्या है 62,700.

27 इनसे लगा हुआ दूसरा शिविर आशेर गोत्र का होगा. इनका
प्रधान था ओखरन का पुत्र पागिएल.

28 इसके गिने हुए सैनिकों की संख्या है 41,500

29 इसके बाद होगा नफताली गोत्र का शिविर. इनका प्रधान
था एनन का पुत्र अहीरा.

30 उसके सैनिक गिनती में 53,400 थे.

31 दान के सैनिकों की संख्या हुई 1,57,600. वे सभी अपने-
अपने झंडे के नीचे सबसे पीछे चला करेंगे.

32 ये ही थे सारे इस्राएली, जिनकी गिनती उनके गोत्रों के
अनुसार की गई थी. वे सभी, जिनकी गिनती उनके दलों के
अनुसार की गई थी, संख्या में 6,03,550 थे.

33 किंतु इस गिनती में लेवी नहीं गिने गए, क्योंकि यह मोशेह
को दी गई याहवेह की आज्ञा थी.

34 इस्राएल के घराने ने यह प्रक्रिया पूरी कर ली. वे मोशेह को
दी गई याहवेह की आज्ञा के अनुसार शिविर डाला करते थे,
इसी क्रम में अपने-अपने गोत्र के अनुसार अपने-अपने गोत्र
और कुटुंब में यात्रा करते थे.

Numbers 3:1

1 जब याहवेह ने मोशेह से सीनायी पर्वत पर बातें की, तब
मोशेह तथा अहरोन की पीढ़ियां इस प्रकार थीं:

2 अहरोन के पुत्रों के नाम: जेठा पुत्र नादाब फिर अबीहू,
एलिएज़र तथा इथामार.

3 अहरोन के ये पुत्र अभिषिक्त पुरोहित थे. इन्हें अहरोन ने ही
पुरोहित होने के लिए अभिषिक्त किया था.

4 इनमें नादाब तथा अबीहू की मृत्यु उस परिस्थिति में याहवेह
के ही सामने हो गई थी, जब उन्होंने सीनायी के निर्जन प्रदेश
के रास्ते याहवेह को भेंट चढ़ाई, किंतु उन्होंने अपवित्र आग
का उपयोग किया. ये दोनों निस्संतान थे. इस कारण एलिएज़र
तथा इथामार ही अपने पिता अहरोन के जीवनकाल में
पुरोहित का काम करते रहे.

5 फिर याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

6 “लेवी गोत्र को बुलाकर उन्हें अहरोन की उपस्थिति में ले
जाओ ताकि वे पुरोहित अहरोन की सहायता के लिए तैयार
रहें.

7 वे मिलनवाले तंबू के सामने उपस्थित रहते हुए अहरोन तथा
सारे इस्राएल के लिए अपनी सेवा किया करें, जिससे यह
उनके लिए साक्षी के तंबू की सेवा हो.

8 इस्राएलियों से ज़िम्मेदारियों को निभाने के अलावा वे
मिलनवाले तंबू की वस्तुओं का ध्यान रखेंगे, यह उनकी साक्षी
के तंबू संबंधित सेवा होगी.

9 इस प्रबंध के अंतर्गत तुम सारे लेवियों को अहरोन तथा
उनके पुत्रों के अधीन कर दोगे, वे सारे इस्राएल में से उन्हें सौंप
दिए गए हैं.

10 इस प्रकार तुम अहरोन तथा उसके पुत्रों को नियुक्त कर
दोगे, कि वे पुरोहित के रूप में सेवा करते रहें, किंतु जो भी
साधारण व्यक्ति साक्षी के तंबू के निकट आ जाए, उसे प्राण-
दंड दे दिया जाए.”

11 याहवेह ने मोशेह को यह आदेश भी दिया,

12 “अब यह देखो, मैंने लेवी को, सारे इस्राएल में से प्रत्येक
पहलौठे के स्थान पर, अर्थात् उस संतान के स्थान पर, जो गर्भ
का प्रथम फल होता है, अलग कर लिया है, कि लेवी सिर्फ मेरे
होकर रहें.

13 क्योंकि सभी पहलौठे मेरे हैं. जिस दिन मैंने मिस्र देश में सारे
पहिलौठों को मारा, मैंने इस्राएल के घराने में से सभी पहिलौठों
को अपने लिए अलग कर लिया था; मनुष्यों एवं पशुओं, दोनों
में से. वे मेरे रहेंगे. मैं याहवेह हूं.”

14 इसके बाद याहवेह ने सीनायी के निर्जन प्रदेश में मोशेह को
यह आज्ञा दी,

15 “तुम लेवी के वंश की, उनके गोत्र तथा उनके परिवारों के
अनुसार, गिनती करोगे; हर एक नर बालक की जिसकी आयु
एक महीने से अधिक है.”

16 इसलिये मोशेह ने उन्हें जैसी आज्ञा दी थी, याहवेह की आज्ञा
के अनुसार उनकी गिनती की.

17 उनके नामों के अनुसार लेवी के पुत्र इस प्रकार थे: गेरशोन,
कोहाथ, तथा मेरारी.

18 परिवारों के अनुसार गेरशोन के पुत्र: लिबनी तथा शिमेई.

19 परिवारों के अनुसार कोहाथ के पुत्र: अमराम, इज़हार,
हेब्रोन तथा उज्ज़िएल.

20 परिवारों के अनुसार मेरारी के पुत्र: माहली तथा मूशी ये ही
हैं. लेवियों के परिवार उनके पितरों के घरानों के अनुसार.

21 गेरशोन से लिबनियों तथा शिमेईयों के परिवारों का गोत्र
निकला और ये गेरशोनियों का परिवार कहलाए.

22 जब एक माह से ऊपर की अवस्था के नर गिने गए; उनकी
संख्या 7,500 थी.

23 गेरशोनियों के परिवारों के लिए यह तय किया गया कि वे
साक्षी के तंबू के पीछे पश्चिम दिशा में अपने शिविर डाला
करेंगे.

24 गेरशोनियों के घराने का प्रधान था लाएल का पुत्र
एलियासाफ़.

25 गेरशोन-वंशजों के लिए मिलनवाले तंबू के संबंध में
निर्धारित कार्य था साक्षी के तंबू का आंगन, उसके आवरण
तथा मिलनवाले तंबू के द्वार का पर्दा,

26 आंगन के पर्दे, उस आंगन के द्वार का पर्दा, जो वेदी एवं
साक्षी के तंबू के चारों ओर है, उसकी डोरियां, जो इनसे
संबंधित विधियों के अनुसार प्रयोग की जाती हैं.

27 कोहाथ से अमरामियों का, इज़हारियों का, हेब्रोनियों का
तथा उज्जिएलियों के परिवारों का कुल निकला; ये ही
कोहाथियों के परिवार थे.

28 जब एक महीने से अधिक आयु के हर एक पुरुष की गिनती
की गई, तो संख्या 8,600 पाई गई. ये पवित्र स्थान से संबंधित
कार्य किया करते थे.

29 इनके शिविर डालने के लिए ठहराया हुआ स्थान साक्षी के
तंबू का दक्षिणी इलाका था.

30 कोहाथियों के गोत्रों के परिवारों का प्रधान था उज्ज़िएल का
पुत्र एलिज़ाफ़ान.

31 इनके लिए ठहराई हुई ज़िम्मेदारी थी: वाचा का संदूक, मेज़,
दीवट, वेदियां, उन्हीं के द्वारा उपयोग किए जानेवाले पवित्र
स्थान के सारे बर्तन, पर्दे तथा उनसे संबंधित सारी सेवाएं.

32 लेवियों का प्रमुख प्रधान था पुरोहित अहरोन का पुत्र
एलिएज़र. इसे ही पवित्र स्थान से संबंधित सारी सेवाओं की
देखभाल करनी होती थी.

33 मेरारी से माहलियों तथा मुशियों के परिवारों का कुल
निकला, जो मेरारी के परिवार कहलाए.

34 जब एक महीने से ऊपर की आयु के पुरुष गिने गए; उनकी
संख्या 6,200 थी.

35 मेरारी के कुल के परिवारों का प्रधान था अबीहाइल का पुत्र
ज़ूरिएल. इनके शिविर के लिए ठहराया हुआ स्थान साक्षी के
तंबू के उत्तर में था.

36 मेरारी के वंशजों के लिए ठहराया हुआ कार्य यह था: साक्षी
के तंबू के चौखट, उसकी छड़ें, उसके खंभे, उसके
आधारपात्र, उसका सारा सामान तथा इन सबसे संबंधित सारे
कार्य,

37 तथा आंगन के आस-पास के खंभे तथा उनके आधारपात्र,
उनकी खूंटियां तथा उनकी डोरियां.

38 वे, जिन्हें सूर्योदय की दिशा, साक्षी के तंबू के पूर्व में
मिलनवाले तंबू के सामने शिविर डालने के लिए नियुक्त किया
गया था, वे मोशेह एवं अहरोन तथा उनके पुत्र हैं. वे पवित्र
स्थान से संबंधित कार्यों की रखवाली करेंगे, जो इस्राएल के
प्रति उनका कर्तव्य होगा. किंतु यदि कोई साधारण व्यक्ति
पवित्र स्थान के निकट आए, तो उसको मार दिया जायेगा.

39 याहवेह द्वारा मोशेह एवं अहरोन को दी गई आज्ञा के
अंतर्गत, जो गिनती उनके परिवारों के अनुसार की गई थी, हर
एक महीने से ऊपर की आयु के पुरुष की गिनती से प्राप्त कुल
संख्या थी 22,000.

40 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "इस्राएल में एक
महीने से अधिक आयु के हर एक पुरुष की गिनती करो तथा
उनके नामों की सूची बनाओ.

41 इस्राएल के घराने के पहिलौठों के तथा इस्राएल के पशुओं
के पहिलौठों के स्थान पर तुम मेरे लिए लेवियों को अलग कर
लोगे. मैं ही वह याहवेह हूं."

42 इसलिये मोशेह ने इस्राएल के घराने के सभी पहिलौंठों की
गिनती की, जैसा कि उन्हें याहवेह की ओर से आज्ञा दी गई थी.

43 ये सभी एक महीने से अधिक आयु के पुरुष थे, जिनकी
गिनती नामों एवं संख्या के आधार पर की गई. इनकी संख्या
कुल 22,273 हुई.

44 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

45 "इस्राएल के घराने के सभी पहिलौठों के स्थान पर, लेवियों
एवं उनके पशुओं को अलग कर लो. लेवी मेरे होंगे. मैं ही वह
याहवेह हूं.

46 इस्राएल के घराने के 273 पहिलौठों की छुड़ौती के लिए,
जो लेवियों की संख्या से अधिक हैं,

47 तुम प्रति व्यक्ति पांच शेकेल लोगे; तथा ये शेकेल पवित्र
स्थान के मानक शेकेल होंगे एक शेकेल में बीस गेराह.

48 तुम यह छुड़ौती की राशि अहरोन तथा उसके पुत्रों को सौंप दोगे."

49 इसलिये मोशेह ने उन व्यक्तियों से, जो लेवियों की संख्या के अलावा थे, वह छुड़ौती की राशि इकट्ठी कर ली, उनके अलावा, जो लेवियों की संख्या के अलावा थे.

50 इस्राएल के पहिलौठों से उन्होंने पवित्र स्थान के मानक शेकेल में धनराशि इकट्ठी कर ली, जो 1,365 शेकेल थी.

51 यह राशि मोशेह ने अहरोन एवं उसके पुत्रों को, याहवेह के आदेश के अनुसार, जैसा आदेश उन्होंने मोशेह को दिया था, सौंप दी.

Numbers 4:1

1 इसके बाद याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आज्ञा दी:

2 "लेवी के घराने में से, परिवारों के अनुसार कोहाथ के घराने की गिनती उनके कुल और परिवारों के अनुसार करो.

3 तीस से पचास वर्ष की आयु के सभी पुरुषों की गणना करोगे. ये वे सभी होंगे, जो मिलनवाले तंबू में सेवा करने के लिए चुने जाते हैं.

4 "कोहाथ के घराने के लिए मिलनवाले तंबू में परम पवित्र वस्तुओं के उपयोग से संबंधित कार्य यह होगा.

5 जब यात्रा के लिए छावनी कूच करने पर हो, तब अहरोन एवं उसके पुत्र भीतर जाकर ढंकने वाले पर्दे को उतारेंगे और साक्षी पत्र के संदूक को इससे ढांक देंगे.

6 इसके बाद वे इस पर सूंस की खाल फैला देंगे तथा इस पर वे संपूर्ण नीले रंग के वस्त्र को फैलाकर संदूक के दोनों डंड़े उनके स्थानों में पिरो देंगे.

7 "उपस्थिति रोटी की मेज़ पर भी वे एक संपूर्ण नीले रंग का वस्त्र फैला देंगे और इस पर वे बर्तन, बलि के कटोरे तथा पेय बलि की सुराहियां रख देंगे. उस पर वहां सदैव रखी जाने के लिए नियत रोटी भी रखी जाना ज़रूरी है.

8 इन सबके ऊपर वे एक लाल रंग का वस्त्र फैला देंगे तथा इसके भी ऊपर होगी सूंस की खाल. इसके बाद वे इसके डंड़े उनके स्थान पर पिरो देंगे.

9 "फिर वे एक नीले रंग के वस्त्र से दीवट को इसके दीपों एवं इन्हें बुझाने के उपकरण के साथ ही ढांक देंगे, इसके अलावा इसके साथ उपयोग होनेवाले बर्तन, तेल के बर्तन, जो इसके साथ ही इस्तेमाल किए जाते हैं.

10 इन सभी बर्तनों को वे सूंस की खाल से ढांक देंगे तथा इसे वे उठानेवाले डंडों पर रख देंगे.

11 "सोने की वेदी पर वे एक नीले रंग का वस्त्र फैला देंगे इसके बाद वे इसे सूंस की खाल से ढांक कर और फिर डंडों को इसमें पिरो देंगे.

12 "इसके बाद वे पवित्र स्थान में प्रयोग के लिए ठहराए गए सभी बर्तन लेकर उन्हें एक नीले रंग के वस्त्र में रख देंगे, इसे सूंस की खाल से ढांक देंगे, और तब उठाने के डंड़े इसमें पिरो देंगे.

13 "वे वेदी की राख को हटाकर उसे एक बैंगनी वस्त्र से ढांक देंगे.

14 वे इसके साथ ही इससे संबंधित सारे बर्तन उस पर रख देंगे: अग्नि पात्र, अंगीठियां, कांटे, फावड़े, चिलमचियां तथा वेदी से संबंधित पात्र तथा इन सब पर वे सूंस की खाल फैला देंगे और तब उठाने के डंड़े उसके स्थान पर पिरो देंगे.

15 "जब अहरोन एवं उसके पुत्र पवित्र वस्तुओं तथा पवित्र स्थान के वस्त्रों को ढांक चुकें, और छावनी कूच के लिए तैयार हो, कोहाथ के पुत्र उनको उठाने जाएं, वे यह ध्यान रखें कि किसी भी पवित्र वस्तु से वे छू न जाएं; नहीं तो उनकी मृत्यु तय है. कोहाथ के घराने की यह ज़िम्मेदारी है कि वे मिलनवाले तंबू की इन वस्तुओं को उठाया करें.

16 "अहरोन के पुत्र पुरोहित एलिएज़र को, दीपों के लिए उपयोग में लाए जानेवाले तेल, सुगंधधूप, नित्य अन्नबलि, अभिषेक के तेल; अर्थात् पूरे साक्षी के तंबू तथा उसमें रखी वस्तुओं, पवित्र स्थान तथा संबंधित वस्तुओं की पूरी ज़िम्मेदारी होगी."

17 इसके बाद याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आज्ञा
दी,

18 “यह ध्यान रखना कि लेवियों में से कोहाथियों के परिवार
नष्ट न हो जाएं.

19 किंतु जब वे पवित्र वस्तुओं के निकट जाएं, तो उनके जीवन
की सुरक्षा की दृष्टि से यह अवश्य किया जाए: अहरोन तथा
उसके पुत्र उनके साथ भीतर जाकर हर एक को उसके लिए
ठहराया हुआ कार्य सौंप दें;

20 किंतु किसी भी परिस्थिति में, कोहाथियों भीतर जाकर एक
क्षण के लिए भी पवित्र वस्तुओं पर दृष्टि करना उनके लिए
घातक सिद्ध होगा.”

21 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी,

22 “अब गेरशोन के घराने की गिनती उनके परिवारों एवं कुल
के अनुसार करो.

23 तीस से पचास वर्ष की आयु के सभी पुरुषों की गिनती
करनी है. ये सभी वे होंगे, जो मिलनवाले तंबू में सेवा के लिए
चुने जाते हैं.

24 “गेरशोनियों के परिवारों के लिए ठहराई हुई सेवा इस
प्रकार है: सेवा करना तथा भार उठाना.

25 वे साक्षी तंबू, अर्थात् मिलनवाले तंबू के पर्दे एवं ढकने वाले
वस्त्र, सूंस के चमड़े का पर्दा, मिलनवाले तंबू के द्वार के लिए
पर्दा,

26 उस आंगन के पर्दे जो साक्षी तंबू और वेदी के चारों ओर है,
उसके द्वार का पर्दा, पर्दों की डोरें तथा काम में आनेवाले सभी
सामान तथा वह सब जो सामान्यतः किया जाता है, वे करते
रहेंगे.

27 गेरशोनियों के लिए जो भी सेवाएं, तथा सामग्री सामान
उठाने से संबंधित जवाबदारी ठहराई गई है, उनको वे सिर्फ
अहरोन एवं उसके पुत्र के आदेश पर ही किया करेंगे, तथा तुम
भार उठाने से संबंधित जवाबदारी उन्हें सौंप दोगे.

28 गेरशोनियों का उनके परिवारों के अनुसार मिलनवाले तंबू
में किए जाने के कार्यों का विवरण यही है, तथा उनकी सेवाओं
के विषय में निर्देश पुरोहित अहरोन के पुत्र इथामार द्वारा
प्रदान किए जाएंगे.

29 “मेरारी के पुत्रों की गिनती उनके परिवारों के अनुसार
उनके पितरों के घराने में करोगे.

30 तीस से पचास वर्ष की आयु के सभी पुरुषों की गिनती
करनी है. ये वे होंगे, जिन्हें मिलनवाले तंबू में सेवा के लिए भर्ती
किया जाता है.

31 उनके द्वारा मिलनवाले तंबू की सेवा में उठाने का कार्य इस
प्रकार किया जाएगा: साक्षी तंबू के पल्ले, छड़ें, खंभे, तथा
आधार,

32 आंगन के चारों ओर के खंभे, उनके आधार, उनकी खूंटियां,
उनकी डोरियां तथा उनके उपकरण, उनके उपयोग से जुड़ी
हर चीज़. तुम हर एक व्यक्ति को उसका नाम लेकर वे वस्तुएं
सौंपोगे, जिनका भार वह उठाया करेगा.

33 मिलनवाले तंबू में पुरोहित अहरोन के पुत्र इथामार के
निर्देश में मेरारी के वंशजों के परिवारों द्वारा की जाने के लिए
निर्धारित सेवा यही होगी.”

34 फिर मोशेह अहरोन, तथा सारी सभा के प्रधानों ने कोहाथ
के घराने के परिवारों के अंतर्गत उनके पितरों और कुलों के
अनुसार उनकी गिनती की.

35 वे सभी, जो आयु में तीस से पचास वर्ष के पुरुष हैं, जिनकी
नियुक्ति मिलनवाले तंबू की सेवा के लिए की गई थी, इसमें
गिने गए.

36 परिवारों के अनुसार इनकी कुल संख्या 2,750 थी.

37 ये सभी कोहाथियों के परिवारों से गिने गए लोग थे; हर एक,
जो मिलनवाले तंबू में सेवारत था, जिनकी गिनती मोशेह एवं

अहरोन ने मोशेह को याहवेह द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार की थी.

38 गेरशोन के परिवारों के अंतर्गत पितरों और कुलों के
अनुसार सभी व्यक्तियों की गिनती की गई.

39 वे व्यक्ति, जिनकी आयु तीस वर्ष से ऊपर तथा तीस से
पचास वर्ष है, हर एक पुरुष, जिसे मिलनवाले तंबू में सेवा के
लिए चुना गया,

40 परिवारों के अंतर्गत, पितरों और कुलों के अनुसार गिने गए
व्यक्तियों की संख्या 2,630 थी.

41 ये गेरशोन के घराने के परिवारों के गिने गए समस्त व्यक्ति
थे; हर एक, जो मिलनवाले तंबू में सेवा करता था. जिनकी
गिनती याहवेह के आदेश के अंतर्गत मोशेह तथा अहरोन ने
की.

42 मेरारी के घराने की उनके परिवारों के अंतर्गत उनके पितरों
और कुलों के अनुसार गिने गए.

43 हर एक पुरुष, जिसकी आयु तीस वर्ष से अधिक तथा तीस
से पचास वर्ष है, जिसे मिलनवाले तंबू की सेवा के लिए चुना
गया था,

44 परिवारों के अनुसार उनकी संख्या थी 3,200.

45 ये मेरारी के घराने के परिवारों के अनुसार गिने गए समस्त
व्यक्ति हैं, जिनकी गिनती मोशेह तथा अहरोन ने याहवेह के
मोशेह को दिए आदेश के अंतर्गत की थी.

46 मोशेह, अहरोन तथा इस्राएल के प्रधानों द्वारा सभी लेवी
पुरुषों की,

47 हर एक पुरुष जिनकी आयु तीस से पचास वर्ष है, जो
मिलनवाले तंबू में सेवा के लिए उनके परिवारों तथा पितरों
और कुलों के अनुसार गिनती की गई.

48 उनकी संख्या 8,580 थी.

49 यह गिनती मोशेह को याहवेह द्वारा दी गई आज्ञा के अंतर्गत
की गई. हर एक व्यक्ति की गिनती की गई, जो सेवा करता था,
अथवा भार उठानेवाला था. इस प्रकार ये सभी गिने गए व्यक्ति
थे; मोशेह को याहवेह द्वारा दी गई आज्ञा यही है.

Numbers 5:1

1 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो कि वे हर एक कुष्ठरोगी,
हर एक ऐसे व्यक्ति को, जिसे स्राव हो रहा हो तथा हर एक
को, जो किसी शव को छूने के कारण अशुद्ध हो चुका है,

3 उसे शिविर के बाहर कर दें, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष;
तुम इन्हें शिविर के बाहर इसलिये कर दोगे कि वह शिविर,
जहां मैं इनके बीच निवास करता हूं, दूषित न हो जाए."

4 इस्राएल के घराने ने यही किया तथा ऊपर लिखे व्यक्तियों
को शिविर के बाहर कर दिया; ठीक जैसा याहवेह ने मोशेह
को आज्ञा दी थी. इस्राएल के घराने ने इस आज्ञा का पालन
किया.

5 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

6 "इस्राएल के घराने को यह सूचित करो: 'जब कोई स्त्री
अथवा पुरुष किसी के साथ गलत व्यवहार करता है, जो
याहवेह के विरुद्ध विश्वासघात है, अर्थात् वह व्यक्ति दोषी है,

7 तब वह अपना पाप स्वीकार करे, अपनी इस भूल की पूरी-
पूरी भरपाई करे, तथा इसके अलावा उस राशि में उसका
पांचवा अंश भी जोड़े और उस व्यक्ति को सौंप दे, जिसके
साथ उसने यह दुर-व्यवहार किया है.

8 किंतु उस स्थिति में, जब उस व्यक्ति का कोई संबंधी नहीं हो,
जिसके साथ दुर-व्यवहार हुआ है, तब भरपाई याहवेह को दी
जाए जिसे पुरोहित स्वीकार करेगा. यह उस मेढ़े के अतिरिक्त
होगी, जो प्रायश्चित के लिए ठहराया जाता है.

9 सारी पवित्र भेंट वस्तुओं से संबंधित सारा दसवां अंश, जो
इस्राएल का घराना पुरोहित को दिया करता है, वह पुरोहित
का होगा.

10 इस प्रकार हर एक व्यक्ति द्वारा चढ़ाई गई पवित्र भेंटें
पुरोहित की होंगी, जो कुछ कोई भी व्यक्ति पुरोहित को भेंट
करता है, वह पुरोहित ही का हो जाता है.' "

11 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी,

12 "इस्राएल के घराने को यह सूचित करो: यदि किसी व्यक्ति
की पत्नी बुरी चाल चलकर वैवाहिक जीवन में विश्वासघात कर
देती है,

13 किसी ने उससे संभोग किया है, और उसके पति को इस
बात की कोई भी जानकारी नहीं है, तथा वह उजागर नहीं है,
जबकि वह अपवित्र हो चुकी है, (किंतु इस विषय में कोई
गवाह भी नहीं है. उसे संभोग करते हुए किसी ने भी नहीं देखा
है),

14 यदि पति को पत्नी पर संदेह हो जाता है, क्योंकि उसने स्वयं
को अपवित्र कर लिया है. दूसरी स्थिति में, पति अपनी पत्नी पर
संदेह करने लगता है, उसे पत्नी पर संदेह हो जाता है, जबकि
पत्नी ने स्वयं को दूषित किया ही नहीं है,

15 तब पति अपनी पत्नी को पुरोहित के सामने लाएगा. वह
अपनी पत्नी से संबंधित भेंट चढ़ाने के लिए एक एफाह का
दसवां भाग जौ का आटा साथ लाएगा. वह इस पर न तो तेल
उण्डेलेगा और न लोबान डालेगा, क्योंकि यह संदेह के लिए
अर्पित की जा रही बलि है. यह स्मरण अन्नबलि है, अधर्म के
स्मरण की बलि.

16 " 'इसके बाद वह स्त्री को अपने निकट बुलाकर याहवेह के
सामने खड़ा कर देगा.

17 पुरोहित मिट्टी के पात्र में पवित्र जल लेकर साक्षी तंबू की
भूमि पर से कुछ धूल लेकर उस जल में मिला देगा.

18 फिर पुरोहित उस स्त्री को याहवेह के सामने खड़ा करेगा
तथा उस स्त्री के बाल खोल देने की आज्ञा देगा. इसके बाद वह
स्मरण की अन्नबलि उसके हाथों में दे देगा, जो वास्तव में
संदेह की बलि है. पुरोहित के हाथों में इस समय वह कड़वाहट
का जल होगा, जो शाप लगने का कारण होता है.

19 पुरोहित उस स्त्री को शपथ लेने का आदेश देकर कहेगा,
"अपने पति के साथ वैवाहिक जीवन में रहते हुए यदि किसी
पराए पुरुष ने तुम्हारे साथ संभोग नहीं किया है तथा तुम यदि
कुकर्म में अपवित्र नहीं हुई हो, तो इस कड़वाहट के जल से
आनेवाले शाप का तुम पर कोई प्रभाव न होगा.

20 किंतु, यदि अपने पति के साथ होते हुए भी, वैवाहिक जीवन
में भ्रष्ट हो चुकी हो, यदि तुमने अपने पति के अलावा किसी
पराए पुरुष से संभोग करने के द्वारा स्वयं को अपवित्र कर
लिया है"—

21 फिर पुरोहित उस स्त्री को शाप की शपथ लेने का आदेश
देगा, और उससे कहेगा, "याहवेह लोगों के बीच तुम्हें इस झूठी
शपथ का शाप बना दें, याहवेह तुम्हारी जांघ को गला दें,
तुम्हारा पेट फूल जाए,

22 जब तुम यह जल जो श्राप लानेवाला है, पियोगी तो तुम्हारा
पेट फूल जाएगा, तथा तुम्हारी जांघ गल जाएगी." " 'वह स्त्री
कहेगी, "आमेन, आमेन."

23 " 'तब वह पुरोहित ये शाप एक चमड़े के पत्र पर लिख देगा
और इन्हें उस कड़वाहट के जल में धो देगा.

24 इसके बाद वह यह शाप लानेवाला कड़वाहट का जल उस
स्त्री को पीने के लिए दे देगा; वह इसे पी लेगी और यह जल
कड़वाहट पैदा कर देगा.

25 फिर पुरोहित उस स्त्री के हाथों से वह संदेह की अन्नबलि
ले लेगा तथा इसे याहवेह के सामने हिलाएगा और इसे वेदी पर
ले जाएगा.

26 वह इसमें से एक मुट्ठी भर स्मरण अन्नबलि लेकर वेदी की
आग में डालकर इसे जलाएगा तथा उस स्त्री को वह जल पीने
की आज्ञा देगा.

27 जब वह उसे जल पिलाया जा चुके तब यह होगा, कि यदि
उसने अपने वैवाहिक जीवन में विश्वासघात किया है; वह शाप
लानेवाला जल उसके पेट में जाकर कड़वाहट पैदा करेगा,

उसका पेट फूल जाएगा तथा उसकी जांघ गल जाएगी और
वह स्त्री अपने लोगों के बीच शापित घोषित हो जाएगी.

28 किंतु यदि उस स्त्री ने स्वयं को अपवित्र नहीं किया है, वह
शुद्ध है, वह इससे निर्दोष होकर गर्भधारण करती रहेगी.

29 " 'संदेह से संबंधित विधि यही होगी: यदि वैवाहिक जीवन
में होते हुए कोई स्त्री भ्रष्ट होकर स्वयं को अपवित्र कर लेती
है,

30 अथवा यदि किसी पुरुष में अपनी पत्नी के प्रति संदेह के
भाव पैदा हो जाते हैं, वह स्त्री को याहवेह के सामने उपस्थित
करेगा तथा पुरोहित यह सारी प्रक्रिया की विधि उसके साथ
पूरी करेगा.

31 इसके अलावा, वह पुरुष दोष मुक्त रहेगा, किंतु वह स्त्री
अपने अधर्म का भार स्वयं उठाएगी.' "

Numbers 6:1

1 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 "इस्राएल के घराने को बुलाकर उन्हें यह आज्ञा दो: 'जब कोई
स्त्री अथवा कोई पुरुष नाज़ीरी संकल्प करता है, तथा यह
संकल्प समर्पण के विषय में हो कि वह स्वयं को याहवेह के
लिए समर्पित करता है,

3 वह दाखमधु से अलग रहे, सिरके का सेवन न करे, चाहे वह
अंगूर के रस से बना हुआ हो अथवा किसी नशीले द्रव्य का.
वह अंगूर के रस का भी सेवन न करे, वह न तो वाटिका से लाए
गए अंगूरों का सेवन करे और न ही सुखाए हुए अंगूरों का.

4 अपने पूरे संकल्प किए हुए समय में वह किसी भी ऐसी वस्तु
को न खाए, जो अंगूर से बनी हो, यहां तक कि न तो अंगूर के
बीज से लेकर अंगूर के छिलकों का.

5 " 'जब तक उसके संकल्प का समय है, उसके सिर पर
उस्तरा न फेरा जाएगा. जिस समय के लिए उसने संकल्प
किया है वह याहवेह के लिए अलग तथा पवित्र बना रहेगा; वह
अपने बाल लंबे होते जाने देगा.

6 " 'याहवेह के लिए अलग रहने के समय में वह कभी भी
किसी शव के पास नहीं जाएगा.

7 वह स्वयं को अपने माता-पिता अथवा भाई-बहन की मृत्यु
होने पर भी अशुद्ध नहीं करेगा क्योंकि वह अपनी देह सहित
परमेश्वर के लिए अलग किया गया है.

8 अलग रहने के पूरे समय तक वह याहवेह के लिए पवित्र है.

9 " 'किंतु यदि उसके निकट ही किसी व्यक्ति की मृत्यु
अचानक हो गई हो, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने
समर्पित बालों को अशुद्ध कर देता है, तब वह उस दिन, जब
वह स्वयं को अलग कर लेता है, अपने बाल मुंडवा ले.

10 आठवें दिन वह दो पण्डुक अथवा दो कबूतर के बच्चे तंबू
के द्वार पर लाकर पुरोहित को सौंप देगा.

11 पुरोहित एक पक्षी को पापबलि के लिए तथा अन्य पक्षी
होमबलि के लिए भेंट करके उसके लिए प्रायश्चित विधि पूरी
करेगा, क्योंकि वह उस व्यक्ति के शव के कारण अशुद्ध हो
गया था. उसी दिन वह व्यक्ति अपने सिर को पवित्र करेगा,

12 तथा वह याहवेह के सामने नाज़री होने की अवधि को भेंट
करेगा. फिर वह एक वर्ष का मेमना दोष बलि के रूप में भेंट
करेगा. उसके संकल्प की पूरी अवधि उसके अशुद्ध हो जाने
के कारण मान्य नहीं होगी.

13 " 'संकल्प लेने के दिन पूरे होने पर उस नाज़ीर के लिए विधि
इस प्रकार है: वह अपनी भेंट मिलनवाले तंबू के द्वार पर ले
आएगा.

14 वह अपनी यह भेंट याहवेह को चढ़ाएगा: एक वर्ष का
निर्दोष मेमना, एक वर्ष की भेड़ पापबलि के लिए, तथा एक
निर्दोष मेढ़ा मेल बलि के लिए.

15 इनके अलावा मैदे की तेल मिली हुई अखमीरी रोटी एक
टोकरी, तथा अखमीरी पपड़ियां, जिन पर तेल चुपड़ दिया गया
हो. इनके साथ अन्नबलि तथा अर्घ भी.

16 “ ‘यह सब पुरोहित याहवेह के सामने लाकर भेंट करेगा;
इनमें अखमीरी रोटियां भी शामिल होंगी. पुरोहित अन्नबलि
एवं अर्घ भी भेंट करेगा.

17 वह याहवेह को मेल बलि के लिए अखमीरी रोटी की टोकरी
के साथ मेढ़ा भी भेंट करेगा. इसी प्रकार अन्नबलि एवं अर्घ भी.

18 “ ‘इसके बाद वह नाज़ीर अपने सिर के बाल मिलनवाले तंबू
के प्रवेश द्वार पर जाकर मुंडवाएगा, तथा अपने भेंट किए हुए
बालों को उस आग में डाल देगा, जो मेल बलियों के बलि पशु
के नीचे जलती है.

19 “ ‘जब वह नाज़ीर अपना सिर मुंडवा चुके, तब पुरोहित
उसके हाथों में उस मेढ़े के कंधे, जो इस समय उबाले जा चुके
होंगे, टोकरी से एक अखमीरी रोटी तथा एक अखमीरी पपड़ी
रख देगा.

20 इसके बाद पुरोहित इन्हें याहवेह के सामने हिलाने की बलि
के रूप में हिलाएगा. हिलाने के लिए ठहराए हुए भेंट के मेढ़े
का सीना तथा ऊपर उठाकर भेंट करने के लिए ठहराई हुई
जांघ उस पुरोहित के लिए पवित्र होगी. यह सब हो जाने के
बाद उस नाज़ीर के लिए दाखमधु पीना वर्जित न रहेगा.’

21 “ ‘यही है उस नाज़ीर से संबंधित विधि, उसके अलावा, जो
कुछ उसके लिए संभव है! जो अपने अलग रहने के द्वारा
याहवेह के सामने संकल्प लेता है, उसने जो कुछ संकल्प
किया है, उसे वह अपने अलग रहने की विधि के अनुसार
अवश्य पूरी करे.’ ”

22 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी,

23 “अहरोन एवं उसके पुत्रों को यह आज्ञा दो, ‘जब तुम
इस्राएल के घराने को आशीर्वाद दो, तो उनसे इस प्रकार
कहना:

24 “ ‘ “याहवेह तुम्हें आशीष प्रदान करें, तथा तुम्हें सुरक्षित रखें;

25 याहवेह तुम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाकर तुम पर
अनुग्रह करें;

26 याहवेह तुम्हारी ओर मुड़कर तुम्हें शांति प्रदान करें.” ’

27 “जब वे इस्राएल के घराने पर मेरा नाम रखेंगे, तब मैं उनका
भला करूंगा.”

Numbers 7:1

1 जिस दिन मोशेह ने पवित्र स्थान से संबंधित सारा काम पूरा
किया, उन्होंने इसका अभिषेक किया, इसे उसकी सारी
वस्तुओं सहित पवित्र किया; वेदी एवं उस पर के सारे बर्तन.
मोशेह ने इनका अभिषेक किया तथा इसके बाद इनको पवित्र
किया.

2 फिर इस्राएल के प्रधानों ने, जो उनके पितरों के प्रधान थे, भेंटें
चढ़ाईं. ये सभी गोत्रों के प्रधान थे, वे ही जो गिने गए व्यक्तियों
के नेता ठहराए गए थे.

3 जब उन्होंने याहवेह के सामने अपनी भेंटें प्रस्तुत की, तब वे
ये चारों ओर से बंद छः गाड़ियां, बारह बैल, दो नेताओं के बीच
एक गाड़ी तथा प्रधान के लिए एक बैल. ये सभी उन्होंने पवित्र
स्थान के सामने भेंट कर दी.

4 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी,

5 “उन लोगों से ये भेंटें स्वीकार कर लो कि इनका प्रयोग
मिलनवाले तंबू के कार्यों के लिए किया जा सके. ये तुम लेवियों
को दे दोगे, हर एक व्यक्ति को उसके लिए ठहराए गए कार्य
के अनुसार.”

6 फिर मोशेह ने वे गाड़ियां तथा वे बैल लेवियों को सौंप दिए.

7 दो गाड़ियां एवं चार बैल गेरशोन के घराने को, जो उनकी
सेवाओं के अनुसार थे,

8 चार गाड़ियां तथा आठ बैल मेरारी के घराने को, उनके कार्य
के अनुसार सौंप दिए. वे ये सेवा पुरोहित अहरोन के पुत्र
इथामार की देखभाल में करते थे.

9 मोशेह ने कोहाथ के घराने को कुछ भी नहीं दिया, क्योंकि
उनकी जवाबदारी थी, पवित्र वस्तुओं से संबंधित कार्य,
जिनका भार वे अपने कंधों पर उठाया करते थे.

10 प्रधानों ने वेदी का अभिषेक किया और वेदी के लिए चढ़ाई
भेंट अर्पित की तथा प्रधानों ने अपनी-अपनी भेंटें वेदी के
सामने चढ़ा दी.

11 फिर याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "वेदी के समर्पण के
लिए प्रतिदिन एक ही प्रधान अपनी भेंट चढ़ाए."

12 जिस व्यक्ति ने पहले दिन भेंट चढ़ाई, वह यहूदाह गोत्र से
अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन था.

13 भेंट में उसने अन्नबलि के लिए चांदी की एक परात एवं एक
चांदी की कटोरी भेंट की, जिनमें तेल मिला हुआ मैदा भरा गया
था. पात्र पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
तथा कटोरी सत्तर शेकेल की थी;

14 सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

15 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक, एक वर्ष का
नर मेमना;

16 पापबलि के लिए एक बकरा;

17 मेल बलि के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे तथा पांच
एक वर्ष के नर मेमने. यही अम्मीनादाब के पुत्र नाहशोन द्वारा
चढ़ाई गई भेंट थी.

18 दूसरे दिन इस्साखार गोत्र के प्रधान ज़ुअर के पुत्र नेथानेल
ने भेंट चढ़ाई.

19 उसकी भेंट यह थी: एक सौ तीस शेकेल की एक चांदी की
परात, सत्तर शेकेल की एक चांदी की कटोरी; ये दोनों ही
पवित्र स्थान की तौल के शेकेल के अनुसार थे. इन दोनों ही में
अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;

20 सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

21 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

22 पापबलि के लिए एक बकरा;

23 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने. यह थी ज़ुअर के पुत्र नेथानेल द्वारा
चढ़ाई गई भेंटें.

24 तीसरे दिन ज़ेबुलून के गोत्र से हेलोन के पुत्र एलियाब ने भेंटें
चढ़ाईं.

25 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
की चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल की चांदी की कटोरी में
अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ मैदा;

26 सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

27 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

28 पापबलि के लिए एक बकरा;

29 मेल बलि के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे, और एक
वर्ष के पांच नर मेमने भेंट किए. यह सब हेलोन के पुत्र
एलियाब ने भेंट किए.

30 चौथे दिन शेदेउर के पुत्र एलिज़ुर ने जो रियूबेन गोत्र का
प्रधान था, अपनी भेंटे चढ़ाई.

31 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
की चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल का चांदी का कटोरा
और इन दोनों ही में ज़ैतून के तेल मिला हुआ महीन आटा,

32 सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

33 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक, एक वर्ष का
नर मेमना;

34 पापबलि के लिए एक बकरा;

35 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
और एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. शेदेउर के पुत्र एलिज़ुर
द्वारा यह भेंट चढ़ाई गई.

36 पांचवें दिन ज़ुरीशद्दाय के पुत्र शेलुमिएल ने जो शिमओन
गोत्र का प्रधान था, उसने भेंट चढ़ाई.

37 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल की चांदी की कटोरी में
अन्नबलि के रूप में तेल मिला हुआ मैदा,

38 सुगंधित धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

39 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक, एक वर्ष का
नर मेमना;

40 पापबलि के लिए एक बकरा;

41 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
और एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह ज़ुरीशद्दाय के पुत्र
शेलुमिएल द्वारा चढ़ाई गई थी.

42 छठवें दिन देउएल के पुत्र एलियासाफ़ ने, जो गाद के गोत्र
का प्रधान था, भेंट चढ़ाई.

43 उसने पवित्र स्थान की नाप के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा सत्तर
शेकेल चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा

44 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

45 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

46 पापबलि के लिए एक बकरा;

47 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह भेंट देउएल के पुत्र
एलियासाफ़ द्वारा चढ़ाई गई थी.

48 सातवें दिन अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा ने जो एफ्राईम गोत्र
का प्रधान था, भेंट चढ़ाई.

49 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा सत्तर
शेकेल चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा

50 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

51 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

52 पापबलि के लिए एक बकरा;

53 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह अम्मीहूद के पुत्र
एलीशामा द्वारा चढ़ाई गई थी.

54 आठवें दिन पेदाहज़ुर के पुत्र गमालिएल ने जो मनश्शेह के
गोत्र का प्रधान था, भेंट चढ़ाई:

55 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा दोनों
ही जैतून के तेल मिले महीन आटे से भरे हुए;

56 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

57 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

58 पापबलि के लिए एक बकरा;

59 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
तथा एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह पेदाहज़ुर के पुत्र
गमालिएल द्वारा चढ़ाई गई भेंट थी.

60 नौवें दिन गिदयोनी का पुत्र अबीदान जो बिन्यामिन के गोत्र
का प्रधान था अपनी भेंट लाया:

61 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा सत्तर
शेकेल चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा तथा

62 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

63 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

64 पापबलि के लिए एक बकरा;

65 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह गिदयोनी के पुत्र
अबीदान द्वारा चढ़ाई गई भेंट थी.

66 दसवें दिन अम्मीशद्दाय के पुत्र अहीएज़र ने, जो दान के गोत्र
का प्रधान था, भेंट चढ़ाई.

67 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा और दोनों
ही में बेहतरीन आटे में जैतून का तेल मिला हुआ;

68 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

69 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

70 पापबलि के लिए एक बकरा;

71 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह अम्मीशद्दाय के पुत्र
अहीएज़र द्वारा चढ़ाई गई थी.

72 ग्यारहवें दिन ओखरन का पुत्र पागिएल ने जो आशेर के गोत्र
का प्रधान था अपनी भेंट चढ़ाई.

73 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा और दोनों
ही में बेहतरीन आटे में ज़ैतून का तेल मिला हुआ;

74 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

75 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

76 पापबलि के लिए एक बकरा;

77 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह ओखरन के पुत्र पागिएल
द्वारा चढ़ाई गई थी.

78 बारहवें दिन, नफताली गोत्र से एनन का पुत्र अहीरा जो
प्रधान था,

79 उसने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल
चांदी की परात तथा सत्तर शेकेल चांदी का कटोरा तथा सत्तर
शेकेल चांदी की कटोरी में तेल मिला हुआ मैदा;

80 दस शेकेल सोने के धूपदान में सुगंधित धूप;

81 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, एक वर्ष का एक
नर मेमना;

82 पापबलि के लिए एक बकरा;

83 मेल बलि चढ़ाने के लिए दो बछड़े, पांच मेढ़े, पांच बकरे,
एक वर्ष के पांच नर मेमने चढ़ाए. यह एनन के पुत्र अहीरा द्वारा
चढ़ाई गई थी.

84 इस्राएल के प्रधानों द्वारा वेदी का अभिषेक किए जाने के
समय चढ़ाई गई संस्कार भेंट यह थी: बारह चांदी की परात,
बारह चांदी की कटोरियां, बारह सोने के धूपदान;

85 हर एक चांदी की परात पवित्र स्थान की तौल के अनुसार
एक सौ तीस शेकेल, हर एक चांदी की कटोरी सत्तर शेकेल!
तब पवित्र स्थान की तौल के अनुसार सारे बर्तन कुल 2,400
शेकेल हुए.

86 सुगंधित धूप के साथ बारह सोने के हर एक धूपदान, पवित्र
स्थान की नाप के अनुसार दस शेकेल; तब कुल एक सौ बीस
शेकेल.

87 होमबलि के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेढ़े, अन्नबलि
के लिए बारह एक वर्ष के नर मेमने तथा पापबलि के लिए
बारह बकरे.

88 मेल बलि के लिए कुल चौबीस बछड़े, कुल साठ मेढ़े, कुल
साठ बकरे तथा एक वर्ष के साठ नर मेमने. यह अभिषेक के
बाद वेदी के लिए चढ़ाई गई भेंट थी.

89 जब मोशेह मिलनवाले तंबू में याहवेह से बातचीत करने गए,
तब उन्होंने वाचा के संदूक के ऊपर करुणासन से, दोनों
करूबों के बीच से, एक आवाज सुनी, जो उन्हें संबोधित कर
रही थी; इस प्रकार याहवेह ने उनसे यह बातें की थी.

Numbers 8:1

1 तब याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 "अहरोन को यह आज्ञा दो, 'जब-जब तुम दीपों को दीपदान
पर रखो, ये सातों दीप सामने की तरफ़ प्रकाश देंगे.' "

3 अहरोन ने यही किया. उसने दीपों को दीपदान के सामने की
ओर रखा, जैसा याहवेह ने मोशेह द्वारा आज्ञा दी थी.

4 इस दीपदान की बनावट इस प्रकार की गई थी: यह पीटे हुए
सोने से बनाया गया था. यह इसके आधार से दीप फूलों तक
पीटे हुए सोने से बना था. यह ठीक याहवेह द्वारा मोशेह को
दिए गए नमूने के अनुसार था, तब उसने दीपदान को उसी के
अनुसार बनाया था.

5 याहवेह ने मोशेह को दोबारा आज्ञा दी:

6 "सारे इस्राएल के घराने में से लेवियों को अलग करो तथा
उन्हें पवित्र करो.

7 उनके शुद्ध करने की प्रक्रिया यह होगी: उन पर पवित्र जल
का छिड़काव करो, तथा वे अपनी पूरी देह पर उस्तरा चलाएं,
वस्त्रों को धो डालें और वे स्वच्छ हो जाएंगे.

8 फिर वे एक बछड़ा लेकर तेल से सने मैदे के साथ अन्नबलि
के रूप में चढ़ाएं तथा एक अन्य बछड़ा तुम पापबलि के रूप
में चढ़ाओगे.

9 तुम लेवियों को इस प्रकार मिलनवाले तंबू के सामने प्रस्तुत
करोगे. तुम समस्त इस्राएल को इकट्ठा करोगे,

10 तथा लेवियों को याहवेह के सामने प्रस्तुत करोगे तथा
इस्राएल के घराने लेवियों पर अपने हाथ रखेंगे.

11 अहरोन लेवियों को याहवेह के सामने इस्राएलियों की ओर
हिलायी हुई भेंट चढ़ाएगा ताकि वे याहवेह की सेवा के लिए
ठहर सकें.

12 "फिर लेवी अपने हाथ उन बछड़ों पर रखेंगे और एक को
याहवेह के लिए पापबलि तथा अन्य को होमबलि के रूप में
भेंट कर देंगे ताकि इससे यह लेवियों के लिए प्रायश्चित बलि
होगी.

13 तुम लेवियों को अहरोन तथा उसके पुत्रों के सामने खड़ा
होने के लिए कहोगे, कि वे याहवेह के सामने हिलाने की भेंट
के लिए अर्पण किए जाएं.

14 इस प्रकार तुम लेवियों को इस्राएल के घराने से अलग
करोगे. लेवी मेरे रहेंगे.

15 "यह सब पूरा हो जाने पर लेवी जाकर मिलनवाले तंबू में
अपनी-अपनी ठहराई गई सेवाओं में लग सकते हैं; मगर

Numbers 9:1

ज़रूरी है कि तुम उन्हें पवित्र कर उन्हें हिलाने वाली भेंट के रूप में अर्पण करोगे;

16 क्योंकि वे इस्राएल के घराने में से पूरी तरह मुझे दे दिए गए हैं. मैंने ही उन्हें इस्राएल के घराने में से हर एक स्त्री के गर्भ के पहलौठों के स्थान पर अपने लिए ले लिया है.

17 क्योंकि इस्राएल के घराने में से हर एक पहलौठा मेरा है; चाहे मनुष्य हो अथवा पशु. जिस दिन मैंने मिस्र देश में हर एक पहलौठे को मारा था, मैंने लेवियों को अपने लिए अलग कर लिया था.

18 किंतु मैंने लेवियों को इस्राएल के घराने के हर एक पहिलौठों के स्थान पर ले लिया है.

19 मैंने लेवी वंशजों को इस्राएल के घराने में से अहरोन तथा उसके पुत्रों को भेंट के रूप में दे दिया है कि वे इस्राएल के घराने के लिए मिलनवाले तंबू की सेवा किया करें तथा इस्राएल के घराने के लिए प्रायश्चित करें, कि इस्राएल के घराने पर पवित्र स्थान के निकट आने पर महामारी न आ पड़े."

20 फिर मोशेह, अहरोन तथा इस्राएल के घराने की पूरी सभा ने लेवियों के संबंध में यही किया जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को लेवियों के संबंध में दिया था.

21 दूसरी ओर, लेवियों ने भी स्वयं को अपने पापों से पवित्र किया तथा अपने वस्त्र धो डाले. अहरोन ने उन्हें याहवेह के सामने हिलायी हुई भेंट के रूप में चढ़ाया. अहरोन ने उन्हें शुद्ध करने के उद्देश्य से उनके लिए प्रायश्चित भी किया.

22 इसके बाद लेवी मिलनवाले तंबू में अहरोन एवं उसके पुत्रों के साथ अपनी-अपनी ठहराई हुई सेवाएं करने के लिए प्रवेश हुए, जैसा कि लेवियों के विषय में मोशेह को याहवेह की आज्ञा थी. यह सब वैसा ही पूरा कर दिया गया.

23 इसके बाद याहवेह ने मोशेह से कहा,

24 "लेवी सेवा के लिए यह विधि लागू होगी: पच्चीस वर्ष की आयु से ऊपर वे मिलनवाले तंबू में सेवा प्रारंभ किया करेंगे.

25 पचास वर्ष की अवस्था होने पर वे यह सेवा समाप्त कर सेवा निवृत्त हो जाएंगे.

26 हां, तब मिलनवाले तंबू में अपने भाइयों की सहायता अवश्य कर सकते हैं ताकि सेवा बिना किसी रुकावट के चलती रहे, किंतु वे स्वयं कोई कार्य नहीं करेंगे."

Numbers 9:1

1 मिस्र देश से निकलने के बाद दूसरे वर्ष के पहले महीने में सीनायी के निर्जन प्रदेश में याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी,

2 "अब यह संभव है कि इस्राएल का घराना ठहराए गए समय पर फ़सह उत्सव को मनाया करे.

3 इसी माह के चौदहवें दिन पर गोधूली के अवसर पर ठहराए गए समय पर तुम फ़सह उत्सव मनाया करोगे. तुम यह इसकी सारी विधियों एवं नियमों के अनुसार करोगे."

4 फिर मोशेह ने सारे इस्राएल के घराने को फ़सह उत्सव मनाने का आदेश दिया,

5 इस्राएल के घराने ने पहले माह के चौदहवें दिन सूर्यास्त के समय में सीनायी के निर्जन प्रदेश में मोशेह को दिए गए याहवेह के आदेश के अनुसार इस उत्सव को मनाया.

6 किंतु उनमें कुछ व्यक्ति ऐसे भी थे, जो शव को छूने के कारण इस अवसर पर अशुद्ध हो चुके थे. परिणामस्वरूप वे उस दिन उनके लिए फ़सह उत्सव न मना सके; तब वे उसी समय मोशेह तथा अहरोन से पूछताछ करने पहुंचे.

7 उन्होंने अपना पक्ष इस प्रकार रखा, "यद्यपि हम शव छूने के कारण इस समय अपवित्र हैं, हमें अन्य इस्राएल के घराने के साथ याहवेह को भेंट चढ़ाने से दूर क्यों रखा जा रहा है?"

8 मोशेह ने उन्हें उत्तर दिया, "धीरज रखो. मैं इस विषय में याहवेह की इच्छा मालूम करूंगा."

9 याहवेह ने मोशेह से कहा,

10 “इस्राएल के घराने को सूचित करो, ‘यदि तुम्हारे बीच कोई
व्यक्ति शव को छूने से अपवित्र हो जाता है, अथवा यदि कोई
यात्रा में दूसरे स्थान पर है, वह फिर भी याहवेह के लिए फ़सह
उत्सव को मना सकेगा,

11 परंतु द्वितीय महीने की चौदहवीं तिथि पर सूर्यास्त के समय
में. वे इसको खमीर रहित रोटी तथा कड़वे साग-पात के साथ
खाने के द्वारा मना सकेंगे.

12 वे कोई भी अंश सुबह के समय तक बचा न रहने देंगे, और
न ही पशु की कोई हड्डी तोड़ी जाए. वे फ़सह उत्सव की सभी
विधियों का पालन करेंगे.

13 किंतु वह व्यक्ति, जो सांस्कारिक रूप से शुद्ध है तथा जो
यात्रा पर भी नहीं है और फिर भी वह फ़सह उत्सव को नहीं
मनाता है, उस व्यक्ति को अपने लोगों के बीच से मिटा दिया
जाए, क्योंकि उसने ठहराए गए अवसर पर याहवेह के लिए
बलि नहीं चढ़ाई. वह व्यक्ति स्वयं ही अपने पाप का भार
उठाएगा.

14 “ ‘तुम्हारे बीच रह रहे विदेशी एवं देशी सभी लोगों के लिए
एक ही विधि लागू होगी. यदि तुम्हारे बीच में कोई विदेशी रह
रहा है, और वह फ़सह उत्सव से संबंधित विधियां एवं नियम
के अनुसार याहवेह के लिए फ़सह उत्सव को मनाने की इच्छा
रखता है, तो उसे यह करने दिया जाए.’ ”

15 जिस दिन पवित्र निवास स्थान, यानी साक्षी तंबू, की स्थापना
पूरी हुई एक विशेष बादल ने उस पवित्र निवास स्थान को छा
लिया. सूर्यास्त के बाद से लेकर सुबह तक यह पवित्र निवास
स्थान पर आग के समान दिखाई देता रहा.

16 यह दृश्य नित्य होने लगा: दिन के समय बादल छा जाना,
तथा रात में आग का दर्शन.

17 इस्राएलियों की पूरी यात्रा में जब-जब बादल साक्षी तंबू के
ऊपर से उठता, तब-तब वे वहां से कूच करने का संदेश हुआ
करता था, तथा जहां कहीं वह बादल रुक जाता था, वहां
इस्राएली डेरा डाल देते थे.

18 याहवेह के आदेश पर ही इस्राएली कूच कर देते तथा
याहवेह के आदेश पर ही वे डेरा डाला करते थे. जब यह बादल
साक्षी तंबू पर स्थिर रहता था तब वे डेरा डाले रहते थे.

19 यहां तक कि जब यह बादल बहुत समय के लिए साक्षी तंबू
पर ठहरा रहता था, वे वहीं डेरा डाले रहते थे.

20 यदि वह बादल साक्षी तंबू पर कुछ ही दिन के लिए ठहरा
रहता था, तो वे याहवेह के आदेश के अनुसार डेरा डाले रहते
थे और जब चलने के लिए याहवेह का आदेश होता था, वे कूच
कर देते थे.

21 यदि किसी परिस्थिति में यह बादल सिर्फ शाम के समय से
सुबह तक ठहरता था और यदि यह बादल सुबह उठ जाता
था, तो वे कूच कर देते थे; अथवा यदि यह दिन में तथा रात में
ठहरा रहता था, जब कभी यह बादल उठता था, वे कूच कर
देते थे.

22 चाहे यह बादल साक्षी तंबू पर दो दिन ठहरे, या एक महीना,
या इससे भी अधिक, इस्राएली डेरा डाले हुए रहते थे, कूच नहीं
करते थे; किंतु जब यह बादल ऊपर उठ जाता था, वे कूच कर
देते थे.

23 वे याहवेह के आदेश पर डेरा डालते थे, याहवेह के ही
आदेश पर कूच करते थे. वे याहवेह के आदेश के प्रति सतर्क
थे, उस आदेश के विषय में, जो मोशेह द्वारा याहवेह ने दिया
था.

Numbers 10:1

1 याहवेह ने मोशेह से और कहा:

2 “पीटी गई चांदी की परत से दो तुरहियां बनाओ, तुम इनका
प्रयोग सभा को बुलाने में करोगे, कि वे कूच के लिए शिविर को
तैयार करें.

3 जब ये दोनों साथ साथ बजाए जाएंगे, तब सारी सभा तुम्हारे
सामने मिलनवाले तंबू के द्वार पर हो जाएगी.

4 किंतु यदि सिर्फ एक ही तुरही बजाई जाएगी, तब प्रधान तथा
इस्राएल के दलों के प्रधान तुम्हारे सामने इकट्ठा होंगे.

5 किंतु जब तुम चेतावनी का बिगुल बजाओगे, तब शिविर के
पूर्वी दिशा के शिविर कूच करेंगे.

6 जब कभी तुम दोबारा चेतावनी का बिगुल बजाओगे, वे
शिविर, जो दक्षिण दिशा में हैं, कूच करेंगे; आवश्यक है कि
उनका कूच शुरू करने के लिए चेतावनी का बिगुल बजाया
जाए.

7 जब कभी सभा इकट्ठी की जाए, तुम बिना किसी चेतावनी
नाद के तुरही बजाओगे.

8 “अहरोन के पुरोहित पुत्र इसके अलावा तुरही नाद करेंगे;
यह तुम्हारी आनेवाली सभी पीढ़ियों के लिए हमेशा की विधि
है.

9 जब तुम अपने विरोधी से युद्ध करो, जिसने तुम पर आक्रमण
किया है, तब तुम इन तुरहियों से चेतावनी का बिगुल
बजाओगे, कि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सामने तुम्हारा
स्मरण किया जाए और शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा हो सके.

10 इसके अलावा आनंद के अवसरों पर, तुम्हारे ठहराए गए
आनंद मनाने के अवसरों पर, तुम्हारे ठहराए गए उत्सवों पर
तथा हर एक महीने की पहली तारीख पर तुम अपनी
होमबलियों, अपनी मेल बलियों के अवसर पर तुरही फूंकोगे;
तब वे तुम्हारे परमेश्वर के सामने एक स्मरण का कार्य करेंगे.
मैं ही हूं वह याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर.”

11 दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में बीसवीं तारीख को यह बादल
साक्षी तंबू से ऊपर की ओर उठ गया.

12 इस्राएल के घराने ने सीनायी के निर्जन प्रदेश से अपनी
यात्राएं शुरू कर दी. यह बादल पारान के निर्जन प्रदेश में जा
ठहर गया.

13 यह ऐसा पहला अवसर था, जब उन्होंने मोशेह को दिए गए
याहवेह के आदेश के अनुसार यात्रा शुरू की थी.

14 यहूदाह के वंश की छावनी के झंडे, उनके सैन्य व्यवस्था के
अनुसार चल रहे थे. अम्मीनादाब का पुत्र नाहशोन सेनापति
था.

15 तब ज़ुअर का पुत्र नेथानेल इस्साखार गोत्र की सेना का
सेनापति था.

16 ज़ेबुलून गोत्र की सेना का सेनापति था हेलोन का पुत्र
एलियाब.

17 इसके बाद साक्षी तंबू उतारा गया और गेरशोन तथा मेरारी
के पुत्रों ने साक्षी तंबू को उठाते हुए कूच किया.

18 इनके बाद रियूबेन गोत्र की छावनी के झंडे के साथ शेदेउर
के पुत्र एलिज़ुर के नेतृत्व में सेना ने कूच किया.

19 इनके साथ थे शिमओन के गोत्र की सेना, जिनका सेनापति
था ज़ुरीशद्दाय का पुत्र शेलुमिएल.

20 गाद के गोत्र की सेना का सेनापति था देउएल का पुत्र
एलियासाफ़.

21 इनके बाद कोहाथियों ने पवित्र वस्तुओं के साथ कूच किया,
कि उनके वहां पहुंचने के पहले ही साक्षी तंबू खड़ा किया जा
सके.

22 इसके बाद एफ़्राईम गोत्र के घराने की सेना ने उनकी
छावनी के झंडे के साथ चलना शुरू किया. उनका सेनापति
अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था.

23 मनश्शेह गोत्र के घराने की सेना का सेनापति पेदाहज़ुर का
पुत्र गमालिएल था,

24 बिन्यामिन गोत्र की सेना का सेनापति गिदियोनी का पुत्र
अबीदान था.

25 इसके बाद उनकी सेना के अनुसार दान गोत्र के घराने की
छावनी का झंडा था. कूच करते हुए यह सारी छावनी के लिए
प्राण रक्षक सेना हुई. इस सेना का सेनापति अम्मीशद्दाय का
पुत्र अहीएज़र था.

26 आशेर गोत्र के घराने की सेना का सेनापति ओखरन का पुत्र
पागिएल था.

27 नफताली गोत्र के घराने की सेना का सेनापति एनन का पुत्र
अहीरा था.

28 कूच करते हुए इस्राएल के घराने की सेनाओं के अनुसार
यही क्रम हुआ करता था.

29 अंत में मोशेह ने अपनी पत्नी के भाई, होबाब से, अर्थात्
अपने मिदियानी ससुर रियुएल के पुत्र से कहा, "हम उस स्थान
की ओर आगे बढ़ रहे हैं, जिसका वर्णन याहवेह ने इन शब्दों
में किया था: 'यह मैं तुम्हें दे दूंगा.' तुम भी हमारे साथ आ जाओ.
हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे; क्योंकि याहवेह ने इस्राएल की भलाई
की प्रतिज्ञा की है."

30 किंतु होबाब ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं आपके साथ नहीं जा
सकता; मेरे लिए सही यही है कि मैं अपने संबंधियों के पास
अपने देश लौट जाऊं."

31 तो मोशेह ने उससे निवेदन किया, "कृपा कर हमारा साथ
मत छोड़ो. तुम जानते हो कि इस मरुभूमि मे पड़ाव डालने के
लिए अच्छी जगह कहां-कहां होगी; तुम तो हमारे लिए हमारी
आंखें हो सकोगे.

32 हम आश्वासन देते हैं कि यदि तुम हमारे साथ चलोगे, तो
जितनी भी भलाई याहवेह हमारे लिए करेंगे, उसमें हम तुमको
शामिल कर लेंगे."

33 इस प्रकार उन्होंने याहवेह के पर्वत से अपनी यात्रा प्रारंभ
की और तीन दिन यात्रा करते रहे. याहवेह की वाचा का संदूक
तीन दिनों तक उनके आगे-आगे रहा कि इस्राएल के डेरे के
लिए सही विश्राम का स्थान तय किया जा सके.

34 जब उन्होंने छावनी के स्थान से यात्रा शुरू की थी, दिन के
समय याहवेह का बादल उनके ऊपर-ऊपर बना रहता था.

35 इसके बाद, जब भी संदूक के साथ यात्रा आरंभ करते थे,
मोशेह का यह वचन था: "याहवेह सक्रिय हो जाइए! आपके
शत्रु बिखर जाएं; जिन्हें आपसे घृणा है आपके सामने से भाग
जाएं."

36 जब भी संदूक ठहर जाता, मोशेह कहते थे, "याहवेह,
हज़ारों हज़ार इस्राएलियों के निकट लौट आइए."

Numbers 11:1

1 अब इस्राएली कठिन परिस्थिति में याहवेह के सामने
शिकायत करने लगे. जब याहवेह को उनका बड़बड़ाना
सुनाई पड़ा, तब उनका क्रोध भड़क उठा और उनके बीच में
याहवेह की आग जल उठी, परिणामस्वरूप छावनी के किनारे
जल गए.

2 लोगों ने मोशेह से विनती की और मोशेह ने याहवेह से विनती
की, जिससे यह आग शांत हो गई.

3 उन्होंने उस स्थान का नाम दिया ताबेराह, क्योंकि उनके बीच
याहवेह की आग जल उठी थी.

4 इस्राएलियों के बीच में जो सम्मिश्र लोग मिस्र देश से साथ हो
लिए थे, वे अन्य भोजन वस्तुओं की कामना करने लगे. उनके
साथ मिलकर इस्राएल का घराना भी रोने और बड़बड़ाने
लगा, "हमारे खाने के लिए कौन हमें मांस देगा!

5 मिस्र देश में तो हमें बहुतायत से खाने के लिए मुफ़्त में
मछलियां मिल जाती थीं. हमें वहां के खीरे, खरबूजे, कंद, प्याज
तथा लहसुन स्मरण आ रहे हैं.

6 यहां तो हमारा जी घबरा रहा है; अब तो यहां यह मन्ना ही
मन्ना बचा रह गया है!"

7 मन्ना का स्वरूप धनिया के बीज के समान तथा रंग मोती के
समान था.

8 लोग इसे इकट्ठा करने जाते थे, इसे चक्की में पीसते अथवा
ओखली में कूट लिया करते थे. इसके बाद इसे बर्तन में उबाल
कर इसके व्यंजन बना लिया करते थे. इसका स्वाद तेल में तले
हुए पुए के समान था.

9 रात में जब ओस पड़ती थी, सारे पड़ाव पर इसी के साथ मन्ना
भी पड़ा करता था.

10 मोशेह को इस्राएलियों का रोना सुनाई दे रहा था; हर एक
गोत्र अपनी-अपनी छावनी के द्वार पर खड़ा हुआ था. याहवेह

Numbers 11:1

का क्रोध बहुत अधिक भड़क उठा. यह मोशेह के लिए चिंता का विषय हो गया.

11 मोशेह ने याहवेह से विनती की, “आपने अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों किया है? क्यों मुझ पर आपकी कृपादृष्टि न रही है, जो आपने इन सारे लोगों का भार मुझ पर लाद दिया है?

12 क्या मैंने इन लोगों को गर्भ में धारण किया है? क्या मैंने इन्हें जन्म दिया है, जो आप मुझे यह आदेश दे रहे हैं ‘इन्हें अपनी गोद में लेकर चलो, जैसे माता अपने दूध पीते बच्चे को लेकर चलती है’ उस देश की ओर जिसे देने की प्रतिज्ञा आपने इनके पूर्वजों से की थी?

13 इन सबके लिए मैं मांस कहां से लाऊं? वे लगातार मेरे सामने शिकायत कर कहते हैं, ‘हमें खाने के लिए मांस दो!’

14 मेरे लिए यह संभव नहीं कि मैं इन सबका भार अकेला उठाऊं; मेरे लिए यह असंभव बोझ सिद्ध हो रहा है.

15 इसलिये यदि आपका व्यवहार मेरे प्रति यही रहेगा तथा मुझ पर आपकी कृपादृष्टि बनी है, तो आप इसी क्षण मेरे प्राण ले लीजिए ताकि मैं अपनी दुर्दशा का सामना करने के लिए जीवित ही न रहूं.”

16 यह सुन याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी: “इस्राएल में से मेरे सामने सत्तर पुरनिये इकट्ठे करो. ये लोग ऐसे हों, जिन्हें तुम जानते हो, जो लोगों में से पुरनिये और अधिकारी हैं. इन्हें तुम मिलनवाले तंबू के सामने अपने साथ लेकर खड़े रहना.

17 तब मैं वहां आकर तुमसे बातचीत करूंगा मैं तुम्हारे अंदर की आत्मा को उनके अंदर कर दूंगा. वे तुम्हारे साथ मिलकर इन लोगों का भार उठाएंगे; तब तुम अकेले इस बोझ को उठानेवाले न रह जाओगे.

18 “लोगों को आज्ञा दो: ‘आनेवाले कल के लिए स्वयं को पवित्र करो. कल तुम्हें मांस का भोजन प्राप्त होगा; क्योंकि तुम्हारा रोना याहवेह द्वारा सुन लिया गया है. तुम कामना कर रहे थे, “कैसा होता यदि कोई हमें मांस का भोजन ला देता! हम मिस्र देश में ही भले थे!” याहवेह अब तुम्हें मांस का भोजन देंगे और तुम उसको खाओगे भी.

19 तुम एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, पांच दिन नहीं, दस दिन नहीं, बीस दिन नहीं,

20 बल्कि एक पूरे महीने खाओगे, कि यह तुम्हारे नथुनों से बाहर निकलने लगेगा तथा स्वयं तुम्हारे लिए यह घृणित हो जाएगा; क्योंकि तुमने याहवेह को, जो तुम्हारे बीच में रहता है तुच्छ समझा. तुम उनके सामने यह कहते हुए रोते रहे: “हम मिस्र देश से क्यों निकलकर आए?” ’ ”

21 किंतु मोशेह ने इस पर कहा, “जिन लोगों का यहां वर्णन हो रहा है, वे छः लाख पदयात्री हैं; फिर भी आप कह रहे हैं, ‘मैं उन्हें मांस का भोजन दूंगा, कि वे एक महीने तक इसको खाते रहें!’

22 क्या सारी भेड़-बकरियों एवं पशुओं का वध किया जाने पर भी इनके लिए काफ़ी होगा? क्या समुद्र की सारी मछलियों को इकट्ठा किया जाने पर भी इनके लिये काफ़ी होगा?”

23 याहवेह ने मोशेह को उत्तर दिया, “क्या याहवेह का हाथ छोटा हो गया है? अब तो तुम यह देख ही लोगे कि तुम्हारे संबंध में मेरा वचन पूरा होता है या नहीं.”

24 मोशेह बाहर गए तथा याहवेह के ये शब्द लोगों के सामने दोहरा दिए. इसके अलावा उन्होंने लोगों में से चुने हुए वे सत्तर भी अपने साथ लेकर उन्हें मिलनवाले तंबू के चारों ओर खड़ा कर दिया.

25 तब याहवेह उस बादल में प्रकट हुए और मोशेह के सामने आए. याहवेह ने मोशेह पर रहनेवाले आत्मा की सामर्थ्य को लेकर उन सत्तर पर समा दिया, जब आत्मा उन सत्तर प्रधानों पर उतरा तब उन सत्तर ने भविष्यवाणी की, किंतु उन्होंने इसको दोबारा नहीं किया.

26 किंतु इनमें से दो प्रधान अपने-अपने शिविरों में ही छूट गए थे; एक का नाम था एलदाद तथा अन्य का मेदाद, आत्मा उन पर भी उतरी. ये दोनों के नाम पुरनियों की सूची में थे, किंतु ये उन सत्तर के साथ मोशेह के बुलाने पर तंबू के निकट नहीं गए थे, इन्होंने अपने-अपने शिविरों में ही भविष्यवाणी की.

27 एक युवक ने दौड़कर मोशेह को सूचना दी, “शिविरों में एलदाद एवं मेदाद भविष्यवाणी कर रहे हैं.”

28 यह सुन नून का पुत्र यहोशू, जो बचपन से ही मोशेह का
सहायक हो चुका था, कहने लगा, "मेरे गुरु मोशेह, उन्हें रोक
दीजिए!"

29 किंतु मोशेह ने उससे कहा, "क्या तुम मेरे लिए उनसे ईर्ष्या
कर रहो? मेरी इच्छा है कि याहवेह अपने आत्मा को अपनी
सारी प्रजा पर उतरने दें, तथा सभी भविष्यद्वक्ता हो जाएं!"

30 इसके बाद मोशेह तथा इस्राएल के वे प्रधान अपने-अपने
शिविरों को लौट गए.

31 याहवेह की ओर से एक ऐसी प्रचंड आंधी आई, कि
समुद्रतट से बटेरें आकर छावनी के निकट गिरने लगीं. इनका
क्षेत्र छावनी के इस ओर एक दिन की यात्रा की दूरी तक तथा
उस ओर एक दिन की यात्रा की दूरी तक; छावनी के चारों
ओर था. ये बटेरें ज़मीन से लगभग एक मीटर की ऊंचाई तक
उड़ती हुई पाई गईं.

32 इन बटेरों को इकट्ठा करने में लोगों ने सारा दिन, सारी रात
तथा अगला सारा दिन लगा दिया. जिस व्यक्ति ने कम से कम
इकट्ठा किया था उसका माप था लगभग एक हज़ार छः सौ
किलो. इन्हें लोगों ने सुखाने के उद्देश्य से फैला दिया.

33 जब वह मांस उनके मुख में ही था, वे इसे चबा भी न पाए थे
कि याहवेह का क्रोध इन लोगों के प्रति भड़क उठा और
उन्होंने इन लोगों पर अत्यंत घोर महामारी ड़ाल दी.

34 इसके फलस्वरूप वह स्थान किबरोथ-हत्ताआवह नाम से
मशहूर हो गया, क्योंकि उस स्थान पर इस्राएलियों ने अपने
मृतकों को भूमि में गाड़ा था, जिन्होंने इस भोजन के लिए
लालसा की थी.

35 किबरोथ-हत्ताआवह से लोगों ने हाज़ोरौथ की ओर कूच
किया तथा वे वहीं डेरा डाले रहे.

Numbers 12:1

1 मोशेह ने कूश देश की स्त्री से विवाह किया था, और उनका
इस स्त्री से विवाह करना मिरियम तथा अहरोन का उनके
विरुद्ध हो जाने का कारण बन गया.

2 उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया, "क्या यह सच है कि
याहवेह ने सिर्फ मोशेह के द्वारा ही बातचीत की है? क्या
उन्होंने हमारे द्वारा भी बातें नहीं की?" याहवेह ने उनकी ये
बातें सुन लीं.

3 (सब जानते थे कि मोशेह अपने स्वभाव में बहुत ही विनीत
थे; पृथ्वी पर किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक.)

4 इसलिये अचानक याहवेह ने मोशेह, अहरोन तथा मिरियम
से कहा, "तुम तीनों मिलनवाले तंबू के पास आ जाओ." तब वे
तीनों बाहर आ गए.

5 तब याहवेह बादल के खंभे में उतरकर उस तंबू के द्वार पर
खड़े हो गए और अहरोन तथा मिरियम को बुलाया. जब वे
दोनों पास आ गए,

6 तब याहवेह ने कहा, "अब तुम मेरी बात सुनो: "यदि तुम्हारे
बीच कोई भविष्यद्वक्ता है, मैं, याहवेह, उस पर दर्शन के द्वारा
स्वयं को प्रकट करूंगा, मैं स्वप्न में उससे बातचीत करना सही
समझूंगा.

7 किंतु मेरे सेवक मोशेह के साथ नहीं; मेरे सारे परिवार में वही
विश्वासयोग्य है.

8 मोशेह के साथ मेरी बातचीत आमने-सामने हुआ करती है,
इतना ही नहीं, हमारी बातचीत में कुछ भी गुप्त नहीं होता है,
और न पहेली के समान, उसे तो मुझ याहवेह का स्वरूप
दिखाई देता है. फिर तुम्हें मेरे सेवक मोशेह के विरुद्ध यह सब
कहते हुए भय क्यों न लगा?"

9 तब याहवेह का क्रोध उन पर भड़क गया और वह उन्हें
छोड़कर चले गए.

10 जब तंबू के ऊपर का वह बादल गायब हो गया, तब उन्होंने
देखा कि मिरियम कोढ़ से भरकर हिम के समान सफेद हो
चुकी थी. जब अहरोन ने मिरियम की ओर दृष्टि की, तो पाया
कि वह कोढ़ रोग से भर गई थी.

11 इस पर अहरोन ने मोशेह से विनती की, "मेरे गुरु, मेरी
आपसे विनती है, यह पाप हम पर न लगने दीजिए. यह हमारी
निरी मूर्खता थी, जो हम यह पाप कर बैठे.

12 ओह, उसे उस स्थिति में न छोड़ दीजिए, जो मृत-जात शिशु
के समान, मानो प्रसव होते-होते उसकी आधी देह गल गई
हो!"

13 मोशेह ने याहवेह की दोहाई दी, "परमेश्वर, मेरी प्रार्थना है,
उसे शुद्ध कर दीजिए!"

14 किंतु याहवेह का मोशेह को उत्तर यह था: "यदि उसके
पिता ने उसके मुंह पर थूक दिया होता, तो क्या वह सात दिन
तक लज्जा की स्थिति में न रहती? रहने दो उसे इस लज्जा की
स्थिति में छावनी के बाहर सात दिनों तक. इसके बाद वह
छावनी में स्वीकार कर ली जाए."

15 तब मिरियम को सात दिनों के लिए छावनी के बाहर कर
दिया गया. प्रजा ने उस स्थान से तब तक कूच नहीं किया, जब
तक मिरियम को छावनी में वापस न ले लिया गया.

16 किंतु इसके बाद इस्राएली प्रजा ने हाज़ोरौथ से कूच किया
तथा पारान नामक मरुभूमि में डेरा डाल दिया.

Numbers 13:1

1 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 "भेद लेने के उद्देश्य से अपने कुछ व्यक्ति कनान देश को
भेज दो; कनान जो मैं इस्राएल के घराने को देने जा रहा हूं. हर
एक गोत्र से एक-एक प्रधान को भेजना."

3 फिर मोशेह ने याहवेह के आदेश के अनुसार इन्हें पारान के
निर्जन प्रदेश से भेज दिया. ये सभी इस्राएल के घराने के प्रधान
थे.

4 उनके नाम इस प्रकार थे: रियूबेन के गोत्र से ज़क्कूर का पुत्र
शम्मुआ;

5 शिमओन के गोत्र से होरी का पुत्र शाफात;

6 यहूदिया के गोत्र से येफुन्नेह का पुत्र कालेब;

7 इस्साखार के गोत्र से योसेफ़ का पुत्र यिगाल;

8 एफ्राईम के गोत्र से नून का पुत्र होशिया;

9 बिन्यामिन के गोत्र से राफू का पुत्र पालती;

10 ज़ेबुलून के गोत्र से सोदी का पुत्र गद्दिएल;

11 योसेफ़ के गोत्र से अर्थात् मनश्शेह के गोत्र से सुसी का पुत्र
गद्दी;

12 दान के गोत्र से गमेली का पुत्र अम्मिएल;

13 आशेर के गोत्र से मिखाएल का पुत्र सेथुर;

14 नफताली के गोत्र से वोफसी का पुत्र नाहबी;

15 तथा गाद के गोत्र से माखी का पुत्र गेउएल.

16 ये नाम उन व्यक्तियों के हैं, जिन्हें मोशेह ने उस देश का भेद
लेने के उद्देश्य से भेजा था. (मोशेह नून के पुत्र होशिया को
यहोशू बुलाते थे.)

17 कनान देश में भेद लेने के उद्देश्य से भेजते हुए मोशेह ने
उन्हें यह आज्ञा दी, "तुम उस नेगेव प्रदेश में जाओ; उसके बाद
पर्वतीय प्रदेश में जाना.

18 देखना कि वह देश किस प्रकार का है, वहां के निवासी
बलवान हैं या कमजोर, संख्या में कम हैं या बहुत.

19 वह देश, जहां लोग निवास करते हैं, कैसा है वह देश, अच्छा
या बुरा? कैसे हैं वे नगर, जहां वे निवास करते हैं, क्या ये नगर
खुले में हैं अथवा वे क़िले में बसे हैं?

20 वहां की भूमि कैसी है, उपजाऊ या बंजर? वहां वृक्ष हैं या
नहीं? इसके बाद तुम उस देश के कुछ फल साथ ले आने की
कोशिश करना." (यह अंगूरों की पहली पकी फसल का समय
है.)

21 तब वे चले गए. उन्होंने ज़िन के निर्जन प्रदेश से लेकर लबो-हामाथ के रेहोब तक उस प्रदेश का भेद लिया.

22 उन लोगों ने जब नेगेव में प्रवेश किया, वे हेब्रोन पहुंच गए, जहां अनाक के घराने के अहीमान, शेशाइ तथा तालमाई निवास करते थे. (हेब्रोन नगर मिस्र देश के ज़ोअन के सात वर्ष पहले बन चुका था.)

23 इसके बाद वे एशकोल घाटी में जा पहुंचे. वहां उन्होंने एक डाली काट ली, जिसमें अंगूरों का एक ही गुच्छा था. इसे उन्होंने एक लाठी पर लादा और दो व्यक्तियों ने उसको उठा लिया. इसके अलावा वे कुछ अनार एवं अंजीर भी ले आए.

24 वह स्थान एशकोल घाटी के नाम से मशहूर हो गया, क्योंकि इस्राएल के घराने वहां से वह अंगूर का गुच्छा साथ ले गए थे.

25 चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौटे.

26 वे पारान के निर्जन प्रदेश के कादेश में मोशेह, अहरोन तथा इस्राएल के घराने की सारी सभा के सामने उपस्थित हुए. उन्होंने उस देश के फल उनके सामने दिखाते हुए सारी सभा के सामने अपना संदेश रख दिया.

27 अपने संदेश में उन्होंने यह कहा: "आपके द्वारा बताए गए देश में हम गए थे. इसमें कोई संदेह नहीं कि इस देश में दूध एवं मधु का भण्ड़ार है. हम वहां से ये फल भी लाए हैं.

28 किंतु, उस देश के निवासी बलवान हैं, नगर किले में बसे हैं, तथा आकार में बहुत बड़े हैं. इसके अलावा हमने वहां अनाक के घराने के लोग भी देखे हैं.

29 वहां नेगेव में तो अमालेक का निवास है, तथा पर्वतीय क्षेत्र में हित्ती, यबूसी तथा अमोरियों का; समुद्र के पास वाले क्षेत्र में तथा यरदन के इस ओर कनानी निवास करते हैं."

30 मोशेह के सामने ही कालेब ने लोगों को शांत हो जाने की विनती की तथा उन्हें इस प्रकार कहा, "हर परिस्थिति में हमें वहां जाकर इस देश पर अधिकार कर लेना अच्छा होगा, क्योंकि हम निश्चय उस पर अधिकार कर लेंगे."

31 किंतु अन्य पुरुष, जो कालेब के साथ वहां गए थे, कहने लगे, "हम लोग उन लोगों पर आक्रमण करने योग्य हैं ही नहीं, क्योंकि वे लोग हमारी अपेक्षा ज्यादा बलवान हैं."

32 इस प्रकार उन्होंने इस्राएल के घराने के सामने उस देश की, जिसका वे भेद लेकर आए थे, खराब राय दी! वे कह रहे थे, "जिस देश में हम भेद लेने के उद्देश्य से गए थे, एक ऐसा देश है, जो अपने निवासियों को निगल लेता है. हमने वहां जितने भी पुरुष देखे, वे सभी बड़े डीलडौल वाले पुरुष ही थे.

33 हमने तो वहां नैफ़िलिन भी देखे हैं, (अनाक की संतान भी नैफ़िलिन के संबंधी ही हैं). उनकी ओर दृष्टि करते हुए हम अपनी दृष्टि में टिड्डियों के समान लग रहे थे, तथा जब वे हमें देखते थे तो वे हमें टिड्डियां समझ रहे थे."

Numbers 14:1

1 तब सारा समुदाय ऊंची आवाज में रोने लगा. उस रात वे सभी रोते रहे.

2 हर एक इस्राएली मोशेह तथा अहरोन के विरुद्ध बड़बड़ा रहा था. एक स्वर में उन्होंने मोशेह तथा अहरोन से कहा, "अच्छा होता हमारी मृत्यु मिस्र देश में ही हो गई होती, यदि वहां नहीं तो इस निर्जन प्रदेश में!

3 याहवेह हमें क्यों इस देश में ले जाने पर उतारू हैं, क्या तलवार से मरवाने के लिए? हमारी पत्नियां एवं हमारे बच्चे वहां उनकी लूट सामग्री होकर रह जाएंगे. क्या भला न होगा कि हम मिस्र देश ही लौट जाएं?"

4 उन्होंने आपस में यह विचार-विमर्श किया, "चलो, हम अपने लिए एक प्रधान को नियुक्त करें और लौट जाएं, मिस्र देश को."

5 यह सुन मोशेह एवं अहरोन सारी इस्राएली मण्डली के सामने मुंह के बल गिर पड़े.

6 नून के पुत्र यहोशू तथा येफुन्नेह के पुत्र कालेब ने, जो इस देश में भेद लेने के लिए गए थे, अपने वस्त्र फाड़ दिए.

7 सारे इस्राएल के घराने को संबोधित कर उन्होंने कहा, “वह
देश, जिसकी सारी भूमि का हमने भेद लिया है, बहुत ही
उपजाऊ भूमि है.

8 यदि याहवेह की हम पर कृपादृष्टि बनी रहती है, तो वह हमें
इस देश में ले जाएंगे तथा यह हमें दे देंगे; ऐसा देश जिसमें दूध
एवं मधु का भण्ड़ार है.

9 बस याहवेह के प्रति विद्रोह न करो. उस देश के निवासियों
से भयभीत न हो जाओ, क्योंकि उन्हें तो हमारा शिकार होना
ही है. उन पर से उनकी सुरक्षा हटाई जा चुकी है, तथा याहवेह
हमारे साथ हैं. मत डरो उनसे.”

10 किंतु सारी मण्डली उन पर पथराव करने पर उतारू हो
गई. तब मिलनवाले तंबू पर सारे इस्राएल के घराने पर याहवेह
की ज्योति प्रकाशमान हुई.

11 याहवेह ने मोशेह से प्रश्न किया, “और कब तक ये लोग मेरा
तिरस्कार करते रहेंगे? कब तक वे मुझमें विश्वास न करेंगे,
जबकि मैं उनके बीच में ये सारे चिन्ह दिखा चुका हूं?

12 मैं उन पर महामारी डालकर उनको बाहर निकाल दूंगा.
इसके बाद मैं तुमसे एक ऐसे राष्ट्र को उत्पन्न करूंगा, जो
इनसे अधिक संख्या में और बलवान होगा.”

13 किंतु मोशेह ने निवेदन करते हुए याहवेह से कहा, “तब तो
मिस्रवासी इस विषय में सुन ही लेंगे, क्योंकि आपने अपने
भुजबल के द्वारा इन लोगों को उनके बीच में से निकाला है.

14 वे इसका वर्णन यहां के निवासियों से करेंगे. उन्हें यह मालूम
है कि आप याहवेह, हम लोगों के बीच में ही हैं. याहवेह, जब
आपका बादल उन पर छाया करता था, यह उनके द्वारा
आमने-सामने देखा जा चुका है, तथा यह भी कि आप दिन के
समय बादल का खंभा तथा रात में आग का खंभा बनकर
इनके आगे-आगे चल रहे हैं.

15 यदि आप इस राष्ट्र को इस रीति से खत्म कर देंगे, मानो यह
जनता एक ही व्यक्ति है, तब जिन राष्ट्रों ने आपकी कीर्ति के
विषय में सुन रखा है, यही कहेंगे,

16 ‘यह इसलिये हुआ है कि याहवेह इस राष्ट्र को अपनी शपथ
के साथ की गई प्रतिज्ञा के अनुसार उस देश में ले जाने में
सफल नहीं रह पाए हैं, इसलिये उन्होंने इस राष्ट्र को निर्जन
प्रदेश में ही मार डाला.’

17 “किंतु अब, मेरे प्रभु, आपसे मेरी यह विनती है, आपकी
सामर्थ्य की महिमा आपके कहने के अनुसार हो:

18 ‘याहवेह क्रोध करने में धीरजवंत तथा अति करुणामय, वह
अधर्म एवं अपराध के लिए क्षमा करनेवाले हैं, किंतु वह किसी
भी स्थिति में दोषी को बिना दंड दिए नहीं छोड़ते. वह पूर्वजों
के अधर्म का दंड उनके बेटों, पोतों और परपोतों तक को देते
हैं.’

19 याहवेह, आपके कभी न बदलनेवाले प्रेम की बहुतायत के
अनुसार, मेरी विनती है, अपनी प्रजा के अपराध को क्षमा कर
दीजिए, ठीक जिस प्रकार आप मिस्र से निकालने से लेकर
अब तक अपनी प्रजा को क्षमा करते रहे हैं.”

20 फिर याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम्हारी विनती के
अनुसार मैं उन्हें क्षमा कर चुका हूं.

21 किंतु याद रहे, शपथ मेरे जीवन की, सारी धरती याहवेह की
महिमा से भर जाएगी,

22 उन सभी व्यक्तियों ने, जिन्होंने मेरी महिमा और मेरे द्वारा
दिखाए गए चिन्हों को देख लिया है, जो मैंने मिस्र देश में तथा
यहां निर्जन प्रदेश में दिखाए हैं, फिर भी दस अवसरों पर मेरे
आदेशों की उपेक्षा की और मेरी परीक्षा की है,

23 वे किसी भी रीति से उस देश को देख न पाएंगे, जिसकी
शपथ मैंने उनके पूर्वजों से की थी, वैसे ही वे भी इस देश को न
देख पाएंगे, जिन्होंने मेरा इनकार किया है.

24 किंतु मेरे सेवक कालेब में, एक अलग आत्मा है और जिसने
पूरी-पूरी रीति से मेरा अनुसरण किया है, उसे ही मैं उस देश
में ले जाऊंगा, जिसका वह भेद ले चुका है, उसके वंशज उस
देश पर अधिकार कर लेंगे.

25 इस समय उन घाटियों में अमालेकियों तथा कनानियों का
निवास है. कल तुम लाल सागर के मार्ग से निर्जन प्रदेश की
ओर कूच करना."

26 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को संबोधित किया:

27 "बताओ, मैं कब तक इस कुटिल सभा के प्रति सहानुभूति
दिखाता रहूं, जो मेरे विरुद्ध बड़बड़ा रहे हैं? इस्राएल के घराने
के अपशब्द मेरे कानों तक पहुंच चुके हैं, वे अपशब्द, जो वे
मेरे विरुद्ध कह रहे हैं.

28 तुम उनसे यह कहो, 'मेरे जीवन की शपथ,' यह याहवेह का
वचन है, 'ठीक जैसा जैसा तुमने मेरे सुनने में बातें की हैं,'
निश्चित ही तुम्हारे लिए मैं ठीक वैसा ही कर दूंगा.

29 तुम्हारे शव इस निर्जन प्रदेश में धराशाई पड़े रहेंगे; उन सब
की जिनकी गिनती की जा चुकी है. बीस वर्ष से ऊपर की आयु
के सभी व्यक्ति, जिन्होंने मेरे विरुद्ध आवाज उठाकर बड़बड़
की है.

30 निश्चित ही तुम सब उस देश में प्रवेश नहीं करोगे, जिसमें
तुम्हें बसा देने की शपथ मैंने तुमसे की थी; सिर्फ येफुन्नेह के
पुत्र कालेब तथा नून के पुत्र यहोशू के अलावा.

31 हां, तुम्हारी संतान, जिनके विषय में तुमने कहा था कि वे
उनके भोजन हो जाएंगे, उन्हें मैं उस देश में ले जाऊंगा. वे ही
उस देश पर अधिकार करेंगे, जिसे तुमने ठुकरा दिया है.

32 किंतु तुम्हारे लिए तो यही तय हो चुका है तुम्हारे शव इस
निर्जन प्रदेश में पड़े रहेंगे.

33 तुम्हारे वंशज चालीस वर्ष इस निर्जन प्रदेश में चरवाहे होंगे
तथा वे तुम्हारे द्वारा किए गए इस विश्वासघात के लिए कष्ट
भोगेंगे और तुम्हारे शव निर्जन प्रदेश में पड़े पाए जाएंगे.

34 यह उसी अनुपात में होगा, जितने दिन तुमने उस देश का
भेद लिया था; चालीस दिन-भेद लेने के, एक दिन के लिए इस
निर्जन प्रदेश में एक वर्ष, कुल चालीस वर्ष. तब तुम अपने पाप
के कारण कष्ट भोगोगे और मुझसे विरोध का परिणाम समझ
जाओगे.

35 मैं, याहवेह ने, यह घोषणा कर दी है, मैं इस पूरी बुरी सभा
के साथ निश्चित ही यह करूंगा, जो मेरे विरुद्ध एकजुट हो गए
हैं. इसी निर्जन प्रदेश में नष्ट हो जाएंगे; यहीं उनकी मृत्यु हो
जाएगी."

36 वैसे उन लोगों की नियति, जिन्हें मोशेह ने उस देश का भेद
लेने के उद्देश्य से भेजा था और जिन्होंने लौटने पर उस देश
का उलटा चित्रण किया था, जिन्होंने सारी सभा को बड़बड़ाने
के लिए उभार दिया था,

37 ये वे ही थे, जिन्होंने उस देश का अत्यंत भयानक चित्र प्रस्तुत
किया था, याहवेह ही के सामने महामारी से उनकी मृत्यु हो
गई.

38 किंतु नून के पुत्र यहोशू तथा येफुन्नेह के पुत्र कालेब ही
उनमें से जीवित रहे, जो उस देश का भेद लेने के लिए गए हुए
थे.

39 जब मोशेह ने सभी इस्राएलियों के सामने यह बातें दोहराई,
वे घोर विलाप करने लगे.

40 फिर भी, वे बड़े तड़के उठे और इस विचार से, "निश्चयतः
हमने पाप किया है. अब हम यहां तक पहुंच चुके हैं, हम
याहवेह के प्रतिज्ञा किए हुए देश को चले जाएंगे!"

41 किंतु मोशेह ने आपत्ति की, "तुम लोग याहवेह के आदेश
का उल्लंघन करने पर उतारू क्यों हो? यह कार्य हो ही नहीं
सकता!

42 मत जाओ वहां, नहीं तो तुम शत्रुओं द्वारा हरा दिए जाओगे,
क्योंकि अब तुम पर याहवेह का आश्रय नहीं रहा,

43 वहां तुम स्वयं को अमालेकियों एवं कनानियों के सामने
पाओगे और तुम तलवार से मार दिए जाओगे, क्योंकि तुमने
याहवेह का अनुसरण करने को तुच्छ जाना है. यहां याहवेह
तुम्हारे साथ न रहेंगे."

44 किंतु वे मोशेह की चेतावनी को न मानते हुए उस पर्वतीय
क्षेत्र के टीले पर चढ़ गए. न तो मोशेह ने छावनी छोड़ी थी और
न ही वाचा के संदूक को छावनी के बाहर लाया गया था.

45 तब उस पर्वतीय क्षेत्र के निवासी अमालेकी तथा कनानी उन
पर टूट पड़े और होरमाह नामक स्थान तक उनका पीछा
करते हुए उनको मारते चले गए.

Numbers 15:1

1 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 “इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दो: ‘जब तुम उस देश में
प्रवेश करोगे, जहां तुम्हें बस जाना है, जो मैं तुम्हें देने जा रहा
हूं,

3 तब तुम वहां याहवेह के लिए अपनी भेड़-बकरियां और
गाय-बैलों में से आग के द्वारा बलि चढ़ाना; होमबलि अथवा
विशेष मन्नत पूरी करने के लिए या स्वेच्छा बलि या निर्धारित
अवसरों से संबंधित बलि, कि यह याहवेह के सामने सुगंध हो
जाए.

4 वह, जो याहवेह को भेंट बलि अर्पण करेगा, वह डेढ़ किलो
मैदे को एक लीटर तेल में मिलाएगा.

5 हर एक मेमने की बलि अथवा होमबलि के साथ तुम पेय बलि
के लिए एक लीटर दाखमधु भेंट करोगे.

6 “ ‘अथवा मेढ़े की बलि चढ़ाने के लिए तुम तीन किलो मैदा,
1.30 लीटर तेल में मिलाओगे.

7 पेय बलि के रूप में तुम याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए
एक लीटर दाखमधु चढ़ाओगे.

8 “ ‘जब तुम याहवेह को विशेष मन्नत पूरी करने के रूप में या
मेल बलि स्वरूप होमबलि या बलि के लिए बछड़े को तैयार
करो,

9 तब तुम उस बछड़े के साथ पांच किलो मैदे के साथ 1.9
लीटर तेल का मिश्रण चढ़ाओगे.

10 इसके अलावा तुम डेढ़ लीटर दाखमधु याहवेह के लिए
सुखद-सुगंध चढ़ाओगे.

11 हर एक बछड़े, हर एक मेढ़े, हर एक मेमने अथवा हर एक
बकरे के लिए यही विधि ठहराई गई है.

12 हर एक पशु की संख्या के अनुसार हर एक के लिए यही
किया जाना ज़रूरी है.

13 “ ‘हर एक, जो देश का निवासी है, इस विधि के अनुसार यह
किया करेगा, कि आग के द्वारा भेंट यह याहवेह के लिए
सुखद-सुगंध हो जाए.

14 यदि तुम्हारे बीच कोई परदेशी है, चाहे थोड़े समय से या
स्थायी रूप से, पीढ़ी-पीढ़ी से, और वह अग्निबलि भेंट करना
चाहता है, कि यह याहवेह के लिए सुखद-सुगंध हो जाए, वह
भी ठीक यही करेगा.

15 पूरी सभा के लिए, चाहे तुम हो अथवा कोई परदेशी, एक ही
विधि लागू होगी. यही तुम्हारी सारी पीढ़ियों के लिए स्थायी
विधि होगी. याहवेह के सामने तुम सब परदेशी के समान हो.

16 तुम्हारे लिए तथा उस परदेशी के लिए एक ही नियम तथा
एक ही विधि होनी ज़रूरी है.’ ”

17 फिर याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी,

18 “इस्राएल के घराने को संबोधित कर उन्हें आदेश दो, ‘जब
तुम उस देश में प्रवेश करो, जहां मैं तुम्हें ले जा रहा हूं,

19 और जब तुम उस देश की उपज को खाने लगो, उसका
एक अंश तुम याहवेह को भेंट करोगे.

20 यह खलिहान का अर्पित किया हुआ अंश होगा. यह तुम
याहवेह को चढ़ाओगे.

21 अपने पहले गूंधे हुए आटे के अंश को तुम अपनी सारी
पीढ़ियों में याहवेह को भेंट करते रहोगे.

22 “ ‘किंतु भूल से तुम इन आदेशों के पालन में असफल हो
जाते हो, जो याहवेह ने मोशेह को बताए हैं,

23 अर्थात् वह सभी, जो याहवेह ने तुम्हें मोशेह के द्वारा आज्ञा
देकर पालन करने का आदेश दिया है, उस दिन से ले, जब ये
आदेश दिए गए थे, तुम्हारी सारी पीढ़ियों तक,

24 यदि यह भूल से किया गया हो तथा जिसके विषय में सारी
इस्राएली सभा को कोई जानकारी नहीं हो पाई है, तब सारी
सभा गाय-बैलों से होमबलि के लिए एक बछड़ा भेंट करेगी,
इसकी अन्नबलि तथा पेय बलि के साथ यह याहवेह के लिए
नियम के अनुसार एक सुखद-सुगंध हो जाएगा.

25 फिर पुरोहित सारे इस्राएल के घराने की ओर से प्रायश्चित
बलि भेंट करेगा और इससे उन्हें क्षमा दी जाएगी; क्योंकि यह
अनजाने में की गई भूल थी; इसलिये उन्होंने यह भेंट चढ़ाई है.
आग के द्वारा याहवेह को अर्पित बलि तथा अपनी भूल के लिए
भेंट पापबलि.

26 इस प्रकार इस्राएल के घराने की सारी सभा को क्षमा दे दी
जाएगी-इसमें वह परदेशी भी शामिल होगा, जो उनके बीच
रह रहा होगा, क्योंकि सभी इस्राएलियों में यह अनजाने में
हुआ कार्य था.

27 “ ‘इसके अलावा यदि कोई व्यक्ति भूल से पाप कर बैठता
है, वह एक वर्षीय बकरी पापबलि के लिए भेंट करे.

28 पुरोहित याहवेह के सामने जाकर उस व्यक्ति के लिए
प्रायश्चित करे, जो भूल से पाप कर बैठता है, जो रास्ते से भटक
जाता है, पुरोहित ऐसे व्यक्ति के लिए प्रायश्चित करे, कि उस
व्यक्ति को क्षमा प्राप्त हो जाए.

29 कोई भी व्यक्ति, जो भूल से कोई भी पाप कर बैठता है, उस
पर एक ही नियम लागू किया जाए; वह, जो स्वदेशी है, और
वह जो तुम्हारे बीच रह रहा विदेशी है.

30 “ ‘किंतु वह व्यक्ति, जो ढिठाई करता है, चाहे वह स्वदेशी
हो या तुम्हारे बीच रह रहा विदेशी, वह यह करते हुए याहवेह
की निंदा कर रहा होता है, ऐसा व्यक्ति अपने लोगों के बीच से
नाश कर दिया जाए.

31 उसने याहवेह के आदेश को तुच्छ समझा और उनके
आदेश को टाला है. उसे पूरी तरह नाश कर दिया जाए; इसके
लिए वह स्वयं ही दोषी होगा.’ ”

32 जब इस्राएली निर्जन प्रदेश में रहते थे, एक ऐसे व्यक्ति से
उनकी भेंट हुई, जो शब्बाथ के दिन ईंधन-लकड़ी इकट्ठी कर
रहा था.

33 जिन्होंने उसे यह करते देखा, वे उसे मोशेह, अहरोन तथा
सारी सभा के सामने ले आए.

34 जब तक उसके विषय में कोई निर्णय नहीं लिया गया, तब
तक उसे बंदी बनाकर रखा गया.

35 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा दी: “अवश्य है कि उस
व्यक्ति को निश्चित ही मृत्यु दंड दिया जाए. छावनी के बाहर ले
जाकर सारी सभा उस पर पत्थराव करे.”

36 तब सारी सभा ने उसे छावनी से दूर ले जाकर पत्थराव कर
दिया, जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

37 याहवेह ने मोशेह को यह आज्ञा भी दी,

38 “सारे इस्राएल को आज्ञा दो कि वे अपने-अपने वस्त्रों के
किनारों पर पीढ़ी से पीढ़ी फुंदने लगाया करें तथा फुन्दनों के
कोनों पर नीली डोरी हो.

39 यह फुंदना तुम्हारे लिए याहवेह की आज्ञा का चिन्ह होगा,
कि तुम अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार चलने न लगो,
जैसा करके तुमने परमेश्वर के साथ दाम्पत्य विश्वासघात के
समान काम किया था.

40 तुम्हें मेरी सारी आज्ञाओं का पालन करना याद रहे, और तुम
अपने परमेश्वर के सामने पवित्र बने रहो.

41 मैं तुम्हारा वही परमेश्वर, याहवेह हूं, मैंने तुम्हें मिस्र देश से
इसलिये निकाला है, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं. मैं ही
तुम्हारा वह याहवेह परमेश्वर हूं!”

Numbers 16:1

1 इस समय कोराह, जिसका पिता इज़हार था, जिसका पिता
कोहाथ था, जो लेवी का पुत्र था; तथा दाथान और अबीराम, जो

एलियाब के पुत्र थे, तथा ओन, जो पेलेथ का पुत्र था, आज्ञा न माननेवाले हो गए.

2 इन्होंने मोशेह के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई. इनके साथ
इस्राएल में से 250 व्यक्ति भी शामिल हो गए, जो सभा के चुने
हुए तथा नामी प्रधान थे.

3 ये सभी मोशेह एवं अहरोन के विरोध में एकजुट होकर उनसे
कहने लगे, “आप लोग तो बहुत ऊंचे उड़ने लगे हैं! इस्राएली
समाज में हममें से हर एक ही पवित्र व्यक्ति है तथा उन सभी
के बीच परमेश्वर का वास है. फिर आप ही स्वयं को याहवेह
की प्रजा में सबके ऊपर क्यों दिखाते हैं?”

4 जब यह बातें मोशेह ने सुनी, वह मुंह के बल गिर पड़े.

5 तथा उन्होंने कोराह एवं उसकी सारी मण्डली को संबोधित
करते हुए कहा, “कल सुबह याहवेह यह स्पष्ट कर देंगे कि वह
किसके पक्ष में हैं, कौन पवित्र है तथा वही उसे अपने निकट
बुलाएंगे. याहवेह जिस किसी को चुनेंगे, उसे ही अपने निकट
बुला लेंगे.

6 तुम्हें यह करना होगा: तुम सभी कोराह के घराने के लोग
धूपदान तैयार रखना,

7 तुम कल याहवेह के सामने उनमें आग रख उस पर धूप डाल
देना. जिस किसी को याहवेह चुनेंगे, वही होगा वह पवित्र
व्यक्ति. ओ तुम लेवी के घराने, फूले जा रहे हो!”

8 इसके बाद मोशेह ने यह कहा, “लेवी के घराने, अब यह सुन
लो!

9 क्या तुम्हारी समझ से यह कोई छोटा विषय है कि सारे
इस्राएल के घराने में से इस्राएल के परमेश्वर ने तुम्हें अलग
करना सही समझा है, कि वह तुम्हें अपने पास रखें, ताकि
याहवेह के साक्षी तंबू संबंधी सेवा किया करें, तथा इस्राएल की
सारी सभा के सामने उपस्थित होकर उनकी सेवा करें,

10 तथा याहवेह ने तुम्हें और तुम्हारे सभी भाइयों को, जो लेवी
के घराने के हैं, तुम्हारे साथ अपने पास रखा है?

11 फिर तुम एवं तुम्हारे ये सारे साथी आज वस्तुतः स्वयं याहवेह
के विरुद्ध खड़े हो गए हो. अहरोन है ही कौन, जो तुम उसके
विरुद्ध बड़बड़ा रहे हो?”

12 मोशेह ने आज्ञा दी कि एलियाब के पुत्र दाथान तथा अबीराम
उनके सामने लाए जाएं. उन्होंने उत्तर दिया, “हम नहीं आएंगे!

13 क्या यह कोई छोटा विषय है कि आप हमें एक ऐसे देश से,
जिसमें दूध और मधु का भण्ड़ार है, निकालकर यहां निर्जन
प्रदेश में मरने के लिए ले आए हैं, कि आप स्वयं को हम पर
शासक बना बैठें?

14 इसके अलावा, आप हमें ऐसे किसी देश में नहीं ले आए हैं,
जहां दूध और मधु का भण्ड़ार है, और न ही आपने हमें ऐसी
मीरास दी है, जहां खेत तथा अंगूरों के बगीचे हैं. क्या मतलब
है आपका, आप इनकी आंखें निकालना चाह रहे हैं? हम वहां
नहीं आएंगे!”

15 मोशेह बहुत ही क्रोधित हो गए. उन्होंने याहवेह से कहा,
“उनकी भेंट स्वीकार न कीजिए. मैंने न तो उनसे एक गधा भी
लिया है, न मैंने उनमें से एक की भी कोई हानि की है.”

16 मोशेह ने कोराह को आज्ञा दी, “कल तुम तथा तुम्हारे सभी
साथी याहवेह के सामने उपस्थित होंगे—तुम तथा तुम्हारे
साथी एवं अहरोन.

17 तुममें से हर एक अपने-अपने धूपदान में धूप रखे और हर
एक अपना अपना धूपदान याहवेह के सामने ले आए, ये सब
250 धूपदान होंगे, तुम्हारे और अहरोन के धूपदान भी होंगे.”

18 तब इनमें से हर एक ने अपना अपना धूपदान लिया, उसमें
आग रखी तथा आग पर धूप. तब वे सभी मोशेह एवं अहरोन
के साथ मिलनवाले तंबू के सामने खड़े हो गए.

19 कोराह ने मिलनवाले तंबू के सामने सारे इस्राएल के घराने
को इकट्ठा कर लिया. तब याहवेह का प्रताप सारी इस्राएली
सभा पर प्रकाशमान हुआ.

20 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को संबोधित किया,

21 “तुम दोनों स्वयं को इस समूह से अलग कर लो कि मैं इन्हें
पलक झपकते ही भस्म कर दूं.”

22 यह सुन वे दोनों मुंह के बल गिर पड़े. उन्होंने याहवेह से
विनती की, “परमेश्वर, आप, जो सभी मनुष्यों की आत्माओं के
परमेश्वर हैं, क्या आप इस व्यक्ति के पाप का दंड पूरे समाज
को दे देंगे?”

23 याहवेह ने मोशेह को उत्तर दिया,

24 “सारी इस्राएली सभा को आज्ञा दो, ‘वे कोराह, दाथान तथा
अबीराम के तंबुओं से दूर चले जाएं.’ ”

25 फिर मोशेह दाथान एवं अबीराम की ओर बढ़े और इस्राएल
के पुरनिये उनके पीछे-पीछे चलने लगे.

26 मोशेह ने इस्राएली सभा को आज्ञा दी, “कृपा कर इन दुष्ट
व्यक्तियों के शिविरों से दूर हो जाओ तथा उनकी किसी भी
वस्तु को नहीं छूना, नहीं तो तुम भी उनके सारे पापों के साथ
समेट लिए जाओगे.”

27 तब वे कोराह, दाथान तथा अबीराम के तंबुओं से दूर हट
गए. दाथान तथा अबीराम बाहर आकर अपनी-अपनी पत्नियों
तथा बच्चों के साथ शिविर के द्वार पर खड़े हो गए.

28 मोशेह ने घोषणा की, “अब तुम्हें यह अहसास हो जाएगा,
कि ये सारे काम करने की जवाबदारी मुझे स्वयं याहवेह द्वारा
सौंपी गई है, यह मेरी बनाई योजना नहीं हैं.

29 यदि इन व्यक्तियों का निधन अन्य मनुष्यों के समान
स्वाभाविक रीति से हो जाए या इनकी नियति सारी मानव
जाति के समान हो, तब समझ लेना कि मैं याहवेह का भेजा
हुआ नहीं हूं.

30 किंतु यदि याहवेह आज कुछ असाधारण काम कर दिखाते
हैं, यदि आज भूमि अपना मुख खोल इन्हें, इनकी सारी संपत्ति
को निगल लेती है, कि वे जीवित ही भूमि में समा जाएं, तब तुम्हें
यह निश्चय हो जाएगा, कि इन लोगों ने याहवेह को तुच्छ समझा
है.”

31 जैसे ही मोशेह का यह कहना समाप्त हुआ, उनके नीचे
भूमि फटकर खुल गई;

32 पृथ्वी ने, मानो अपना मुंह खोल, उन्हें निगल लिया; उनके
घर-परिवारों को, कोराह के सभी संबंधियों को उन सब की
संपत्ति सहित.

33 तब वे तथा उनकी सारी संपदा जीवित ही भूमि के गर्भ में
समा गए और भूमि उनके ऊपर अपनी पहले की सी स्थिति में
आ गई, वे इस्राएल की सभा के बीच से मिट गए.

34 उनके आस-पास के सारे इस्राएली उनकी चिल्लाहट
सुनकर वहां से भाग गए, इस भय से, “कहीं भूमि हमें भी
अपना कौर न बना ले!”

35 तब याहवेह की ओर से भेजी गई आग ने उन ढाई सौ
व्यक्तियों को भस्म कर दिया, जो धूप भेंट कर रहे थे.

36 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

37 “पुरोहित अहरोन के पुत्र एलिएज़र को आज्ञा दो, कि वह
इस जलती हुई आग के बीच में से धूपदानों को इकट्ठा कर ले,
क्योंकि वे पवित्र वस्तुएं हैं. उनमें के जलते हुए अंगारों को
इधर-उधर बिखरा दो.

38 उन व्यक्तियों ने अपने प्राणों के मूल्य पर यह पाप किया है,
उनके धूपदानों को इकट्ठा कर उन्हें पीट-पीटकर पत्रक बना
लो ताकि वे वेदी पर मढ़ने के लिए इस्तेमाल किए जाएं. वे
पवित्र वस्तुएं हैं, क्योंकि उन्होंने इन्हें याहवेह को भेंट किया था.
यह इस्राएल के घराने के सामने एक चिन्ह हो जाएगा.”

39 तब उन व्यक्तियों के द्वारा भेंट धूपदानों को, जो इस आग
में नाश हो चुके थे, एलिएज़र ने इकट्ठा किया और उन्होंने इन्हें
पीट-पीटकर वेदी पर मढ़ने का पत्रक बना डाला.

40 यह सारे इस्राएल के सामने एक चेतावनी थी, कि कोई भी
व्यक्ति, जो अहरोन के वंश का नहीं है, वह याहवेह के सामने
आकर धूप न चढ़ाए, कि उसकी दशा वह न हो जो कोराह एवं
उसके साथियों की हुई, ठीक जैसी पूर्वघोषणा मोशेह के द्वारा
याहवेह ने की थी.

41 किंतु दूसरे ही दिन सारा इस्राएल का घराना मोशेह एवं
अहरोन के विरोध में इस प्रकार बड़बड़ाने लगा. “तुम दोनों ही
के कारण याहवेह के इन चुने हुओं की मृत्यु हुई है.”

42 किंतु उसी समय हुआ यह, कि जब सारी सभा मोशेह एवं
अहरोन के विरोध में खड़ी हो चुकी थी, वे मिलनवाले तंबू की
दिशा में आगे बढ़ रहे थे, यह सामने देखा गया कि मिलनवाले
तंबू पर वह बादल छा गया तथा वहां याहवेह का प्रताप प्रकट
हो गया.

43 फिर मोशेह एवं अहरोन मिलनवाले तंबू के सामने जा खड़े
हुए.

44 याहवेह ने मोशेह को संबोधित कर कहा,

45 “इस सभा से दूर चले जाओ कि मैं इन्हें इसी क्षण भस्म कर
दूं.” वे यह सुन मुंह के बल गिर पड़े.

46 मोशेह ने अहरोन को आज्ञा दी, “अपने धूपदान में वेदी की
आग डालकर उस पर धूप डाल दो और बिना देर किए इसे
सभा के निकट लाकर उनके लिए प्रायश्चित करो, क्योंकि
याहवेह का क्रोध उन पर भड़क चुका है, महामारी शुरू हो
चुकी है.”

47 अहरोन ने ठीक यही किया. वह दौड़ता हुआ सभा के बीच
जा पहुंचा, क्योंकि यह दिख रहा था कि लोगों के बीच में
महामारी शुरू हो चुकी थी. फिर अहरोन ने धूप जलाकर लोगों
के लिए प्रायश्चित किया.

48 वह मरे हुओं और जीवितों के बीच में खड़ा हो गया, जिससे
महामारी शांत हो गई.

49 किंतु फिर भी, जिनकी मृत्यु इस महामारी से हुई थी उनकी
संख्या 14,700 हो चुकी थी. यह उनके अलावा थी, जो कोराह
के कारण हो चुकी थी.

50 फिर अहरोन मोशेह के पास लौट गया, जो इस समय
मिलनवाले तंबू के द्वार पर खड़े हुए थे, क्योंकि अब महामारी
शांत हो चुकी थी.

Numbers 17:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 “इस्राएल के घराने को आज्ञा दो कि हर एक पूर्वजों के घराने
से वे एक-एक लाठी लेकर आएं; उनके पिता के सारे घर-
परिवारों से एक-एक प्रधान. हर एक लाठी पर तुम उस नायक
का नाम लिख देना.

3 लेवी वंश की ओर से जो लाठी आएगी उस पर अहरोन का
नाम लिख देना; क्योंकि हर एक गोत्र के प्रधान के नाम से एक-
एक लाठी ठहराई गई है.

4 फिर तुम ये लाठियां मिलनवाले तंबू के साक्षी पत्र के संदूक
के सामने खड़ी कर देना, जहां मैं तुमसे भेंट करूंगा.

5 तब होगा यह कि उस व्यक्ति की लाठी, जो मेरा चुना हुआ
होगा, अंकुरित होने लगेगी. इस कार्य के द्वारा मैं इस्राएलियों
द्वारा मुझ पर की जा रही बड़बड़ाहट को कम कर सकूंगा,
क्योंकि इस्राएली इस समय बड़बड़ा रहे हैं.”

6 फिर मोशेह ने इस्राएल के घराने से तथा उसके सारे प्रधानों
से यह कहकर उनमें से हर एक से एक-एक लाठी इकट्ठी कर
ली. ये हर एक प्रधान की उसके गोत्र के अनुसार इकट्ठी की
गई बारह लाठियां थी, अहरोन की लाठी भी इनमें से एक थी.

7 मोशेह ने ये लाठियां साक्षी के तंबू में याहवेह के सामने खड़ी
कर दीं.

8 अगले दिन मोशेह साक्षी के तंबू में गए. वहां उन्होंने ध्यान
दिया कि लेवी के गोत्र में से अहरोन की लाठी अंकुरित हो
चुकी थी तथा उसमें कलियां आ गईं तथा फूल खिल रहे थे,
और उसमें पके बादाम भी आ गए थे.

9 मोशेह याहवेह की उपस्थिति में से वे सारी लाठियां उठाकर
इस्राएल के घराने के सामने ले आए. उन सभी ने यह देखा और
हर एक ने अपनी-अपनी लाठी उठाकर रख ली.

10 किंतु याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, “अहरोन की लाठी को
साक्षी के संदूक के सामने रख दो कि यह उन विद्रोहियों के
लिए एक चिन्ह होकर रह जाए, कि तुम उनके द्वारा मेरे विरोध

Numbers 18:1

में की जा रही बड़बड़ाहट ही समाप्त कर दो और वे अकाल मृत्यु के कौर न हो जाएं."

11 मोशेह ने याहवेह की आज्ञा के एक-एक वचन का पालन किया.

12 इसके बाद इस्राएल के घराने ने मोशेह से कहा, "सुनिए, हम तो नाश हुए जा रहे हैं, हमारी मृत्यु हो रही है, हम सभी की मृत्यु!

13 हर एक व्यक्ति, जो साक्षी तंबू के निकट आएगा, उसके लिए मृत्यु दंड अवश्य आनी है. क्या हमारा विनाश निश्चित ही है?"

Numbers 18:1

1 लेवियों के लिए ठहराई गई ज़िम्मेदारी: इसके बाद याहवेह ने अहरोन से कहा, "तुम, तुम्हारे पुत्र एवं तुम्हारा घराना पवित्र स्थान से संबंधित अधर्म का भार उठाएंगे, वैसे ही तुम, तुम्हारे पुत्र तुम्हारे साथ पुरोहित ज़िम्मेदारियों से संबंधित अधर्म के लिए भार उठाएंगे.

2 किंतु लेवी के गोत्र, अर्थात् तुम, अपने पिता के गोत्र में से अपने भाइयों को भी अपने साथ ले आना कि जब तुम एवं तुम्हारे पुत्र तुम्हारे साथ साक्षी के तंबू के सामने ठहरे हुए हों, तब वे तुम्हारे साथ ही सेवा में शामिल हो जाएं.

3 इस प्रकार वे तुम्हारे प्रति एवं साक्षी तंबू के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को उठाएंगे, किंतु वे पवित्र स्थान की वस्तुओं और वेदी के पास नहीं आएंगे, नहीं तो उनकी एवं तुम्हारी मृत्यु तय है.

4 वे तुम्हारे साथ मिलकर मिलनवाले तंबू से संबंधित सभी कार्यों को भी निभायेंगे; किंतु किसी भी अन्य व्यक्ति को तुम्हारे निकट आने की अनुमति नहीं है.

5 "पवित्र स्थान एवं वेदी से संबंधित कार्यों को निभाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि इस्राएल के घराने पर दोबारा क्रोध न आने पाए.

6 यह ध्यान रहे, स्वयं मैंने सारे इस्राएल में से तुम्हारे साथी लेवियों को अपने लिए अलग कर लिया है. वे तुम्हारे लिए भेंट हैं. वे याहवेह को समर्पित हैं, कि वे मिलनवाले तंबू से संबंधित सेवाएं समर्पित करते रहें.

7 किंतु तुम तथा तुम्हारे साथ तुम्हारे पुत्र तुम्हारे पुरोहित पद में, वेदी से संबंधित कार्य में, तुम्हारे सहायक रहेंगे, जबकि तुम इन सेवकों से सम्बद्ध रहोगे, यह पुरोहित पद तुम्हारे लिए मेरे द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी है, किंतु यदि कोई भी दूसरा व्यक्ति वेदी अथवा पर्दे के निकट जा पहुंचता है, उसके लिए मृत्युदण्ड ठहराया गया है."

8 इसके बाद याहवेह ने अहरोन पर यह स्पष्ट किया, "अब तुम यह भी समझ लो: स्वयं मैंने तुम्हें उन सारी भेंटों का ज़िम्मेदार नियुक्त किया है, जो इस्राएल के घराने के द्वारा मुझे भेंट की जाती है. ये सभी मैंने तुम्हें तथा तुम्हारे पुत्रों को हमेशा का अंश बनाकर दे दिया है.

9 यह तुम्हारे लिए निर्धारित अंश होगा, जो अति पवित्र भेंटों में से आग से बचा रखी जाती है. यह इस्राएल के घराने के द्वारा प्रस्तुत हर एक भेंट में से तुम्हारा अंश होगा, हर एक अन्नबलि में से, हर एक पापबलि में से, हर एक दोष बलि में से, जो वे मुझे अर्पण करेंगे, तुम्हारे लिए, तुम्हारे पुत्रों के लिए अति पवित्र भेंटें होंगी.

10 तुम इनको अति पवित्र भेंटों के रूप में खाया करोगे. यह हर एक पुरुष के लिए पवित्र अंश होगा.

11 "इनके अलावा यह भी तुम्हारा ही अंश होगा: उनके द्वारा अर्पण भेंटें तथा इस्राएल के घराने द्वारा लहर की भेंटें. यह मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों के लिए तुम्हारे साथ हमेशा का अंश ठहरा दिया है. तुम्हारे घर-परिवार का हर एक सदस्य जो सांस्कारिक रीति से पवित्र है इसको खा सकता है.

12 "सारे नए तेल में से सबसे अच्छा, नए दाखरस में से सबसे अच्छा, नई उपज में से, पहले फलों में से, जो उनके द्वारा याहवेह को अर्पण किए जाते हैं, मैं तुम्हें दे रहा हूं.

13 इनके देश में जो सबसे पहला पका फल होगा, जिसे वे याहवेह को अर्पण करने के लिए लाते हैं, तुम्हारा होगा. तुम्हारे घर-परिवार का हर एक सदस्य जो सांस्कारिक रीति से पवित्र है, इसको खा सकता है.

14 “इस्राएल देश में बलि के लिए ठहराई गई हर एक वस्तु
तुम्हारी होगी.

15 हर एक जीवधारी का पहलौठा, चाहे वह मनुष्य का हो या
पशु का, जिसे वे याहवेह को अर्पण करने लाते हैं, तुम्हारा
होगा; फिर भी मनुष्य का पहलौठा तुम दाम लेकर छोड़ दोगे,
वैसे ही अपवित्र घोषित पशुओं के पहलौठे को भी तुम दाम
लेकर छोड़ देना.

16 एक महीने के ऊपर की आयु के पशु के लिए तुम अपने
आंकलन के आधार पर छुड़ाने का मूल्य तय करोगे; जो पवित्र
स्थान की तौल के अनुसार चांदी के पांच शेकेल होंगे, जो बीस
गेराह के बराबर होता है.

17 “किंतु बैल, भेड़ अथवा बकरी के पहलौठे को दाम लेकर
मत छोड़ना, ये सब पवित्र पशु हैं. तुम इनका रक्त वेदी पर
छिड़कोगे तथा उनकी चर्बी अग्निबलि में जला दोगे, जो याहवेह
के सामने सुखद-सुगंध हो जाएगा.

18 इन पशुओं का मांस तुम्हारे खाने के लिए होगा, जिस प्रकार
लहराए जानेवाली बलि की छाती तथा दायीं जांघ.

19 वे सभी पवित्र भेंटें, जो इस्राएली याहवेह को चढ़ाते हैं, मैंने
तुम्हारे लिए एवं तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों के लिए हमेशा का अंश
ठहरा दिया है. यह तुम्हारे तथा तुम्हारे साथ तुम्हारे वंशजों की
याहवेह के सामने हमेशा की नमक की वाचा होगी.”

20 इसके बाद याहवेह ने अहरोन से उसके सामने कहा, “जो
देश इस्राएल के घराने को दिया जा रहा है, उसमें तुम्हारी कोई
भी मीरास नहीं रहेगी, और उसमें न ही तुम्हारा कोई भाग
होगा. तुम्हारा भाग मैं हूं, इस्राएल के घराने के बीच में मैं ही
तुम्हारी मीरास हूं.

21 “याद रहे, लेवी के वंशजों को मैंने उनके द्वारा मिलनवाले
तंबू में की जा रही सेवा के प्रतिफल के रूप में, पूरा दसवां अंश
मीरास समान दे दिया है.

22 इस्राएली इसके बाद मिलनवाले तंबू के पास नहीं आएंगे;
नहीं तो इसके दोषी होने के कारण वे इसका दंड जो मृत्यु है,
भोगेंगे.

23 मिलनवाले तंबू से संबंधित सेवाएं सिर्फ लेवियों का कार्य है.
अपने अधर्म का दंड वे ही भोगेंगे. यह तुम्हारी सारी पीढ़ियों के
लिए ठहराया गया हमेशा का नियम है. इस्राएल के घराने के
बीच उनके लिए कोई भी हिस्सा नहीं बांटा है.

24 क्योंकि इस्राएलियों का दसवां अंश, जो वे भेंट के रूप में
याहवेह को चढ़ाते हैं, मैंने लेवियों को दे दिया है; इसलिये मैंने
उनके विषय में यह कहा है ‘इस्राएल के घराने के बीच में
उनके लिए कोई भी हिस्सा नहीं रखा गया हैं.’ ”

25 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

26 “इसके अलावा तुम लेवियों को यह सूचित करोगे: ‘जब तुम
इस्राएल के घराने से वह दसवां अंश ग्रहण करते हो, जो मैंने
उनसे लेकर तुम्हें तुम्हारे हिस्से के रूप में दिया है, तब तुम
उसमें से एक अंश याहवेह को भेंट करोगे; दसवें अंश में से
दसवां अंश.

27 तुम्हारी यह भेंट खलिहान पर से इकट्ठी की गई अन्न, या
दाखरस कुंड की पूरी उत्पाद मानी जाएगी.

28 इस प्रकार तुम भी याहवेह को अपने दसवें अंश में से एक
अंश भेंट के रूप में चढ़ाओगे, जो तुमने इस्राएल के घराने से
प्राप्त किया था. तुम इस अंश में से पुरोहित अहरोन को
याहवेह के लिए चढ़ाई भेंट दिया करोगे.

29 अपनी सभी भेंटों में से याहवेह के लिए ठहराई गई हर एक
भेंट चढ़ाओगे; उन सब में से, जो सबसे उत्तम है, जो उनमें एक
पवित्र अंश है.’

30 “तुम उन्हें सूचित करोगे, ‘जब तुमने इसमें से सबसे उत्तम
भेंट दिया है, तब जो शेष रह जाएगा, वह लेवियों के लिए
खलिहान का उत्पाद तथा दाखरस कुंड का उत्पाद माना
जाएगा.

31 तुम इसको कहीं भी खा सकते हो, तुम तथा तुम्हारे घर-
परिवार; क्योंकि यह मिलनवाले तंबू के लिए तुम्हारे द्वारा की
जा रही सेवा के बदले में होगा.

Numbers 19:1

32 जब तक तुम इसमें से सर्वोत्तम भेंट करते रहोगे, तुम दोषी
नहीं पाए जाओगे; किंतु तुम किसी भी रीति से उन पवित्र भेंटों
को अपवित्र नहीं करोगे; जो इस्राएल के घराने के द्वारा चढ़ाई
गई हैं, नहीं तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है.' "

Numbers 19:1

1 इसके बाद याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को आज्ञा दी:

2 "इस व्यवस्था की विधि जो याहवेह ने दी, वह इस प्रकार है:
इस्राएल के घराने को आज्ञा दो कि वे एक ऐसी बछिया लेकर
आएं, जो लाल रंग की हो, जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो
तथा जिस पर जूआ कभी भी न रखा गया हो.

3 तुम ऐसी बछिया पुरोहित एलिएज़र को सौंपोगे. फिर यह
बछिया छावनी के बाहर ले जाई जाएगी, तथा एलिएज़र की
उपस्थिति में उसका वध किया जाए.

4 इसके बाद पुरोहित एलिएज़र उसके रक्त की कुछ मात्रा
अपनी उंगली में लेकर कुछ रक्त मिलनवाले तंबू के सामने
की ओर सात बार छिड़केगा.

5 इसके बाद उसके देखते-देखते वह बछिया जला दी जाएगी.

6 इस अवसर पर पुरोहित देवदार की लकड़ी, जूफ़ा झाड़ी
तथा लाल रंग की डोरी उस भस्म हो रही बछिया में डाल देगा.

7 फिर पुरोहित अपने वस्त्र धोकर स्नान करेगा और शिविर में
लौट आएगा, किंतु शाम तक वह सांस्कारिक रूप से अपवित्र
रहेगा.

8 वह व्यक्ति, जो बछिया को जलाता है, वह अपने वस्त्रों को
धोएगा तथा स्नान करेगा तथा शाम तक सांस्कारिक रूप से
अपवित्र रहेगा.

9 "इसके बाद एक ऐसा व्यक्ति, जो सांस्कारिक रूप से शुद्ध
है, उस बछिया की राख इकट्ठा कर शिविर के बाहर स्वच्छ
स्थान पर रख देगा. इस्राएलियों की सभा इसका इस्तेमाल
अपवित्रता दूर करने के लिए उसी प्रकार करेंगे, जिस प्रकार
जल अशुद्धता दूर करने के लिए इस्तेमाल करते हैं; यह पाप
शुद्धि के लिए प्रयोग होगा.

10 वह व्यक्ति, जो बछिया की राख इकट्ठा करता है, अपने
वस्त्रों को धोएगा तथा वह शाम तक सांस्कारिक रूप से
अपवित्र रहेगा. यह इस्राएलियों के लिए तथा उनके बीच रह
रहे विदेशियों के लिए हमेशा की विधि रहेगी.

11 "यदि कोई व्यक्ति किसी के शव से छू जाए तो वह
सांस्कारिक रूप से सात दिन तक अपवित्र रहेगा.

12 वह अपनी इस अपवित्रता को तीसरे दिन तथा सातवें दिन
जल से दूर करेगा और उसकी अपवित्रता दूर हो जाएगी; किंतु
यदि वह तीसरे एवं सातवें दिन स्वयं को शुद्ध न कर सके, वह
अपवित्र ही रह जाएगा.

13 कोई भी जब किसी मरे हुए व्यक्ति की देह को छू लेता है
और शुद्ध होने की प्रक्रिया पूर्ण नहीं करता, वह याहवेह के
मिलनवाले तंबू को अपवित्र करता है; ऐसे व्यक्ति को इस्राएल
से निकाल दिया जाए. इसलिये कि उस पर अपवित्रता से
छुड़ानेवाले जल का छिड़काव नहीं किया गया था, वह
अपवित्र ही रहेगा, उस पर उसकी अपवित्रता बनी हुई है.

14 "शिविर में हुई किसी व्यक्ति की मृत्यु से संबंधित विधि यह
है: हर एक व्यक्ति, जो उस शिविर में प्रवेश करता है, तथा हर
एक, जो उस शिविर का निवासी है, सात दिन तक अशुद्ध
रहेगा.

15 हर एक बर्तन, जिस पर न तो ढक्कन रखा हुआ हो और न
जिसका मुख बांधकर बंद किया गया हो, अपवित्र माना
जाएगा.

16 "इसके अलावा यदि कोई व्यक्ति खुले मैदान अथवा खेत में
किसी ऐसे व्यक्ति को छू लेता है, जो तलवार द्वारा मारा गया है
या जिसकी मृत्यु स्वाभाविक रीति से हो चुकी है, अथवा उस
व्यक्ति का स्पर्श किसी मनुष्य की हड्डी या किसी कब्र से हो
जाता है, वह व्यक्ति सात दिन तक सांस्कारिक रूप से
अपवित्र समझा जाएगा.

17 "उस अशुद्ध व्यक्ति के लिए वे जलाई गई पापबलि की राख
लेकर एक बर्तन में बहते हुए जल के साथ मिलाएंगे.

18 फिर सांस्कारिक रूप से शुद्ध व्यक्ति एक जूफ़ा लेकर इस
मिश्रण में डुबोएगा और उसके शिविर पर, सारी सामग्री पर

तथा उन सभी व्यक्तियों पर, जो वहां उपस्थित थे, तथा उस व्यक्ति पर छिड़काव कर देगा, जिसका स्पर्श उस हड्डी से या उस मारे हुए व्यक्ति से या स्वाभाविक रूप से मरे हुए व्यक्ति से या कब्र से हो गया था.

19 तब वह शुद्ध व्यक्ति अशुद्ध व्यक्ति पर तीसरे दिन भी छिड़काव करेगा तथा सातवें दिन भी. सातवें दिन वह उस अशुद्धता से पवित्र करने की प्रक्रिया पूरी कर चुकेगा. वह अपने वस्त्रों को धोएगा तथा स्नान करेगा तथा वह शाम तक पूरी तरह से शुद्ध हो जाएगा.

20 किंतु वह व्यक्ति, जो सांस्कारिक रूप से अशुद्ध है और वह स्वयं को अपनी अशुद्धि से पवित्र नहीं करता, वह व्यक्ति इस्राएली समाज से निकाल दिया जाएगा, क्योंकि उसने याहवेह के पवित्र स्थान को दूषित किया है. उस पर अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल का छिड़काव नहीं किया गया है, वह अपवित्र है.

21 तब यह उनके लिए एक सदा की विधि होगी. “वह जो इस जल का छिड़काव करता है, अपने वस्त्र धोएगा, जो कोई उस जल को छूता है, शाम तक सांस्कारिक रूप से अपवित्र रहेगा.

22 इसके अलावा हर एक वस्तु, जो उस अशुद्ध व्यक्ति द्वारा छुई गई हो, वह अपवित्र होगी, तथा वह व्यक्ति जो उसे छूता है शाम तक अपवित्र रहेगा.”

Numbers 20:1

1 पहले महीने में सारे इस्राएल के घराने के लोग ज़िन के निर्जन प्रदेश में पहुंच गए. उन्होंने कादेश में पड़ाव डाला. यहां मिरियम की मृत्यु हो गई और उसे वहीं मिट्टी दी गई.

2 इस्राएल के घराने के पीने के लिए वहां जल उपलब्ध ही न था. वे लोग मोशेह तथा अहरोन के विरोध में एकजुट हो गए.

3 लोगों ने मोशेह से यह कहते हुए झगड़ा करना शुरू कर दिया, “सही होता कि हम भी उसी अवसर पर नाश हो गए होते, जब हमारे भाई याहवेह के सामने नाश हुए जा रहे थे!

4 क्यों आप याहवेह की प्रजा को इस निर्जन प्रदेश में ले आए हैं, कि हम और हमारे पशु सभी मृत्यु के कौर हो जाएं?

5 क्यों आपने हमें मिस्र देश से निकलने के लिए मजबूर किया; क्या इस बेमतलब के स्थान में लाकर छोड़ने के लिए? यह तो अन्न या, अंजीरों या दाख-लताओं या अनारों का देश है ही नहीं, और न ही यहां हमारे लिए पीने का पानी उपलब्ध है!”

6 यह सुन मोशेह तथा अहरोन इस्राएली सभा के सामने से निकलकर मिलनवाले तंबू के प्रवेश के सामने आकर मुंह के बल गिर पड़े. यहां उन्हें याहवेह की महिमा के दर्शन हुआ.

7 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

8 “अपनी लाठी अपने साथ लेकर तुम और तुम्हारा भाई अहरोन, सारी सभा को इकट्ठा कर उनकी दृष्टि में उस चट्टान से बात करो कि वह अपना जल निकाल दे. ऐसा करके तुम उस चट्टान में से उनके लिए जल निकालोगे कि सारी सभा तथा उनके पशु जल पी सकें.”

9 फिर मोशेह ने याहवेह के सामने से वह लाठी उठा ली, ठीक जैसा आदेश उन्हें याहवेह की ओर से मिला था.

10 मोशेह एवं अहरोन ने सारी सभा को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया और उनसे कहा, “विद्रोहियो, अब मेरी सुनो. क्या अब हमें तुम्हारे लिए इस चट्टान से जल निकालना होगा?”

11 यह कहते हुए मोशेह ने अपनी बांह ऊंची उठाकर अपनी लाठी से उस चट्टान पर दो बार वार किया और बहुत मात्रा में जल निकलने लगा. सारी सभा एवं पशुओं ने अपनी प्यास बुझा ली.

12 किंतु याहवेह ने मोशेह एवं अहरोन से कहा, “तुमने मुझमें विश्वास न करके इस्राएल के घराने के सामने मेरी पवित्रता की पुष्टि नहीं की, इसलिये तुम इस सभा को मेरे द्वारा दिए हुए देश में नहीं ले जाओगे.”

13 यह मेरिबाह का सोता था जहां इस्राएल के घराने ने याहवेह से झगड़ा किया था और यहां याहवेह ने स्वयं को उनके बीच पवित्र सिद्ध कर दिया.

14 मोशेह ने कादेश से एदोम के राजा को संदेशवाहकों के द्वारा यह संदेश भेजा: “आपके भाई इस्राएल की विनती यह है: आप तो हम पर आई कठिनाइयों को जानते हैं.

Numbers 21:1

15 हमारे पूर्वजों ने मिस्र देश में प्रवास किया और हम वहां
बहुत समय तक रहते रहे. मिस्रियों ने हमारे साथ तथा हमारे
पूर्वजों के साथ क्रूरतापूर्वक व्यवहार किया,

16 हमने इस पर याहवेह की गुहार लगाई और उन्होंने हमारी
सुन ली, तथा अपना एक स्वर्गदूत भेजकर हमें मिस्र देश से
निकाल लिया. “अब हम कादेश तक आ पहुंचे हैं, जो आपके
देश की सीमा से लगा हुआ है.

17 कृपया हमें अपने देश में से होकर निकल जाने की अनुमति
दे दीजिए. हम न तो आपके किसी खेत में से होकर जाएंगे और
न किसी दाख की बारी में से; यहां तक कि हम तो किसी कुएं
के जल का भी उपयोग नहीं करेंगे. हम सिर्फ राजमार्ग का ही
प्रयोग करेंगे, जब तक हम आपकी सीमा से पार न हो जाएं,
हम न दायीं ओर जाएंगे, न बायीं ओर.”

18 किंतु इस विषय में एदोम का जवाब था: “आप लोग हमारे
देश में से होकर नहीं जाएंगे, नहीं तो हम आपको तलवार से
रोकेंगे.”

19 इस्राएलियों ने उससे दोबारा विनती की: “हम सिर्फ
राजमार्ग से ही यात्रा करेंगे और यदि हमारे पशु आपका ज़रा
सा भी जल पिएंगे, तब हम इसका मूल्य भुगतान कर देंगे. हमें
सिर्फ यहां से पैदल ही पैदल जाने की अनुमति दे दीजिए,
इसके अलावा कुछ भी नहीं.”

20 किंतु उसका उत्तर यही था: “तुम यहां से होकर नहीं
जाओगे.” तब एदोम उनके विरुद्ध एक मजबूत सेना तथा
पक्के इरादे के साथ खड़ा हो गया.

21 एदोम ने इस्राएल को अपने देश में से होकर जाने की
अनुमति नहीं दी; इसलिये इस्राएल ने उस देश से होकर जाने
का विचार छोड़ दिया.

22 इस्राएल के घराने ने कादेश से कूच किया, और पूरी
इस्राएली सभा होर पर्वत तक पहुंच गई.

23 एदोम की सीमा पर होर पर्वत पर याहवेह ने मोशेह तथा
अहरोन को सूचित किया,

24 “अहरोन को उसके पूर्वजों में मिल जाना है; क्योंकि वह उस
देश में प्रवेश नहीं करेगा, जो मैंने इस्राएल के घराने को दिया
है, क्योंकि तुम दोनों ने मेरिबाह के जल पर मेरे आदेश का
विद्रोह किया था.

25 अहरोन तथा उसके पुत्र एलिएज़र को होर पर्वत पर ले
जाओ.

26 वहां अहरोन के पुरोहित वस्त्र उतारकर उसके पुत्र
एलिएज़र को पहना देना. फिर अहरोन अपने लोगों में मिल
जाएगा; वहां उसका देहांत हो जाएगा.”

27 तब मोशेह ने ठीक वही किया, जैसा याहवेह ने आदेश दिया
था: वे सारी सभा की दृष्टि में होर पर्वत पर चढ़ गए.

28 जब मोशेह ने वे कपड़े अहरोन से उतारकर उसके पुत्र
एलिएज़र को पहनाए, तब अहरोन ने वहां पर्वत शिखर पर
अपने प्राणों को त्याग दिया. इसके बाद मोशेह एवं एलिएज़र
पर्वत से नीचे उतर गए,

29 जब सारी सभा को यह मालूम चला कि अहरोन की मृत्यु हो
चुकी है, तब सारे इस्राएल के घराने ने तीस दिन अहरोन के
लिए विलाप किया.

Numbers 21:1

1 जब नेगेव निवासी कनानी अराद के राजा ने यह सुना कि
इस्राएली अथारीम मार्ग से बढ़े चले आ रहे हैं, तब उसने
इस्राएल पर आक्रमण कर दिया, तथा कुछ को बंदी बना
लिया.

2 फिर इस्राएल ने याहवेह के सामने यह शपथ की: “यदि आप
वास्तव में शत्रुओं को हमारे अधीन कर देंगे, तो हम इनके
नगरों को पूरी तरह से नाश कर देंगे.”

3 याहवेह ने उनकी दोहाई स्वीकार कर ली और कनानियों को
उनके अधीन कर दिया. इस्राएलियों ने उनके नगरों को पूरी
तरह से नाश कर दिया. परिणामस्वरूप वह स्थान होरमाह के
नाम से मशहूर हो गया.

Numbers 21:1

4 इसके बाद उन्होंने होर पर्वत से कूच किया और लाल सागर
का मार्ग लिया कि उन्हें एदोम से होते हुए जाना न पड़े. इस
यात्रा ने प्रजा का धीरज खत्म कर दिया.

5 प्रजा ने परमेश्वर एवं मोशेह के विरुद्ध बड़बड़ाना शुरू कर
दिया, “आपने हमें मिस्र देश से क्यों निकाला है, कि हम इस
निर्जन प्रदेश में अपने प्राण गवां दें? यहां तो न भोजन है न जल!
और जो नीरस भोजन हमें दिया जा रहा है, वह हमारे लिए
घृणित हो चुका है.”

6 याहवेह ने उन लोगों के बीच में विषैले सांप भेज दिए, जिनके
द्वारा डसे जाने पर अनेक इस्राएलियों की मृत्यु हो गई.

7 तब वे लोग मोशेह के पास आकर कहने लगे, “हमने पाप
किया है, क्योंकि हमने याहवेह तथा आपके विरुद्ध बड़बड़ाया
है. आप उनसे हमारे लिए विनती कीजिए कि वह इन सांपों को
हमसे दूर कर दें.” मोशेह ने लोगों के लिए विनती की.

8 तब याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, “विषैले सांप की प्रतिमा
बनाकर एक खंभे पर खड़ी कर दो तब होगा यह, कि जो कोई
सांप का डसा हुआ व्यक्ति आकर इस प्रतिमा को देखेगा, वह
जीवन प्राप्त करेगा.”

9 मोशेह ने सांप की प्रतिमा गढ़ कर एक खंभे पर खड़ी कर
दी. तब यह होने लगा कि यदि कोई सांप का डसा हुआ व्यक्ति
आकर उस कांसे के सांप की ओर देख लेता था, तो मृत्यु से
बच जाता था.

10 फिर इस्राएलियों ने यात्रा शुरू की और ओबोथ नामक
स्थान पर शिविर डाल दिया.

11 ओबोथ से कूच कर उन्होंने इये-आबारिम के निर्जन प्रदेश
में डेरा डाला, जो पूर्व दिशा की ओर मोआब के सामने है.

12 वहां से कूच कर उन्होंने ज़ेरेद की वादी में डेरा डाल दिया.

13 वहां से यात्रा करते हुए उन्होंने आरनोन के दूसरी ओर डेरा
डाला. यह वह स्थान था, जो अमोरियों की सीमा पर निर्जन
प्रदेश में है. आरनोन मोआब की सीमा तय करता है,
मोआबियों एवं अमोरियों के बीच की.

14 इस बात का वर्णन याहवेह के युद्ध, नामक ग्रंथ में इस रीति
से किया गया है: “सूफ़ाह वाहेब तथा आरनोन की वादियां,

15 तथा वादियों की वे ढलान, जो आर के क्षेत्र तक फैली होती
है, तथा जो मोआब की सीमा तक पहुंची हुई है.”

16 वहां से वे बीर तक पहुंचे, उस कुएं तक, जहां याहवेह ने
मोशेह को आज्ञा दी थी, “इकट्ठा करो लोगों को, कि मैं उनके
लिए जल दे सकूं.”

17 फिर इस्राएलियों ने यह गीत गाया: “कुएं भरने लगो, सभी!
यह गाएं.

18 वह कुंआ, जिसको प्रधानों ने खोदा था, जिसे कुलीन
व्यक्तियों ने खोदा है, जिसके लिए राजदंड तथा उनकी
लाठियों का प्रयोग किया गया था.” फिर उन्होंने निर्जन प्रदेश
से मत्तानाह की ओर कूच किया और

19 मत्तानाह से नाहालिएल की ओर और फिर वहां से बामोथ
की ओर,

20 बामोथ से उस घाटी की ओर, जो मोआब देश में है तथा
पिसगाह पर्वत शिखर, जो निर्जन प्रदेश के सामने है.

21 यहां पहुंचकर इस्राएल ने अमोरियों के राजा सीहोन के लिए
अपने संदेशवाहक को इस संदेश के साथ भेजे:

22 “हमें अपने देश में से होकर जाने की अनुमति दे दीजिए.
हम न तो मार्ग के खेतों में प्रवेश करेंगे और न अंगूर के बगीचों
में. हम कुंओं का जल भी न पियेंगे. हम आपके देश को पार
करते हुए सिर्फ राजमार्ग का ही प्रयोग करेंगे.”

23 किंतु राजा सीहोन ने इस्राएल को अपनी सीमा में से होकर
जाने की अनुमति ही न दी, बल्कि उसने अपनी सारी प्रजा को
इकट्ठा कर निर्जन प्रदेश में इस्राएल पर आक्रमण कर दिया.
याहज़ नामक स्थान पर दोनों में युद्ध छिड़ गया.

24 इस्राएल ने उन पर तलवार के प्रहार से अम्मोन देश की
सीमा तक, आरनोन से यब्बोक तक के क्षेत्र पर अधिकार कर
लिया, क्योंकि जाज़ेर अम्मोन के घराने की सीमा पर था.

25 इस्राएल ने इन सभी नगरों पर अधिकार कर लिया तथा हेशबोन एवं इसके सभी गांवों में, जो अमोरियों के नगर थे, इस्राएली वहां रहने लगे.

26 हेशबोन अमोरियों के राजा सीहोन का मुख्यालय था, जिसने मोआब के पहले के राजा से युद्ध कर उससे आरनोन तक उसका सारा देश छीन लिया था.

27 तब यह कहावत मशहूर हो गई: "हेशबोन आ जाइए! हम इसको दोबारा बनाएंगे; कि सीहोन का नगर स्थापित कर दिया जाए.

28 "हेशबोन से एक आग की लपट निकली, सीहोन के नगर से एक आग की लौ. इसने मोआब के आर को भस्म कर लिया, उन्हें, जो आरनोन के प्रमुख शिखर थे.

29 मोआब, धिक्कार है तुम पर! तुम तो खत्म हो चुके, खेमोश के निवासियो! उसने अमोरी राजा सीहोन को अपने पुत्रों को भगौड़े बनाकर तथा पुत्रियों को बंदी बनाकर उसे सौंप दिया है.

30 "किंतु हमने उन्हें धूल में मिला दिया है; दीबोन तक हेशबोन नाश होकर खंडहर बन चुके हैं, इसके बाद हमने नोपाह तक, जो मेदेबा की सीमा तक फैला हुआ क्षेत्र का है, उजाड़ दिया है."

31 इस प्रकार इस्राएल अमोरियों के देश में बस गया.

32 मोशेह ने याज़र की जासूसी करने की आज्ञा दी. उन्होंने जाकर वहां के गांवों को अपने अधिकार में कर लिया, तथा वहां निवास कर रहे अमोरियों को वहां से खदेड़ दिया.

33 तब वे मुड़कर बाशान के मार्ग से आगे बढ़ गए. बाशान का राजा ओग अपनी सारी सेना लेकर उनसे युद्ध करने एद्रेइ पहुंच गया.

34 याहवेह की ओर से मोशेह को यह आश्वासन मिला, "तुम्हें उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैंने उसे, उसकी सारी सेना तथा प्रजा को, तुम्हारे अधीन कर दिया है. तुम उसके साथ वही सब करोगे, जो तुमने हेशबोन निवासी अमोरियों के राजा सीहोन के साथ किया था."

35 फिर उन्होंने बाशान के राजा ओग को, उसके पुत्रों तथा उसकी सारी प्रजा का नाश कर दिया, जिससे वहां कोई भी बचा न रह गया, और इस्राएलियों ने उस देश पर अधिकार कर लिया.

Numbers 22:1

1 इसके बाद इस्राएली यात्रा करते हुए मोआब के मैदानों में आ पहुंचे, जो यरदन पार येरीख़ो के सामने है, यहां उन्होंने डेरा डाल दिया.

2 ज़ीप्पोर के पुत्र बालाक की जानकारी में वह सब था, जो इस्राएल द्वारा अमोरियों के साथ किया गया था.

3 तब मोआब देश इस्राएलियों की विशाल संख्या के कारण बहुत ही डर गया, इस्राएल मोआब के लिए आतंक का विषय हो गया.

4 मोआब ने मिदियान के प्राचीनों के सामने अपने विचार इस प्रकार रखे, "अब तो यह विशाल जनसमूह हमारे आस-पास की वस्तुओं को इस प्रकार चट कर जाएगा, जिस प्रकार बैल मैदान के घास को चट कर जाता है." इस अवसर पर ज़ीप्पोर का पुत्र बालाक जो मोआब देश का राजा था,

5 उसने पेथोर नगर को, जो फरात नदी के निकट है, उस नगर का रहवासी, बेओर के पुत्र बिलआम के पास अपने दूतों के द्वारा यह आमंत्रण भेजा: "सुनिए, मिस्र देश से यह जनसमूह यहां आ गया है. ये लोग इतनी बड़ी संख्या में हैं कि वे भूमि पर छा गए हैं और इन्होंने हमारे देश के सामने ही पड़ाव डाल रखा है.

6 तब कृपा कर यहां पधारिए, मेरी ओर से इन्हें शाप दीजिए, क्योंकि ये हमारी तुलना में बहुत ही शक्तिशाली हैं. तब मेरे लिए यह संभव हो जाएगा कि मैं उन्हें पराजित कर हमारे देश से बाहर खदेड़ सकूं. क्योंकि इतना मुझे मालूम है कि आप जिनको आशीर्वाद देते हैं, वे फलवंत हो जाते हैं, तथा जिन्हें आप शाप देते हैं, वे शापित ही रह जाते हैं."

7 फिर मोआब तथा मिदियान के प्राचीन अपने साथ भविष्य
बताने का उपहार लेकर उपस्थित हुए. बिलआम के घर पर
पहुंचकर उन्होंने उसके सामने बालाक का आग्रह दोहरा
दिया.

8 बिलआम ने उनके सामने प्रस्ताव रखा, "आप यहां रात्रि के
लिए ठहर कर विश्राम कीजिए. जब याहवेह मुझसे बातें करेंगे,
मैं आपको उनका संदेश दे दूंगा." मोआब के वे प्रधान
बिलआम के यहां ठहर गए.

9 परमेश्वर बिलआम पर प्रकट हुए तथा उससे प्रश्न किया,
"कौन हैं ये व्यक्ति, जो तुम्हारे साथ हैं?"

10 बिलआम ने परमेश्वर को उत्तर दिया, "ज़ीप्पोर के पुत्र
बालाक ने, जो मोआब का राजा है, मेरे लिए संदेश भेजा है:

11 'सुनिए, मिस्र से ये लोग निकलकर आए हुए हैं. ये लोग तो
भूमि पर छा गए हैं. अब आकर मेरी ओर से इन्हें शाप दे दो.
तब संभवतः मैं उनसे युद्ध कर उन्हें यहां से खदेड़ सकूंगा.' "

12 परमेश्वर ने बिलआम को आज्ञा दी, "मत जाओ उनके साथ.
तुम उन लोगों को शाप नहीं दोगे, क्योंकि वे लोग आशीषित
लोग हैं."

13 फिर सुबह होते ही बिलआम ने बालाक के प्रधानों को उत्तर
दिया, "आप लोग अपने देश लौट जाइए, क्योंकि याहवेह ने
मुझे आप लोगों के साथ जाने के लिए मना कर दिया है."

14 मोआब के उन प्रधानों ने लौटकर बालाक को यह सूचना दे
दी, "बिलआम ने हमारे साथ यहां आने से मना कर दिया है."

15 फिर बालाक ने दोबारा इन प्रधानों से अधिक संख्या में तथा
अधिक सम्मानजनक प्रधानों को बिलआम के पास भेज दिया.

16 बिलआम के सामने जाकर उन्होंने विनती की, "ज़ीप्पोर के
पुत्र बालाक की विनती है, 'आपको मेरे पास आने में कोई भी
बाधा न हो,

17 विश्वास कीजिए मैं आपको अपार धन से सम्मानित कर
दूंगा, आप जो कुछ कहेंगे, मैं वही करने के लिए तैयार हूं. बस,
आप कृपा कर यहां आ जाइए और मेरी ओर से इन लोगों को
शाप दे दीजिए.' "

18 बिलआम ने बालाक के लोगों को उत्तर दिया, "यदि बालाक
मेरे घर को चांदी और सोने से भर भी दें, मेरे लिए कुछ भी
करना संभव न होगा, चाहे यह विनती छोटी हो या बड़ी. मैं
याहवेह, मेरे परमेश्वर के आदेश के विपरीत कुछ नहीं कर
सकता.

19 फिर अब, आप रात्रि में मेरे यहां विश्राम कीजिए. मैं मालूम
करूंगा, कि याहवेह इस विषय में मुझसे और क्या कहना
चाहेंगे."

20 रात में परमेश्वर ने बिलआम के सामने आकर उसे आज्ञा
दी, "यदि वे तुम्हें अपने साथ ले जाने के उद्देश्य से आ ही गए
हैं, तो जाओ उनके साथ; किंतु तुम सिर्फ वही कहोगे, जो मैं
तुमसे कहूंगा, वही करना."

21 फिर सुबह बिलआम उठा, अपनी गधी की काठी कसी तथा
मोआब के प्रधानों के साथ चल दिया.

22 बिलआम के उनके साथ चले जाने पर परमेश्वर अप्रसन्न हो
गए. याहवेह का दूत बिलआम के मार्ग में शत्रु के समान
विरोधी बनकर खड़ा हो गया. बिलआम अपनी गधी पर बैठा
हुआ था, तथा उसके साथ उसके दो सेवक भी थे.

23 जैसे ही गधी की दृष्टि हाथ में तलवार लिए हुए, मार्ग में खड़े
हुए याहवेह के दूत पर पड़ी, वह मार्ग छोड़ खेत में चली गई.
बिलआम ने गधी को प्रहार किए, कि वह दोबारा मार्ग पर आ
जाए.

24 फिर याहवेह का दूत अंगूर के बगीचे के बीच की संकरी
पगडंडी पर जा खड़ा हुआ, जिसके दोनों ओर दीवार थी.

25 जब गधी की दृष्टि याहवेह के दूत पर पड़ी वह दीवार से सट
गई, जिससे बिलआम का पैर दीवार से दब गया. बिलआम ने
दोबारा उस गधी पर प्रहार किया.

26 याहवेह का वह दूत आगे चला गया तथा एक ऐसे संकरे
स्थान पर जा खड़ा हुआ जहां न तो दाएं मुड़ने का कोई स्थान
था, न बाएं मुड़ने का.

Numbers 23:1

27 जब उस गधी ने याहवेह के दूत को देखा तो वह बिलआम
के नीचे पसर गई. बिलआम क्रोधित हो गया तथा उसने अपनी
लाठी से उस गधी पर वार किया.

28 तब याहवेह ने उस गधी को बोलने की क्षमता प्रदान कर
दी. वह बिलआम से कहने लगी, “मैंने ऐसा क्या किया है, जो
आपने मुझ पर इस प्रकार तीन बार वार किया है?”

29 बिलआम ने उसे उत्तर दिया, “इसलिये कि तुमने मुझे हंसी
का पात्र बना रखा है! यदि मेरे हाथ में तलवार होती, मैं अब
तक तुम्हारा वध कर चुका होता.”

30 उस गधी ने उसे उत्तर दिया, “क्या मैं आपकी वही गधी नहीं
रही हूं, जिस पर आप आजीवन यात्रा करते रहे हैं, जैसे कि
आज भी? क्या मैंने भी आपके साथ कभी ऐसा व्यवहार किया
है?” बिलआम ने उत्तर दिया, “नहीं तो?”

31 फिर याहवेह ने बिलआम को वह दृष्टि प्रदान की, कि उसे
याहवेह का वह दूत दिखाई देने लगा, जो मार्ग में तलवार लिए
हुए खड़ा था. बिलआम उसके सामने गिर पड़ा.

32 याहवेह के दूत ने बिलआम से पूछा, “तुमने तीन बार इस
गधी पर वार क्यों किया है? यह समझ लो कि मैं तुम्हारा विरोध
करने आ गया हूं, क्योंकि तुम्हारी चाल मुझसे ठीक विपरीत है.

33 इस गधी ने मुझे देख लिया और इन तीनों बार मुझसे दूर
चली गई; यदि उसने ऐसा न किया होता तो निश्चित ही इस
समय मैं तुम्हारा नाश कर चुका होता, और उसे जीवित ही
रहने देता.”

34 बिलआम ने याहवेह के उस दूत के सामने यह स्वीकार
किया, “मैंने पाप किया है. मैं इस बात से अनजान था, कि मार्ग
में खड़े हुए आप मेरा सामना कर रहे थे. फिर अब, यदि यह
आपके विरुद्ध हो रहा है, मैं लौट जाना चाहूंगा.”

35 किंतु याहवेह के दूत ने बिलआम से कहा, “अब तो तुम इन
लोगों के साथ चले जाओ, किंतु तुम वही कहोगे, जो मैं तुम्हें
कहने के लिए प्रेरित करूंगा.” फिर बिलआम बालाक के उन
प्रधानों के साथ चला गया.

36 जब बालाक को यह मालूम हुआ, कि बिलआम आ रहा है,
वह उससे भेंट करने मोआब के उस नगर के लिए निकल
पड़ा, जो आरनोन की सीमा पर स्थित है; सीमा के दूर वाले
छोर पर.

37 भेंट होने पर बालाक ने बिलआम से कहा, “क्या मैंने
आपको अत्यंत आवश्यक विनती के साथ आमंत्रित न किया
था? आप फिर क्यों न आए? क्या मेरे लिए आपका उचित
सम्मान करना असंभव था?”

38 बिलआम ने बालाक को उत्तर दिया, “देखिए अब तो मैं
आपके लिए प्रस्तुत हूं. क्या मुझमें ऐसी कोई क्षमता है, कि मैं
कुछ भी कह सकूं? मैं तो वही कहूंगा, जो परमेश्वर मेरे मुख में
डालेंगे.”

39 यह कहते हुए बिलआम बालाक के साथ चला गया और वे
किरयथ-हुज़ोथ नामक स्थल पर पहुंचे.

40 वहां बालाक ने बछड़ों तथा भेड़ों की बलि भेंट की. इसका
कुछ अंश उसने बिलआम तथा उसके साथ आए प्रधानों को
दे दिया.

41 सुबह होते ही बालाक बिलआम को बामोथ-बाल के पूजा-
स्थल पर ले गया, जहां से इस्राएली प्रजा का एक अंश दिखाई
दे रहा था.

Numbers 23:1

1 तब बिलआम ने बालाक से विनती की, “मेरे लिए यहां सात
वेदियां बनवाइए, और वहां मेरे लिए सात बछड़े एवं सात मेढ़े
तैयार रखिए.”

2 बालाक ने यही किया. फिर बालाक एवं बिलआम ने मिलकर
हर एक वेदी पर एक-एक बछड़ा एवं मेढ़ा भेंट किया.

3 फिर बिलआम ने बालाक से विनती की, “आप अपनी
होमबलि के निकट ठहरे रहिए, मैं याहवेह के सामने जाऊंगा,
हो सकता है कि याहवेह मुझसे भेंट करने आएं. वह मुझ पर,
जो कुछ स्पष्ट करेंगे, मैं आप पर प्रकट कर दूंगा.” यह कहकर
बिलआम एक सुनसान पहाड़ी पर चला गया.

4 यहां बिलआम ने परमेश्वर से बातें करनी शुरू की, “मैंने सात
वेदियां बनवाई हैं, और मैंने हर एक पर एक-एक बछड़ा तथा
मेढ़ा भेंट चढ़ाया है.”

5 याहवेह ने बिलआम को वह वचन सौंप दिया और उसे आज्ञा
दी, “बालाक के पास जाओ तथा उससे यही कह देना.”

6 फिर बिलआम बालाक के पास लौट गया. बालाक अपनी
होमबलि के पास खड़ा हुआ था, उसके साथ मोआब के सारे
प्रधान भी थे.

7 बिलआम ने अपना वचन शुरू किया, “अराम देश से बालाक
मुझे यहां ले आया है, बालाक, जो पूर्वी पर्वतों में से मोआब का
राजा है, उसका आदेश है, ‘मेरी ओर से याकोब को शाप दो;
यहां आकर इस्राएल की बुराई करो.’

8 मैं उन्हें शाप कैसे दे दूं, जिन्हें परमेश्वर ने शापित नहीं किया?
मैं उनकी बुराई कैसे करूं, जिनकी बुराई याहवेह ने नहीं की
है?

9 मैं यहां चट्टानों के शिखर से उन्हें देख रहा हूं, मैं यहां
पहाड़ियों से उन्हें देख रहा हूं; ये वे लोग हैं, जो सबसे अलग हैं,
ये अन्य देशों में मिलाए नहीं जा सकते.

10 किसमें क्षमता है, याकोब के धूलि के कणों की गिनती करने
की, या इस्राएल के एक चौथाई भाग की गिनती करने की भी?
मेरी कामना यही है कि मैं धर्मी की मृत्यु को प्राप्त हो जाऊं.
हां, ऐसा ही हो मेरा अंत!”

11 यह सुन बालाक ने बिलआम से कहा, “आपने मेरे साथ यह
क्या कर डाला है? मैंने तो आपको यहां इसलिये आमंत्रित
किया था, कि आप मेरे शत्रुओं को शाप दें, किंतु आपने तो
वस्तुतः उन्हें आशीर्वाद दे दिया है!”

12 बिलआम ने उत्तर दिया, “क्या, ज़रूरी नहीं कि मैं वही कहूं,
जो याहवेह ने मुझे बोलने के लिए सौंपा है?”

13 फिर बालाक ने बिलआम से आग्रह किया, “कृपा कर आप
इस दूसरी जगह पर आ जाइए, जहां से ये लोग आपको दिखाई
दे सकें, हालांकि यहां से आप उनका पास वाला छोर ही देख
सकेंगे, पूरे समूह को नहीं. आप उन्हें वहीं से शाप दे दीजिए.”

14 तब बालाक बिलआम को ज़ोफिम के मैदान में, पिसगाह
की चोटी पर ले गया. वहां उसने सात वेदियां बनवाई और हर
एक पर एक-एक बछड़ा तथा एक-एक मेढ़ा भेंट चढ़ाया.

15 फिर वहां बिलआम ने बालाक से कहा, “आप यहीं होमबलि
के निकट ठहरिए और मैं वहां आगे जाकर याहवेह से भेंट
करूंगा.”

16 वहां याहवेह ने बिलआम से भेंट की तथा उसके मुख में
अपने शब्द भर दिए और याहवेह ने बिलआम को यह आज्ञा
दी, “बालाक के पास लौटकर तुम यह कहोगे.”

17 बिलआम बालाक के पास लौट आया, जो इस समय
होमबलि के निकट खड़ा हुआ था, तथा मोआब के प्रधान भी
उसके पास खड़े हुए थे. बालाक ने उससे पूछा, “क्या कहा है
याहवेह ने तुमसे?”

18 तब बिलआम ने उसे सौंपा गया वचन दोहरा दिया: “उठो,
बालाक, सुन लो; ज़ीप्पोर के पुत्र, मेरी ओर ध्यान दो!

19 परमेश्वर मनुष्य तो हैं नहीं, कि झूठी बात करें, न ही वह
मानव की संतान हैं, कि उन्हें अपना मन बदलना पड़े. क्या,
यह संभव है कि उन्होंने कुछ कहा है? और उन्हें वह पूरा
करना असंभव हो गया?

20 सुन लीजिए, मुझे तो आदेश मिला है इन्हें आशीर्वाद देने
का; जब याहवेह ने आशीर्वाद दे दिया है, तो उसे पलटा नहीं
जा सकता.

21 “याहवेह ने याकोब में अनर्थ नहीं पाया, न उन्हें इस्राएल में
विपत्ति दिखी है; याहवेह, जो उनके परमेश्वर हैं, उनके साथ हैं;
उनके साथ राजा की ललकार रहती है.

22 परमेश्वर ही हैं, मिस्र से उन्हें निकालने वाले; उनमें जंगली
सांड़ के समान ताकत है.

23 कोई अपशकुन नहीं है याकोब के विरुद्ध, न ही इस्राएल के
विरुद्ध कोई भावी घोषणा. सही अवसर पर याकोब के विषय
में कहा जाएगा, इस्राएल के विषय में कहा जाएगा, ‘याहवेह ने
कैसा महान कार्य किया है!’

24 देखो, सिंहनी के समान यह दल उभर रहा है, एक शेर के समान यह स्वयं को खड़ा कर रहा है; जब तक वह आहार को खा न ले, वह विश्राम न करेगा, हां, तब तक, जब तक वह मारे हुओं का लहू न पी ले."

25 यह सुन बालाक ने बिलआम से कहा, "ऐसा करो, अब न तो शाप दो और न ही आशीर्वाद!"

26 किंतु बिलआम ने बालाक को उत्तर दिया, "क्या मैंने आपको बताया न था, जो कुछ याहवेह मुझसे कहेंगे, वही करना मेरे लिए ज़रूरी है?"

27 तब बालाक ने बिलआम से विनती की, "कृपा कर आइए, मैं आपको एक दूसरी जगह पर ले चलूंगा. हो सकता है यह परमेश्वर को ठीक लगे और आप मेरी ओर से उन्हें शाप दे दें."

28 फिर बालाक बिलआम को पेओर की चोटी पर ले गया, जहां से उजाड़ क्षेत्र दिखाई देता है.

29 बिलआम ने बालाक को उत्तर दिया, "अब आप यहां मेरे लिए सात वेदियां बना दीजिए तथा मेरे लिए यहां सात बछड़े एवं सात मेढ़े तैयार कीजिए."

30 बालाक ने ठीक वैसा ही किया, जैसा बिलआम ने विनती की थी. उसने हर एक वेदी पर एक-एक मेढ़ा चढ़ाया.

Numbers 24:1

1 जब बिलआम ने यह ध्यान दिया कि इस्राएल को आशीर्वाद देने पर याहवेह प्रसन्न होते हैं, उसने पूर्व अवसरों के समान शकुन ज्ञात करने का प्रयास नहीं किया. उसने निर्जन प्रदेश की ओर अपना मुख स्थिर किया.

2 जब बिलआम ने दृष्टि की, तो उसे गोत्र के अनुसार व्यवस्थित इस्राएली डेरे डाले हुए दिखाई दिए. परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा.

3 उसने अपना वचन शुरू कर दिया: "बेओर के पुत्र बिलआम की वाणी, उस व्यक्ति की वाणी, जिसे दृष्टि दी गई है,

4 यह उसकी वाणी है, जो परमेश्वर के वचन सुनता है, जो सर्वशक्तिमान का दर्शन देखा करता है, वह भूमि पर दंडवत पड़ा है, उसकी दृष्टि खुली है:

5 "याकोब कैसे सुंदर लग रहे हैं, तुम्हारे शिविर, इस्राएल, तुम्हारे डेरे!

6 "जो फैली हुई घाटी के समान है, जो नदी तट के बगीचे के समान है, जो याहवेह द्वारा रोपित अगरू पौधे के समान, जो जल के निकट के देवदार वृक्ष के समान है.

7 जल उसके जल पात्रों से हमेशा बहता रहेगा, उसका बीज जल भरे खेतों के निकट होगा. "उसका राजा, अगाग से भी अधिक महान होगा, उसका राज्य बढ़ता जाएगा.

8 "परमेश्वर उसे मिस्र देश से निकाल लाए; उसके लिए परमेश्वर जंगली सांड़ के सींग के समान हैं, वह उन राष्ट्रों को चट कर जाएगा, जो उसके विरुद्ध हैं, उनकी हड्डियां चूर-चूर हो जाएंगी, वह अपने बाणों से उन्हें नाश कर देगा.

9 वह शेर के समान लेटता तथा विश्राम करता है, किसमें साहस है कि इस शेर को छेड़ें? "सराहनीय हैं वे सब, जो उसे आशीर्वाद देते हैं, शापित हैं, वे सब जो उसे शाप देते हैं!"

10 बिलआम के प्रति बालाक का क्रोध भड़क उठा, अपने हाथ पीटते हुए बिलआम से कहा, "मैंने तुम्हें अपने शत्रुओं को शाप देने के उद्देश्य से यहां बुलाया था और अब देख लो, तुमने उन्हें तीनों बार आशीष ही देने की हठ की है.

11 इसलिये अब भाग जाओ यहां से अपने देश को. मैंने चाहा था, तुम्हें बहुत ही सम्मानित करूंगा; किंतु देख लो, याहवेह ने यह सम्मान भी तुमसे दूर ही रखा है."

12 बिलआम ने बालाक को उत्तर दिया, "क्या, मैंने आपके द्वारा भेजे गए दूतों के सामने यह स्पष्ट न किया था,

13 'चाहे बालाक मेरे घर को चांदी-सोने से भर दे, मेरे लिए याहवेह के आदेश के विरुद्ध अपनी ओर से अच्छाई या बुराई करना असंभव होगा. मैं तो वही कहूंगा, जो याहवेह मुझसे कहेंगे'?

Numbers 25:1

14 फिर अब यह सुन लीजिए: मैं अपने लोगों के बीच में लौट
रहा हूं, मैं आपको चेतावनी दूंगा कि भविष्य में ये लोग आपकी
प्रजा के साथ क्या-क्या करने पर हैं.”

15 उसने अपना वचन इस प्रकार शुरू किया: “बेओर के पुत्र
बिलआम की वाणी, उस व्यक्ति की वाणी, जिसे दृष्टि प्रदान
कर दी गई है,

16 उस व्यक्ति की वाणी, जो परमेश्वर का वचन सुनता है, जिसे
उन परम प्रधान के ज्ञान की जानकारी है, जो सर्वशक्तिमान
के दिव्य दर्शन देखता है, वह है तो भूमि पर दंडवत, किंतु
उसकी आंखें खुली हैं:

17 “मैं उन्हें देख अवश्य रहा हूं, किंतु इस समय नहीं; मैं उनकी
ओर दृष्टि तो कर रहा हूं, किंतु वह निकट नहीं है. याकोब से
एक तारा उदय होगा; इस्राएल से एक राजदंड उभरेगा, जो
मोआब के मुंह को कुचल देगा, वह शेत के सभी वंशजों को
फाड़ देगा.

18 एदोम अधीनता में जा पड़ेगा; सेईर भी, जो इसके शत्रु हैं,
अधीन हो जाएंगे.

19 याकोब के घराने में से एक महान अधिकारी हो जाएगा, वही
इस नगर के बचे हुए भाग को नाश कर देगा.”

20 उसने अमालेकियों की ओर दृष्टि की और यह वचन शुरू
किया: “अमालेक उन राष्ट्रों में आगे था, किंतु उसका अंत
विनाश ही है.”

21 इसके बाद बिलआम ने केनियों की ओर अपनी दृष्टि उठाई,
तथा अपना वचन इस प्रकार ज़ारी रखा: “तुम्हारा निवास तो
अति दृढ़ है, तुम्हारा बसेरा चट्टान की सुरक्षा में बसा है;

22 यह होने पर भी केनी उजड़ हो जाएगा; अश्शूर तुम्हें कब
तक बंदी रखेगा?”

23 इसके बाद बिलआम ने अपने वचन में यह कहा: “परमेश्वर
द्वारा ठहराए गए के अलावा जीवित कौन रह सकता है?

24 किंतु जहाज़ कित्तिम तट से आते रहेंगे; वे अश्शूर को
ताड़ना देंगे, एबर को ताड़ना देंगे, इस प्रकार उनका अंत भी
नाश ही होगा.”

25 इसके बाद बिलआम अपने नगर को लौट गया तथा बालाक
भी अपने स्थान पर लौट गया.

Numbers 25:1

1 जब इस्राएली शित्तीम में डेरे डाले हुए थे, तब वे मोआब की
उन युवतियों के साथ कुकर्म करने लगे,

2 जिन्होंने उन्हें देवताओं के लिए बलि अर्पण-उत्सव में
आमंत्रित करना शुरू कर दिया था. इस्राएलियों ने उनके
देवताओं के सामने भोजन करना एवं दंडवत करना शुरू कर
दिया था.

3 इस प्रकार इस्राएलियों ने पेओर के बाल के साथ स्वयं को
जोड़ लिया था. इससे याहवेह इस्राएल पर क्रोधित हो गए.

4 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, “दिन के प्रकाश में याहवेह
के सामने सारी प्रजा के प्रधानों को फांसी दे दो, ताकि इस्राएल
पर से याहवेह का भड़का हुआ क्रोध शांत हो सके.”

5 फिर मोशेह ने इस्राएल के न्यायियों को आदेश दिया, “तुममें
से हर एक अपने-अपने गोत्र के ऐसे हर एक व्यक्ति को मार
डालें, जो पेओर के बाल का भक्त हो चुका है.”

6 उसी समय यह देखा गया: सारी इस्राएली प्रजा एवं मोशेह
के देखते-देखते, जब वे सब मिलनवाले तंबू के द्वार के सामने
रो रहे थे, तब एक इस्राएली व्यक्ति अपने संबंधियों के सामने
एक मिदियानी स्त्री ले आया.

7 जब पुरोहित अहरोन के पौत्र एलिएज़र के पुत्र फिनिहास ने
यह देखा, तब वह सारी सभा के सामने उठा, अपने हाथ में
एक बर्छी ली,

8 उस शिविर के भीतर जाकर उस इस्राएली पुरुष तथा
मिदियानी स्त्री, दोनों को बेध डाला, बर्छी दोनों ही की देह को
बेध कर पार निकल गई. इससे इस्राएल पर आई यह महामारी
थम गई;

9 महामारी से मरने वालों की संख्या 24,000 पहुंच गई.

10 याहवेह ने मोशेह पर यह सत्य प्रकट किया,

11 “पुरोहित अहरोन के पुत्र एलिएज़र के पुत्र फिनिहास ने
इस्राएल के घराने पर भड़के मेरे क्रोध को शांत कर दिया है.
उन लोगों के बीच वही था जिसमें वही जलन थी, जो मुझमें थी.
इसलिए मैंने अपनी जलन में इस्राएल के घराने को नाश नहीं
कर डाला.

12 तुम उसे सूचित करो: यह समझ लो कि मैं उसके साथ
अपनी शांति की वाचा स्थापित कर रहा हूं.

13 इसका संबंध उससे तथा उसके वंशजों से है, यह सदा के
लिए पुरोहित पद की वाचा है, क्योंकि उसमें उसके परमेश्वर
के लिए जलन थी. उसने इस्राएल के घराने के लिए प्रायश्चित
पूरा कर दिया है.”

14 उस इस्राएली व्यक्ति का नाम, जिसको उस मिदियानी स्त्री
के साथ मारा गया था, ज़िमरी था, जिसका पिता सालू था, जो
शिमओन के गोत्र से उनके घराने का प्रधान था.

15 उस मारी गई मिदियानी स्त्री का नाम कोज़बी था, वह ज़ुर
नामक व्यक्ति की पुत्री थी, जो मिदियानी प्रजा में घराने का
प्रधान था.

16 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

17 “मिदियानियों के प्रति शत्रुता बनाए रखो तथा उनका नाश
कर दो.

18 क्योंकि वे तुम्हारे साथ छल करते हुए तुम्हारे शत्रु बने रहे हैं,
इसी के विषय में उन्होंने पेओर की घटना में तुमसे छल किया
तथा कोज़बी, मिदियानी प्रधान की पुत्री के संदर्भ में भी, जो
उनकी जाति की थी, जिसको पेओर की घटना के कारण
महामारी के दिन मारा गया था.”

Numbers 26:1

1 इस महामारी के बाद याहवेह ने मोशेह तथा पुरोहित अहरोन
के पुत्र एलिएज़र को आज्ञा दी,

2 “पितरों के अनुसार बीस वर्ष से अधिक आयु के हर एक
इस्राएली की, जो युद्ध के लिए सक्षम हो, गिनती करो.”

3 फिर मोशेह तथा पुरोहित एलिएज़र ने मोआब के मैदानों में
उन्हें यरदन तट पर, जो येरीख़ो के निकट है, यह आज्ञा दी,

4 “बीस वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों की गिनती की जाए,
जैसा कि याहवेह द्वारा मोशेह को आदेश दिया गया है.” इस
अवसर पर मिस्र देश से निकाले गए इस्राएल वंशज ये थे:

5 इस्राएल का पहलौठा, रियूबेन, रियूबेन के पुत्र हनोख से
हनोखी परिवार; पल्लू से पल्लुई परिवार;

6 हेज़रोन से हेज़रोनी परिवार; कारमी से कारमी परिवार;

7 रियूबेन के परिवार में यह ही परिवार समूह थे, और इनसे जो
गिने गये वे 43,730 थे.

8 पल्लू का पुत्र एलियाब था,

9 एलियाब के तीन पुत्र थे—नमूएल, दाथान और अबीराम.
याद रखो कि दाथान और अबीराम वे दो नेता थे, जो मोशेह
और अहरोन के विरोधी हो गए थे. वे कोराह के अनुयायी थे
और कोराह याहवेह का विरोधी हो गया था.

10 वही समय था जब भूमि विभाजित हो गई थी और कोराह
एवं उसके सभी अनुयायियों को निगल गई थी. कुल दो सौ
पचास पुरुष मर गये थे. यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए
एक संकेत और चेतावनी थी.

11 किंतु कोराह के सारे वंशज नहीं मरे.

12 शिमओन के गोत्र के ये परिवार थे: नमूएल से नमूएल के
परिवार; यामिन से यामिन परिवार; याकिन से याकिन
परिवार;

13 ज़ेराह से जेराही परिवार; शाऊल से शाऊल परिवार.

14 शिमओन के परिवार समूह में वे परिवार थे; इसमें कुल
22,200 पुरुष थे.

15 गाद के परिवार समूह के ये परिवार हैं: ज़ेफोन से ज़ेफोन
परिवार; हग्गी से हग्गी परिवार; शूनी से शूनी परिवार;

16 ओजनी से ओजनी परिवार; एरी से एरी परिवार;

17 अरोद से अरोद परिवार; अरेली से अरेली परिवार;

18 गाद के परिवार समहू के वे परिवार थे; इनमें कुल 40,500
पुरुष थे.

19 यहूदाह के दो पुत्र एर और ओनान, कनान में मर गए थे.

20 यहूदाह के परिवार समूह के ये परिवार हैं: शेलाह से शेलाह
परिवार; पेरेज़ से पेरेज़ परिवार; ज़ेराह से ज़ेराह परिवार;

21 पेरेज़ के ये परिवार हैं: हेज़रोन से हेज़रोनी परिवार; हामुल
से हामूली परिवार.

22 यहूदाह के परिवार समूह के वे परिवार थे. इनके कुल पुरुषों
की संख्या 76,500 थी.

23 इस्साखार के परिवार समूह के परिवार ये थे: तोला से तोला
परिवार; पुव्वाह से पुव्वा परिवार;

24 याशूब से याशूब परिवार; शिम्रोन से शिम्रोन परिवार;

25 इस्साखार के परिवार समूह के वे परिवार थे; इनमें कुल
पुरुषों की संख्या 64,300 थी.

26 ज़ेबुलून के परिवार समूह के परिवार ये थे: सेरेद से सेरेद
परिवार; एलोन से एलोन परिवार; याहलील से याहलील
परिवार;

27 ज़ेबुलून के परिवार समूह के वे परिवार थे; इनमें कुल पुरुषों
की संख्या 60,500 थी.

28 योसेफ़ के दो पुत्र मनश्शेह और एफ्राईम थे. हर एक पुत्र
अपने परिवारों के साथ परिवार समूह बन गया था.

29 मनश्शेह के परिवार में ये थे: माखीर से माखीर परिवार
(माखीर गिलआद का पिता था); गिलआद से गिलआद
परिवार;

30 गिलआद के परिवार ये थे: ईएजेर से ईएजेर परिवार; हेलेक
से हेलेकी परिवार;

31 अस्रीएल से अस्रीएल परिवार; शेकेम से शेकेमी परिवार;

32 शेमीदा से शेमीदा परिवार; हेफेर से हेफेर परिवार;

33 (हेफेर का पुत्र ज़लोफेहाद था. किंतु उसका कोई पुत्र न था;
केवल पुत्री थी. उसकी पुत्रियों के नाम महलाह, नोआ,
होगलाह, मिलकाह, और तिरज़ाह थे.)

34 मनश्शेह परिवार समूह के ये परिवार हैं; इनमें कुल पुरुष
52,700 थे.

35 एफ्राईम के परिवार समूह के ये परिवार थे: शूतेलाह से
शूतेलाही परिवार; बेकेर से बेकेरी परिवार; तहान से तहानी
परिवार;

36 एरान शूतेलाह परिवार का था: उसका परिवार एरनी था.

37 एफ्राईम के परिवार समूह में ये परिवार थे; कुल पुरुषों की
संख्या इसमें 32,500 थी. वे ऐसे सभी लोग हैं जो योसेफ़ के
परिवार समूहों के हैं.

38 बिन्यामिन के परिवार समूह के परिवार ये थे: बेला से बेला
परिवार; अशबेल से अशबेली परिवार; अहीराम से अहीरामी
परिवार;

39 शपूआमि से शपूआमि परिवार; हूपाम से हूपामी परिवार.

40 बेला के परिवार में अर्द और नामान थे: अर्द से अर्दी परिवार; नामान से नामानी परिवार;

41 बिन्यामिन के परिवार समूह के ये सभी परिवार थे; इसमें पुरुषों की कुल संख्या 45,600 थी.

42 दान के परिवार समूह में ये परिवार थे: शूहाम से शूहाम परिवार समूह. दान के परिवार समूह से वह परिवार समूह था:

43 शूहाम परिवार समूह में बहुत से परिवार थे. इनमें पुरुषों की कुल संख्या 64,400 थी.

44 आशेर के परिवार समूह के ये परिवार हैं: इमनाह से इम्नी परिवार; इशवी से इशवी परिवार; बेरियाह से बेरिय परिवार;

45 बेरियाह के ये परिवार हैं: हेबेर से हेबेरी परिवार; मालखिएल से मालखिएल परिवार.

46 आशेर की एक पुत्री सेराह नाम की थी.

47 आशेर के परिवार समूह में वे परिवार थे; इसमें पुरुषों की संख्या 53,400 थी.

48 नफताली के परिवार समूह के ये परिवार थे: यहसेल, जिससे यहसेली परिवार; गूनी, जिससे गूनी परिवार;

49 येसेर, जिससे येसेरी परिवार; शिल्लेम, जिससे शिल्लेमी परिवार.

50 नफताली के परिवार समूह के ये परिवार थे. इसमें पुरुषों की कुल संख्या 45,400 थी.

51 इस प्रकार इस्राएल के पुरुषों की कुल संख्या 6,01,730 थी.

52 याहवेह ने मोशेह से कहा,

53 “हर एक परिवार समूह के लिये, जिन्हें गिना गया है, मीरास में पर्याप्त भूमि दी जाएगी.

54 बड़ा परिवार समूह अधिक भूमि पाएगा, और छोटा परिवार समूह कम भूमि पाएगा. किंतु हर एक परिवार समूह को भूमि मिलेगी जिसके लिए मैंने वचन दिया है, और जो भूमि वे पाएंगे वह उनकी गिनी गई संख्या के बराबर होगी.

55 हर एक परिवार समूह को लाटरी के आधार पर निश्चय करके धरती दी जाएगी और उस प्रदेश का वही नाम होगा जो उस परिवार समूह का होगा.

56 वह प्रदेश बड़े और छोटे परिवार समूहों को पासे फेंककर मीरास बांट दिया जाएगा.”

57 लेवी का परिवार समूह भी गिना गया. लेवी के परिवार समूह के ये परिवार हैं: गेरशोन से गेरशोनी परिवार; कोहाथ से कोहाथ परिवार; मेरारी से मेरारी परिवार.

58 लेवी के परिवार समूह से ये परिवार भी थे: लिबनी परिवार, हेब्रोनी परिवार, माहली परिवार, मूशी परिवार, कोहाथ परिवार, (अमराम कहात के परिवार समूह का था;

59 अमराम की पत्नी का नाम योकेबेद था. वह भी लेवी के परिवार समूह की थी. उसका जन्म मिस्र में हुआ था. अमराम और योकेबेद के दो पुत्र अहरोन और मोशेह थे. उनकी एक पुत्री मिरियम भी थी.

60 नादाब, अबीहू, एलिएज़र तथा इथामार का पिता था अहरोन.

61 किंतु नादाब और अबीहू मर गए; क्योंकि उन्होंने याहवेह को उस आग से भेंट चढ़ाई जो उनके लिए स्वीकृत नहीं थी.)

62 लेवी परिवार समूह के सभी पुरुषों की संख्या 23,000 थी. किंतु ये लोग इस्राएल के अन्य लोगों के साथ नहीं गिने गए थे. वे भूमि नहीं पा सके, जिसे अन्य लोगों को देने का वचन याहवेह ने दिया था.

63 मोशेह और पुरोहित एलिएज़र ने इन सभी लोगों को गिना.
उन्होंने इस्राएल के लोगों को मोआब के मैदान में गिना. यह
येरीख़ो से यरदन नदी के पार था.

64 बहुत समय पहले, मोशेह और पुरोहित अहरोन ने इस्राएल
के लोगों को सीनायी मरुभूमि में गिना था. किंतु वे सभी लोग
मर चुके थे. मोआब के मैदान में मोशेह ने जिन लोगों को गिना,
वे पहले गिने गए लोगों से भिन्न थे.

65 यह इसलिये हुआ कि याहवेह ने इस्राएल के लोगों से यह
कहा था कि वे सभी मरुभूमि में मरेंगे. जो केवल दो जीवित
बचे थे; येफुन्नेह का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू!

Numbers 27:1

1 तब योसेफ़ के पुत्र मनश्शेह के परिवार से माखीर के पुत्र
गिलआद के पुत्र हेफेर के पुत्र ज़लोफेहाद की पुत्रियां, जिनके
नाम महलाह, नोहा, होगलाह, मिलकाह तथा तिरज़ाह थे,

2 मोशेह, एलिएज़र तथा प्रधानों एवं सारी सभा की उपस्थिति
में मिलनवाले तंबू के द्वार पर एकत्र हुईं. उन्होंने यह विनती
की,

3 "हमारे पिता की मृत्यु तो बंजर भूमि में ही हो चुकी थी. वह
उनमें शामिल नहीं थे, जो कोराह के साथ मिलकर याहवेह के
विरुद्ध हो गए थे, उनकी मृत्यु उन्हीं के पाप में हो गई. उनके
कोई पुत्र न था.

4 उनके कोई पुत्र न होने के कारण भला उनके परिवार में से
उनका नाम क्यों मिट जाए? कृपया हमारे भाइयों के बीच में
से हमें एक भाग दिया जाए."

5 फिर मोशेह ने यह विषय याहवेह के सामने रख दिया,

6 तब याहवेह ने मोशेह को यह उत्तर दिया,

7 "ज़लोफेहाद की पुत्रियों ने सुसंगत विषय प्रस्तुत किए हैं.
ज़रूरी है कि तुम उन्हें उनके पिता के भाइयों के बीच में एक
मीरास का अंश प्रदान करो. तुम उनके पिता की मीरास उनके
नाम लिख दोगे.

8 "तुम इस्राएल के घराने को यह भी सूचित करोगे, 'यदि किसी
ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाए, जिसके कोई पुत्र ही नहीं है, तब
उसकी मीरास उसकी पुत्री के नाम कर देना.

9 यदि उसके कोई पुत्री भी न हो, तब तुम उसकी मीरास
उसके भाइयों के नाम कर दोगे.

10 यदि उसके कोई भाई भी नहीं हो, तब तुम उसके पिता के
भाइयों को उसकी मीरास प्रदान कर दोगे.

11 यदि उसके पिता के कोई भाई भी न हो, तब तुम उसकी
मीरास उसके परिवार में उसके ही निकटतम संबंधी को
प्रदान कर दोगे, वह मीरास उसकी हो जाएगी. यह इस्राएल
के घराने के लिए न्याय की विधि होगी, ठीक जैसा आदेश
याहवेह द्वारा मोशेह को दिया गया था.' "

12 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, "तुम इस
अबारिम पर्वत पर जाओ और उस देश पर दृष्टि डाल लो, जो
मैंने इस्राएल के घराने को दे दिया है.

13 जब तुम इस देश को देख लोगे, तुम भी अपने भाई अहरोन
के समान अपने लोगों में मिला लिए जाओगे,

14 इसलिये, कि तुमने ज़िन के निर्जन प्रदेश में उस सोते के
पास सारी सभा के सामने उनके द्वारा पैदा की गई विद्रोह की
स्थिति में मेरी पवित्रता को प्रतिष्ठित करने के मेरे आदेश के
विपरीत तुमने काम किया था." (कादेश के ज़िन के निर्जन
प्रदेश में यही था वह मेरिबाह का सोता.)

15 फिर मोशेह ने याहवेह से विनती की,

16 "सभी मनुष्यों की आत्माओं के परमेश्वर, याहवेह, इस सभा
के लिए एक अगुए को नियुक्त कर दें.

17 वही उनके हक में सही रहेगा. वही उनका अगुआ होकर
इस देश में प्रवेश करवाएगा, जिससे याहवेह की प्रजा की
स्थिति वैसी न हो जाए, जैसी बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों
की हो जाती है."

18 मोशेह के लिए याहवेह का उत्तर यह था, "नून के पुत्र यहोशू पर अपना हाथ रख दो-वह एक ऐसा व्यक्ति है, जिसमें पवित्र आत्मा का वास है.

19 उसे पुरोहित एलिएज़र तथा सारी सभा के सामने खड़ा करना और उन सबके सामने उसे नियुक्त करना.

20 अपने अधिकार का एक भाग तुम उस पर दे देना, कि इस्राएल के घराने की सारी सभा में उसके प्रति आज्ञाकारिता की भावना भर जाए.

21 इसके अलावा, वह पुरोहित एलिएज़र पर निर्भर रहेगा, कि एलिएज़र उरीम के द्वारा उसके लिए याहवेह की इच्छा मालूम किया करेगा. उसी के आदेश पर वे कूच करेंगे, उसी की आज्ञा पर वे प्रवेश कर सकेंगे, दोनों ही स्वयं वह तथा इस्राएली, अर्थात् सारी सभा."

22 मोशेह ने याहवेह की आज्ञा का पूरा-पूरा पालन किया. उन्होंने यहोशू को अपने साथ ले जाकर पुरोहित एलिएज़र तथा सारी सभा के सामने खड़ा कर दिया.

23 तब मोशेह ने योशुआ पर अपने हाथ रखे और उसे उत्तराधिकारी नियुक्त किया, ठीक जैसी आज्ञा उन्हें याहवेह से प्राप्त हुई थी.

Numbers 28:1

1 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 "इस्राएल के घराने को यह आज्ञा दे दो: 'मुझे भेंट चढ़ाने के लिए तुम सावधान रहोगे, ठीक समय पर आग द्वारा चढ़ाया मेरा भोजन, एक सुखद-सुगंध.'

3 तुम उन्हें यह साफ़-साफ़ कहोगे: यह वह भेंट है, जो तुम याहवेह को आग के माध्यम से भेंट करोगे: एक वर्ष के दो मेमने, जो दोषहीन होने अवश्य हैं, जिन्हें तुम प्रतिदिन नियमित होमबलि में भेंट करोगे.

4 तुम एक मेमना भोर को, तथा दूसरा शाम के समय में;

5 इसके अलावा अन्नबलि के लिए डेढ़ किलो मैदा, जिसे पेरकर निकाले गए एक लीटर तेल में मिलाया गया हो.

6 यह सीनायी पर्वत पर एक सुखद-सुगंध के लिए ठहराया गया था, कि यह याहवेह के लिए एक भेंट हो जाए.

7 इसके बाद पेय बलि के लिए, हर एक मेमने के साथ एक लीटर दाखमधु होगी. तुम पवित्र स्थान में याहवेह के लिए बलि उंडेल दोगे.

8 वह अन्य मेमना तुम शाम के समय में भेंट करोगे. इसकी विधि ठीक वैसी ही होगी, जैसी सुबह की अन्नबलि की थी. तथा उसी प्रकार जैसी पेय बलि की थी. तुम इसे आग में भेंट करोगे, जो याहवेह के लिए सुखद-सुगंध होगी.

9 " 'इसके बाद शब्बाथ पर याहवेह के लिए होमबलि में एक वर्ष के, दोष रहित दो मेमने भेंट किए जाएं, तथा अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ तीन किलो मैदा तथा इसकी पेय बलि.

10 यह नियमित रूप से भेंट की जाती होमबलि एवं इसकी पेय बलि के अलावा हर शब्बाथ के लिए ठहराई गई होमबलि होगी.

11 " 'फिर तुम्हारे हर एक महीने की शुरुआत में तुम याहवेह के लिए यह होमबलि भेंट करोगे: दो बछड़े एवं बैल, दोषहीन एक-एक वर्ष के सात मेमने,

12 तथा हर एक बैल के साथ अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ पांच किलो मैदा; तथा हर एक बछड़े के साथ अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ तीन किलो मैदा,

13 हर एक मेमने के साथ तेल मिला हुआ डेढ़ किलो मैदा अन्नबलि के लिए, होमबलि के लिए ये आग के द्वारा याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए भेंट किए जाएं.

14 इनके लिए भेंट की जाने के लिए पेय बलि होगी, एक बछड़े के साथ तीन लीटर दाखमधु, मेढ़े के साथ दो लीटर दाखमधु तथा एक मेमने के साथ एक लीटर दाखमधु. यह पूरे वर्ष के हर एक माह में भेंट की जाने के लिए निर्धारित बलियां हैं.

15 याहवेह के लिए पापबलि होगी एक बकरा, जिसे नियमित होमबलि के अलावा इसकी पेय बलि के साथ भेंट किया जाएगा.

16 “ ‘इसके बाद पहले महीने की चौदहवीं तारीख पर याहवेह का फ़सह होगा.

17 इस माह के चौदहवें दिन उत्सव होगा. सात दिन खमीर रहित रोटी को ही खाया जाएगा.

18 पहले दिन पवित्र सभा होगी; तथा तुम किसी भी प्रकार की मेहनत न करना.

19 उस दिन तुम याहवेह के लिए आग के द्वारा बलि भेंट होमार्पण चढ़ाना. उसमें ये भी शामिल हों: दो बछड़े, एक मेढ़ा तथा एक वर्ष के सात निर्दोष मेमने.

20 उनका अन्नबलि हर एक बैल के साथ तेल मिला हुआ पांच किलो मैदा; तथा हर एक मेढ़े के साथ अन्नबलि के लिए तेल मिला हुआ तीन किलो मैदा,

21 हर एक मेमने के साथ तेल में मिला हुआ डेढ़ किलो मैदा अन्नबलि के लिए.

22 इसके अलावा अपने प्रायश्चित के लिए पापबलि स्वरूप एक बकरा.

23 तुम ये सभी बलियां नियमित प्रस्तुत की जा रही भोर की होमबलियों के अलावा भेंट करोगे.

24 तुम सातों दिन, प्रतिदिन इसी रीति से बलियां भेंट किया करोगे; आग के द्वारा चढ़ाया वह भोजन, जो याहवेह के लिए सुखद-सुगंध होगा. यह नियमित होमबलि के अलावा इसकी पेय बलि के साथ भेंट किया जाएगा.

25 तथा सातवें दिन पवित्र सभा होगी, इस दिन तुम किसी भी प्रकार की मेहनत न करना.

26 “ ‘पहले फल के दिन भी, जब तुम अपने सप्ताहों के उत्सव में याहवेह को नई अन्नबलि भेंट करोगे, तब तुम पवित्र सभा करोगे. तुम कोई मेहनत न करोगे.

27 तुम याहवेह को सुखद-सुगंध के लिए यह होमबलि भेंट करोगे: दो बछड़े, एक मेढ़ा एक वर्ष के सात मेमने;

28 उनकी अन्नबलि होगी, हर एक बछड़े के साथ तेल मिला हुआ अढ़ाई किलो मैदा तथा हर एक मेढ़े के साथ दो किलो

29 तथा हर एक मेमने के साथ एक किलो तेल मिला हुआ मैदा.

30 इसके अलावा अपने प्रायश्चित के लिए एक बकरा.

31 नियमित होमबलि एवं इससे संबंधित अन्नबलि के अलावा तुम उन्हें उनकी पेय बलि के साथ भेंट करोगे. ज़रूरी है कि ये निर्दोष हों.

Numbers 29:1

1 “ ‘पहले महीने की पहली तारीख पर तुम पवित्र सभा आयोजित करोगे. इस दिन तुम कोई भी मेहनत न करोगे. यह वह दिन होगा, जिसे तुम तुरही बजाने के लिए प्रयोग करोगे.

2 तुम याहवेह को सुखद-सुगंध भेंट करने के लिए यह होमबलि भेंट करोगे: एक बछड़ा, एक मेढ़ा तथा सात एक वर्ष के निर्दोष मेमने.

3 इनके अलावा उनकी अन्नबलि भी; तेल मिला हुआ मैदा; बछड़ों के साथ ढाई किलो, मेढ़े के साथ दो किलो;

4 तथा हर एक मेमने के साथ एक-एक किलो तेल मिला हुआ मैदा,

5 साथ में अपने प्रायश्चित के लिए पापबलि में एक बकरा.

6 नए चांद के लिए होमबलि तथा इससे संबंधित अन्नबलि के लिए नियमित होमबलि तथा अन्नबलि तथा उससे संबंधित पेय बलियां, जैसा उनके विषय में याहवेह ने आज्ञा दी थी, वैसे भेंट किए जाएं.

7 “ ‘इसी महीने की दसवीं तारीख पर तुम एक पवित्र सभा
आयोजित करोगे; तुम स्वयं को नम्र करोगे, तुम किसी प्रकार
की मेहनत नहीं करोगे.

8 सुखद-सुगंध के लिए तुम याहवेह के लिए यह होमबलि भेंट
करोगे: एक बछड़ा, एक मेढ़ा तथा एक वर्ष के सात निर्दोष
मेमने.

9 उनके साथ अन्नबलि होगी: तेल मिला हुआ मैदा; बछड़े के
साथ ढाई किलो, मेढ़े के साथ दो किलो;

10 तथा हर एक मेमने के साथ एक-एक किलो मैदा.

11 प्रायश्चित के लिए पापबलि, नियमित होमबलि तथा
अन्नबलि एवं पेय बलियां के अलावा पापबलि के लिए एक
बकरा भी भेंट किया जाए.

12 “ ‘इसके बाद सातवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख पर तुम एक
पवित्र सभा आयोजित करोगे. तुम इसमें कोई भी मेहनत न
करोगे, और याहवेह के लिए सात दिन उत्सव मनाओगे.

13 तुम याहवेह के लिए सुखद-सुगंध के लिए आग के द्वारा यह
होमबलि भेंट करो: तेरह बछड़े, दो मेढ़े, चौदह एक वर्ष के
निर्दोष मेमने.

14 उन तेरह बछड़ों के साथ यह अन्नबलि होगी: तेल मिला
हुआ मैदा ढाई किलो, मेढ़े के साथ तेल मिला हुआ मैदा दो
किलो,

15 तथा हर एक मेमने के साथ एक-एक किलो तेल मिला हुआ
मैदा.

16 नियमित होमबलि, अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा
पापबलि के लिए एक बकरा भेंट किया जाए.

17 “ ‘इसके बाद अगले दिन पशुओं में से बारह बछड़े, दो मेढ़े,
एक वर्ष के चौदह निर्दोष मेमने.

18 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना; जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के लिए उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो.

19 तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि के लिए एक
बकरा तथा इसके साथ अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां.

20 “ ‘तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह
निर्दोष मेमने.

21 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो.

22 तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि के लिए एक
बकरा तथा इसके लिए अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां.

23 “ ‘चौथे दिन दस बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष
मेमने.

24 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो.

25 नियमित होमबलि, अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा
पापबलि के लिए एक बकरा भेंट किया जाए.

26 “ ‘पांचवें दिन नौ बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष
मेमने.

27 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो.

28 नियमित होमबलि तथा अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा
एक बकरा पापबलि के लिए चढ़ाया जाएगा.

29 “ ‘छठवें दिन आठ बछड़े, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष
मेमने.

30 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो.

31 तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि के लिए एक
बकरा तथा इसके लिए अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां.

32 " 'सातवें दिन सात बछड़े दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष
मेमने.

33 इनके अलावा अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना जो बछड़ों,
मेढ़ों तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुरूप, नियम के
अनुसार हो.

34 तथा नियमित होमबलि के अलावा पापबलि के लिए एक
बकरा तथा इसके लिए अन्नबलि तथा उनकी पेय बलियां.

35 " 'आठवें दिन तुम एक पवित्र सभा आयोजित करोगे. इस
दिन तुम कोई भी मेहनत न करोगे.

36 किंतु तुम होमबलि, आग के द्वारा भेंट बलि चढ़ाओगे, जो
याहवेह के लिए सुखद-सुगंध होगी: एक बछड़ा, एक मेढ़ा,
एक वर्ष के, निर्दोष सात मेमने.

37 बछड़े, मेढ़े तथा मेमनों के साथ उनकी संख्या के अनुसार
उनकी अन्नबलि तथा उनकी पेय बलि.

38 नियमित होमबलि तथा अन्नबलि तथा पेय बलि के अलावा
एक बकरा पापबलि के लिए चढ़ाया जाएगा.

39 " 'ठहराए गए अवसरों पर तुम ये सब याहवेह के सामने
प्रस्तुत करोगे. तुम्हारी संकल्प की गई तथा स्वेच्छा बलियों के
अलावा तुम्हारी होमबलियां, अग्निबलियां, पेय बलियां तथा मेल
बलियां भी चढ़ाना होंगे.' "

40 मोशेह ने यह सब याहवेह द्वारा उन्हें दी गई आज्ञा के
अनुसार इस्राएल के घराने पर प्रकट कर दिया.

Numbers 30:1

1 इसके बाद मोशेह इस्राएलियों के गोत्रों के प्रधानों के सामने
आए और उन्होंने उनसे कहा: "याहवेह द्वारा दी गई आज्ञा यह
है:

2 यदि कोई व्यक्ति याहवेह के लिए कोई संकल्प लेता है,
अथवा वह स्वयं को शपथ लेकर किसी ज़रूरी वाचा से बांध
लेता है, वह अपनी शपथ को नहीं तोड़ेगा. वह अपने मुख से
बोले हुए वचनों के अनुसार करेगा.

3 "यदि कोई स्त्री याहवेह के लिए संकल्प करती है, वह
युवावस्था में अपने पिता के घर में ही निवास करते हुए स्वयं
को ज़रूरी वाचा में बांध लेती है,

4 और उसका पिता उसके इस संकल्प और वाचा को सुन
लेता है, जिसमें उसने स्वयं को बांध लिया है. उसके पिता को
इस विषय में कोई आपत्ति नहीं होती, तब उसके सारे संकल्प
मान्य रहेंगे, तथा वे सारी वाचाएं स्थायी हो जाएंगी.

5 किंतु यदि उसका पिता इन संकल्पों को सुनकर उन्हें मना
कर देता है, जैसे ही वह इन संकल्पों की सुनता है, उसका कोई
भी संकल्प, जिसे उसने वाचा में बांधकर रखा है, प्रभावी न रह
जाएगा; याहवेह भी उसे क्षमा कर देंगे क्योंकि उसके पिता ने
उसे इनके विषय में मना कर दिया था.

6 "फिर भी, यदि उसके द्वारा लिया गया संकल्प एवं सोच-
विचार बिना कहे गए वचन में सीमित स्थिति में ही उसे विवाह
करना पड़ जाता है,

7 और उसके पति को इस बात का पता चल जाता है, किंतु
उस अवसर पर यह सुनने पर भी उसकी ओर से कोई
प्रतिक्रिया नहीं होती है, तब उसके द्वारा किए गए संकल्प तथा
वाचा स्थिर बने रहेंगे, जिनमें उसने स्वयं को बांधा हुआ है.

8 किंतु यदि उस अवसर पर उसके पति को इसका पता चल
जाता है, वह अपनी पत्नी को इस विषय में मना कर देता है,
तब वह अपनी पत्नी के संकल्प को खत्म कर देगा, जिसमें
उसने स्वयं को बांध लिया था, जो उसके द्वारा बिना सोचे समझे
कहा गया वचन था. याहवेह उसे इस विषय में क्षमा कर देंगे.

[9] "किंतु, यदि संकल्प किसी विधवा या किसी तलाकशुदा स्त्री द्वारा किया गया है, तो उसने जितने भी संकल्पों और मन्नतों में बांधी हुई रहेगी,

[10] "किंतु यदि वह विवाहित स्थिति में अपने पति के आवास में ही है, और उसने संकल्प किए है, शपथ ली हुईं है,

[11] और उसके पति को इसका पता चल चुका है, किंतु उसने इस पर उससे कुछ भी नहीं किया, उसने उसे इस विषय में कुछ मना भी नहीं किया, तब उसके सारे संकल्प सदा बने रहेंगे, तथा उसकी वे सभी वाचाएं जिनमें उसने स्वयं को बांधकर रखा था, सदा बने रहेंगे.

[12] किंतु यदि उसका पति इन्हें सुनते ही इन्हें खत्म कर देता है, तब उस स्त्री के द्वारा लिया गया संकल्प एवं उसके द्वारा स्वयं पर लगाई हुई वाचा खत्म हो जाएंगी; उसके पति द्वारा वे खत्म कर दिए गए हैं. याहवेह उन्हें क्षमा कर देंगे.

[13] हर एक संकल्प तथा हर एक वाचा जो उसने स्वयं को विनम्र रखने के लिए शुरू की है, उसके पति के द्वारा सदा के लिए रखा जा सकता है, या खत्म किया जा सकता है.

[14] किंतु यदि वास्तव में उसका पति दैनिक जीवन में इसका वर्णन ही नहीं करता है, तब इसके द्वारा पति अपनी पत्नी से किए गए संकल्पों एवं वाचाओं की पुष्टि करता है, जो उसने जवाबदारी के रूप में स्वयं पर लागू किए हुए हैं. उसने इस विषय का ज्ञान होने पर भी अपनी कोई भी प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की है. इसलिये यह उसके द्वारा की गई पुष्टि होगी.

[15] किंतु यदि उसने यह सुनने के बाद, इन्हें तोड़ दिया हो, तो वही अपनी पत्नी के दोष का भार उठाएगा."

[16] ये वे विधियां हैं, जो याहवेह द्वारा मोशेह को दी गई हैं, जिनका संबंध पति-पत्नी के पारस्परिक संबंध से, तथा पिता-पुत्री के पारस्परिक संबंध से है, जब पुत्री युवावस्था तक पिता के घर पर रह रही होती है.

Numbers 31:1

[1] फिर मोशेह के लिए याहवेह का आज्ञा थी,

[2] "मिदियानियों से इस्राएलियों का पूरा बदला ले डालो, इसके बाद तुम अपने पूर्वजों में मिला लिए जाओगे."

[3] मोशेह ने लोगों को आज्ञा दी, "अपने बीच लोगों को युद्ध के लिए तैयार करो, कि वे मिदियान पर आक्रमण कर मिदियान पर याहवेह का बदला पूरा करें.

[4] इस्राएल के सारे गोत्रों से हर एक कुल में से एक-एक हज़ार को तुम युद्ध के लिए भेजोगे."

[5] इसलिये सारी इस्राएली प्रजा में से हर एक गोत्र से एक-एक हज़ार योद्धा भर्ती किए गए; बारह हज़ार युद्ध के लिए तैयार योद्धा.

[6] मोशेह ने इन्हें हर एक गोत्र से एक-एक हज़ार योद्धा को युद्ध के लिए भेज दिया. पुरोहित एलिएज़र का पुत्र फिनिहास युद्ध के लिए इनके साथ था. वह अपने हाथ में पवित्र पात्र एवं तुरहियां लिए हुए था कि इनसे चेतावनी नाद किया जा सके.

[7] उन्होंने याहवेह द्वारा मोशेह को दिखाए गए आदेश के अनुसार मिदियान पर आक्रमण कर दिया तथा हर एक पुरुष की हत्या कर दी.

[8] उन्होंने अन्य लोगों के साथ मिदियान के इन पांच राजाओं का भी वध कर दिया: एवी, रेकेम, ज़ुर, हूर, तथा रेबा. इनके अलावा इस्राएलियों ने बेओर के पुत्र बिलआम का वध भी तलवार से कर दिया.

[9] इस्राएलियों ने मिदियानी स्त्रियों एवं बालकों को तथा पशुओं एवं भेड़ों को बंदी बनाकर उनकी सारी सामग्री लूट ली.

[10] इसके बाद उन्होंने उनके द्वारा बसाए गए सभी नगरों को जला दिया तथा उनके शिविरों को आग में झोंक दिया.

[11] तब उन्होंने लूट की सारी सामग्री, सारे बंदी मनुष्यों तथा पशुओं को ले जाकर

[12] मोशेह, पुरोहित एलिएज़र तथा इस्राएलियों की सारी सभा के सामने इन बंदियों, पशुओं तथा लूट की सामग्री को प्रस्तुत

कर दिया. वे इस अवसर पर मोआब के मैदानों में डेरे डाले हुए थे, जो येरीख़ो के सामने यरदन नदी के तट पर हैं.

13 उनसे भेंट करने के उद्देश्य से मोशेह, पुरोहित एलिएज़र तथा सभा के सारे प्रधान शिविर के बाहर निकल आए.

14 मोशेह सैन्य अधिकारियों से अप्रसन्न थे—वे जो हज़ारों पर तथा सैकड़ों पर नियुक्त किए गए थे—जो युद्ध से लौट रहे थे.

15 मोशेह ने उनसे प्रश्न किया, “क्या तुमने सभी स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया है?

16 ये ही तो थीं वे, जिन्होंने पेओर में बिलआम की सलाह पर इस्राएलियों को याहवेह के विरुद्ध बलवा के लिए उकसाया था, जिसके कारण याहवेह की सभा में महामारी फैल गई थीं.

17 इसलिये अब हर एक बालक का वध कर डालो तथा हर एक विवाहित स्त्री का भी.

18 हां, उन कन्याओं को अपने लिए जीवित छोड़ देना, जिनका किसी पुरुष से यौन संपर्क नहीं हुआ है.

19 “सात दिन शिविर के बाहर डेरा डालना ज़रूरी है. जिस किसी ने किसी व्यक्ति का वध किया है, जिस किसी ने किसी मरे हुए व्यक्ति को छुआ है, स्वयं को तथा अपने बंदियों को तीसरे एवं सातवें दिन पवित्र करे.

20 तुम स्वयं को, हर एक वस्त्र को, हर एक चमड़े की वस्तु को, बकरे के रोम से बनी वस्तुओं को तथा लकड़ी की सभी वस्तुओं को पवित्र करोगे.”

21 फिर पुरोहित एलिएज़र ने उन्हें जो युद्ध कर लौटे थे, संबोधित करते हुए कहा, “याहवेह द्वारा मोशेह को दी गई आज्ञा यह है:

22 सिर्फ सोना, चांदी, कांसा, लोहा, रांगा तथा सीसा,

23 हर एक वस्तु, जिसे आग में से होकर निकाला जा सकता है, तुम आग में से निकालोगे कि वह शुद्ध हो जाए, किंतु जो वस्तु आग में से निकाली नहीं जा सकती, उनको पवित्र करने के लिए तुम इन्हें जल से शुद्ध करोगे.

24 पवित्र करने के लिए तुम सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोओगे, इसके बाद तुम शिविरों में प्रवेश कर सकते हो.”

25 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

26 “तुम, पुरोहित एलिएज़र तथा प्रजा में गोत्रों के प्रधान सारे लूट के सामान की गिनती करें, चाहे ये मनुष्य हों अथवा पशु.

27 तब सारी लूट की सामग्री का बंटवारा युद्ध में गए योद्धाओं तथा सारी सभा के बीच कर दिया जाए.

28 योद्धाओं पर याहवेह के लिए कर ठहराया जाए, जो युद्ध में गए थे, पांच सौ व्यक्तियों तथा पशुओं, गधों तथा भेड़ों के लिए एक-एक प्राणी अलग रखते जाना.

29 इसे उनके आधे भाग के दसवें अंश से लेकर याहवेह को चढ़ाने के उद्देश्य से पुरोहित एलिएज़र को दे देना.

30 इस्राएलियों के आधे भाग के दसवें अंश से हर एक पचास व्यक्तियों, पशुओं, गधों, भेड़ों, सभी पशुओं में से एक-एक लेकर उन लेवियों को सौंप देना, जो याहवेह के साक्षी तंबू के अधिकारी हैं.”

31 मोशेह तथा पुरोहित एलिएज़र ने मोशेह को दी गई याहवेह की आज्ञा का पूरा-पूरा पालन किया.

32 सैनिकों द्वारा लूटी गई सामग्री में से शेष यह था: 6,75,000 भेड़ें,

33 72,000 पशु,

34 61,000 गधे

35 तथा 32,000 स्त्रियां जिनका किसी पुरुष से यौन संपर्क नहीं हुआ था.

36 वे, जो युद्ध पर गए थे, उनके आधे का दसवां अंश इस प्रकार था: भेड़ों की संख्या 3,37,500,

37 इनमें से याहवेह के लिए निकाली भेड़ें 675;

38 पशुओं की संख्या 36,000 जिनमें से याहवेह का भाग था 72;

39 गधों की संख्या 30,500 थी, जिनमें याहवेह का भाग था 61;

40 इनमें मनुष्य प्राणी थे 16,000, जिनमें याहवेह का ठहराया गया भाग था 32.

41 मोशेह ने पुरोहित एलिएज़र को याहवेह के लिए ठहराया भाग सौंप दिया, ठीक जैसी याहवेह की आज्ञा थी.

42 मोशेह ने जिन इस्राएलियों को, जो युद्ध से लौटे थे, उनके आधे भाग के दसवें अंश के संबंध में:

43 सारी इस्राएली सभा के आधे भाग का दसवां अंश था 3,37,500 भेड़ें,

44 36,000 पशु,

45 30,500 गधे

46 तथा मानव प्राणी थे 16,000.

47 तथा इस्राएलियों के आधे भाग के दसवें अंश में से, मोशेह ने हर एक पचास में से, चाहे मनुष्य हों अथवा पशु, लेकर उन लेवियों को सौंप दिया, जो याहवेह के साक्षी तंबू के अधिकारी थे, ठीक जैसा मोशेह को याहवेह ने आज्ञा दी थी.

48 फिर वे अधिकारी—हज़ारों के सेनापति, सैकड़ों के प्रधान—मोशेह के पास आए.

49 उन्होंने मोशेह से विनती की, "आपके सेवकों ने हमें सौंपे गए योद्धाओं की गिनती कर ली है. कोई भी व्यक्ति छूट नहीं रहा.

50 इसलिये हममें से हर एक व्यक्ति याहवेह को भेंट करने के लिए सोने के गहने-बाजूबंद, कंगन, अंगूठियां, कर्णफूल, गले के हार लेकर आया है, जैसा जैसा जिसे प्राप्त हुआ है कि हम याहवेह के सामने अपने लिए प्रायश्चित कर सकें."

51 मोशेह तथा पुरोहित एलिएज़र ने उनसे ये सोने के गहने इकट्ठे कर लिए, जो उनके द्वारा लाए गए थे.

52 भेंट में दिए गए सारे गहनों का तौल, जो उन्होंने याहवेह को चढ़ाया था, जो हज़ारों तथा सैकड़ों के अधिकारियों द्वारा प्राप्त हुआ था, 16,750 शेकेल हुआ.

53 योद्धाओं ने अपने लिए लूट सामग्री इकट्ठी कर ली थी.

54 मोशेह तथा पुरोहित एलिएज़र ने, हज़ारों एवं सैंकड़ों पर चुने हुए अधिकारियों से सोने के गहने स्वीकार कर लिए तथा इन्हें मिलनवाले तंबू पर ले गए, कि यह याहवेह के सामने इस्राएलियों के लिए चिन्ह हो जाए.

Numbers 32:1

1 इस समय तक रियूबेन तथा गाद के वंशजों का पशु धन बहुत विशाल संख्या में हो चुका था. फिर जब उन्होंने याज़र देश तथा गिलआद देश का विचार किया, तो उन्होंने इसे हर एक रीति से पशु धन के लिए उपयुक्त पाया.

2 रियूबेन के वंशज तथा गाद के वंशज मोशेह, पुरोहित एलिएज़र तथा सभा के प्रधानों के पास अपनी विनती ले पहुंच गए.

3 "अतारोथ, दीबोन, याज़र, निमराह, हेशबोन, एलिआलेह, सेबाम, नेबो तथा बेओन,

4 वह देश, जिसे याहवेह ने इस्राएली सभा के लिए हरा दिया है, पशु धन के लिए अच्छा है और हम, आपके सेवक पशुधनधारी हैं."

5 तब उन्होंने यह भी कहा, “यदि हम पर आपकी कृपादृष्टि
बनी है, हम, आपके सेवकों को यह भूमि का भाग दे दिया
जाए; हमें अपने साथ यरदन के पार न ले जाइए.”

6 किंतु मोशेह ने इनकार किया, “कैसे संभव है कि तुम्हारे भाई
तो युद्ध में जाएंगे और तुम लोग यहां आराम से बैठे रहोगे?

7 तुम लोग यहीं इस्राएलियों को याहवेह द्वारा दिए गए देश के
लिए यरदन पार करने में हतोत्साहित क्यों कर रहे हो?

8 तुम्हारे पूर्वजों ने भी उस अवसर पर यही किया था, जब मैंने
उन्हें कादेश-बरनेअ से उस देश का भेद लेने के उद्देश्य से
भेजा था.

9 वे एशकोल घाटी में थे और वहां से उन्होंने उस देश को देखा,
लौटकर उन्होंने इस्राएलियों को हतोत्साहित कर दिया, कि वे
उस देश में प्रवेश न करें, जो उन्हें याहवेह द्वारा दिया जा चुका
था.

10 परिणाम यह हुआ कि उस दिन याहवेह का क्रोध भड़क
उठा और उन्होंने यह शपथ ले ली:

11 ‘मिस्र देश से निकलकर आए बीस वर्ष तथा इससे अधिक
आयु का कोई भी व्यक्ति उस देश का दर्शन ही न कर पाएगा
जिसे देने के शपथ मैंने अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से
की थी; क्योंकि उन्होंने पूरी तरह से मेरा अनुसरण नहीं किया;

12 सिर्फ कनिज़्ज़ी येफुन्नेह के पुत्र कालेब, तथा नून के पुत्र
यहोशूए के सिवाय, क्योंकि ये दो ही याहवेह का अनुसरण करने
में ईमानदार बने रहे थे.’

13 याहवेह का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा और उन्होंने उन्हें
निर्जन प्रदेश में चालीस वर्षों तक भटकते रहने के लिए छोड़
दिया, कि वह सारी पीढ़ी, जिन्होंने याहवेह के विरुद्ध यह बुराई
की थी, नाश हो जाए.

14 “अब देख लो, तुम लोग पापियों की संतान होकर अपने-
अपने पूर्वजों के समान व्यवहार कर रहे हो, कि याहवेह के
भड़के हुए क्रोध को इस्राएल के विरुद्ध और अधिक भड़का
सको.

15 क्योंकि यदि तुम रियूबेन और गाद के वंशजों का अनुसरण
करना छोड़ दोगे, तो वह एक बार फिर उन्हें निर्जन प्रदेश में
अकेला छोड़ देंगे और तुम दोनों इन सब लोगों को नाश कर
दोगे.”

16 तब वे मोशेह की उपस्थिति में आकर कहने लगे, “हम यहां
अपने पशु धन के लिए भेड़शालाओं का तथा अपनी संतान के
लिए नगर बनाएंगे.

17 किंतु स्वयं हम इस्राएलियों के आगे-आगे युद्ध के लिए
शस्त्रों से तैयार हो जाया करेंगे, जब तक हम उन्हें उस देश में
न पहुंचा दें, जबकि हमारी संतान इस देश के वासियों के
कारण गढ़ नगरों में निवास कर रही होगी.

18 हम उस समय तक अपने-अपने घरों में नहीं लौटेंगे, जब
तक हर एक इस्राएली अपने-अपने भाग के अधिकार को
प्राप्त नहीं कर लेता है.

19 क्योंकि हम यरदन के उस पार तथा उससे भी दूर तक
किसी भी भाग के अधिकार का दावा नहीं करेंगे, क्योंकि
हमारा उत्तराधिकार हमें यरदन के इसी ओर, पूर्व दिशा में
मिल चुका है.”

20 यह सुन मोशेह ने उत्तर दिया, “यदि तुम यही करोगे; तुम
याहवेह के सामने स्वयं को युद्ध के लिए तैयार कर लोगे,

21 तुम सभी युद्ध के लिए सशस्त्र योद्धा याहवेह के सामने
यरदन नदी पार करोगे, जब तक तुम याहवेह के सामने से
उनके शत्रुओं को खदेड़ न दोगे,

22 तथा वह देश याहवेह के सामने अधीन न हो जाए; यह पूरा
हो जाने के बाद ही तुम लौट सकोगे, तथा याहवेह एवं इस्राएल
के प्रति इस वाचा से छूट जाओगे और यह देश याहवेह के
सामने तुम्हारा निज भाग हो जाएगा.

23 “किंतु यदि तुम ऐसा न करो, तो देख लेना, तुम याहवेह के
प्रति पाप कर चुके होगे; यह तय समझो कि तुम्हारा पाप ही
तुम्हें पकड़वा देगा.

24 अपनी संतान के लिए नगरों का निर्माण करो, भेड़ों के लिए
भेड़-शालाएं भी तथा वही करो, जिसकी प्रतिज्ञा तुमने की है.”

Numbers 33:1

25 गाद एवं रियूबेन के वंशजों ने मोशेह से कहा, “आपके
सेवक ठीक वही करेंगे, जैसा आदेश हमारे स्वामी देंगे.

26 हमारी संतान, हमारी पत्नियां, हमारा पशु धन तथा हमारे
सारे पशु गिलआद के इन्हीं नगरों में रह जाएंगे.

27 जब आपके सेवक, हर एक, जो युद्ध के लिए तैयार है, युद्ध
के लिए याहवेह के सामने इस नदी के पार जाएगा-ठीक जैसा
हमारे स्वामी का आदेश है.”

28 तब मोशेह ने इनके विषय में पुरोहित एलिएज़र तथा नून के
पुत्र यहोशू तथा इस्राएलियों के गोत्रों के प्रधानों को आदेश
दिया.

29 मोशेह ने उनसे कहा, “यदि गाद एवं रियूबेन के ये वंशज,
हर एक, जो युद्ध के लिए तैयार है, याहवेह के सामने यरदन
नदी को पार करेगा तथा वह देश तुम्हारे वश में कर दिया
जाता है, तब तुम उन्हें स्वामित्व के लिए गिलआद प्रदान कर
दोगे.

30 किंतु यदि वे शस्त्रों से तैयार हो तुम्हारे साथ नदी के पार न
जाएं, तब उन्हें कनान देश में ही तुम्हारे बीच भूमि बांटी
जाएगी.”

31 गाद एवं रियूबेन के वंशजों ने उत्तर दिया, “आपके इन
सेवकों को याहवेह ने जैसा आदेश दिया है, हम ठीक वैसा ही
करेंगे.

32 हम स्वयं याहवेह की उपस्थिति में सशस्त्र कनान देश में
प्रवेश करेंगे तथा हमारी निज भूमि हमारे लिए यरदन के इसी
पार रहेगी.”

33 इसलिये मोशेह ने गाद, रियूबेन तथा योसेफ़ के पुत्र
मनश्शेह के आधे गोत्र को अमोरियों के राजा सीहोन तथा
बाशान के राजा ओग का राज्य, सारे देश इनके नगर तथा
इनकी सीमाएं तथा निकटवर्ती देशों के नगर दे दिए.

34 गाद के वंशजों ने दीबोन, अतारोथ, अरोअर,

35 अतारोथ-षोपान, याज़र, योगबेहाह

36 बेथ-निमराह तथा बेथ-हारान को गढ़ नगरों के रूप में बना
दिया, साथ ही भेड़ों के लिए भेड़-शालाएं भी बना दीं.

37 रियूबेन के वंशजों ने हेशबोन, एलिआलेह, किरयथाईम,

38 नेबो, बाल-मेओन (इन नामों को बदल दिया गया) और
सिबमाह नगर बसाए. उन नगरों को उन्होंने नए नाम दिए,
जिनका वे निर्माण करते रहे थे.

39 मनश्शेह के पुत्र माखीर के वंशजों ने गिलआद जाकर उस
पर अधिकार कर लिया और उसमें रह रहे अमोरियों को वहां
से निकाल दिया.

40 तब मोशेह ने गिलआद को मनश्शेह के पुत्र माखीर के नाम
कर दिया और वे वहां बस गए.

41 मनश्शेह के पुत्र याईर ने जाकर इस क्षेत्र के नगरों पर
अधिकार कर लिया और उन्हें हव्वोथ-याईर नाम दे दिया.

42 नोबाह ने जाकर केनाथ तथा इसके गांवों पर अधिकार
करके उसे अपना ही नाम, नोबाह, दे दिया.

Numbers 33:1

1 यह उस यात्रा का वर्णन है, जो इस्राएलियों द्वारा मिस्र देश से
निकलकर उनकी सेना के द्वारा मोशेह तथा अहरोन के नेतृत्व
में की गई थी.

2 याहवेह के आदेश पर मोशेह ने उनकी यात्रा के प्रारंभिक
स्थानों का लेखा रखा था. ये यात्राएं उनके प्रारंभिक स्थानों के
अनुसार लिख दी गई हैं:

3 उन्होंने पहले महीने की पन्द्रहवीं तारीख पर रामेसेस से
अपनी यात्रा शुरू की. दूसरे दिन, फ़सह उत्सव के बाद
इस्राएलियों ने सारे मिस्रवासियों के देखते-देखते बड़ी निडरता
से कूच कर दिया.

4 इस समय मिस्रवासी याहवेह द्वारा मारे गए अपने सारे
पहलौठों को मिट्टी देने में व्यस्त थे; याहवेह ने मिस्रवासियों के
देवताओं पर भी दंड दिए थे.

5 इसके बाद इस्राएलियों ने रामेसेस से यात्रा शुरू कर
सुक्कोथ में अपने डेरे डाले.

6 उन्होंने सुक्कोथ से यात्रा की और एथाम में डेरे डाले, यह
स्थान निर्जन प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है.

7 उन्होंने एथाम से यात्रा शुरू की और पी-हाहीरोथ की दिशा
में लौटे, जो बाल-जेफोन के सामने है. उन्होंने मिगदोल में डेरे
डाले.

8 उन्होंने पी-हाहीरोथ से यात्रा शुरू की और लाल सागर से
होते हुए निर्जन प्रदेश में जा पहुंचे, और उन्होंने एथाम के
निर्जन प्रदेश में तीन दिन की यात्रा की और माराह में डेरे डाल
दिए.

9 माराह से यात्रा शुरू कर वे एलिम पहुंचे. एलिम में बारह जल
के सोते तथा सत्तर खजूर के पेड़ थे. उन्होंने वहीं डेरा डाल
दिया.

10 एलिम से यात्रा शुरू कर उन्होंने लाल सागर तट पर डेरे
डाले.

11 लाल सागर तट से यात्रा शुरू कर उन्होंने सिन के निर्जन
प्रदेश में डेरे डाले.

12 सिन के निर्जन प्रदेश से कूच कर उन्होंने दोफकाह में डेरे
डाले.

13 दोफकाह से यात्रा शुरू कर उन्होंने अलूष में डेरे डाले.

14 अलूष से यात्रा शुरू कर उन्होंने रेफीदीम में डेरे डाले. यही
वह स्थान था, जहां उनके लिए पीने का पानी उपलब्ध न था.

15 उन्होंने रेफीदीम से यात्रा शुरू कर सीनायी के निर्जन प्रदेश
में डेरे डाले.

16 उन्होंने सीनायी के निर्जन प्रदेश से यात्रा शुरू की और
किबरोथ-हत्ताआवह में डेरे डाले.

17 उन्होंने किबरोथ-हत्ताआवह से यात्रा शुरू की और
हाज़ोरौथ में डेरे डाले.

18 उन्होंने हाज़ोरौथ से यात्रा शुरू की तथा रिथमाह में डेरे
डाले.

19 उन्होंने रिथमाह से यात्रा शुरू की और रिम्मोन-पेरेज़ में डेरे
डाले.

20 उन्होंने रिम्मोन-पेरेज़ से यात्रा शुरू की और लिबनाह में डेरे
डाल दिए.

21 लिबनाह से यात्रा शुरू कर उन्होंने रिस्साह पहुंचकर वहां
डेरे डाल दिए.

22 रिस्साह से यात्रा शुरू कर उन्होंने केहेलाथाह पहुंचकर डेरे
डाल दिए.

23 उन्होंने केहेलाथाह से कूच किया, यात्रा करते हुए शेफर
पर्वत पहुंचकर वहां डेरे डाल दिए.

24 शेफर पर्वत से यात्रा शुरू कर हारादाह पहुंचे, और वहां
उन्होंने डेरे डाल दिए.

25 उन्होंने हारादाह से यात्रा शुरू की, और मखेलौथ पहुंचकर
डेरे डाल दिए.

26 उन्होंने मखेलौथ से यात्रा शुरू की और ताहाथ पहुंचकर
डेरे डाल दिए.

27 उन्होंने ताहाथ से यात्रा शुरू की और तेराह पहुंचकर डेरे
डाल दिए.

Numbers 33:1

28 उन्होंने तेराह से यात्रा शुरू की और मितखाह पहुंचकर डेरे
डाल दिए.

29 उन्होंने मितखाह से यात्रा शुरू की और हाषमोनाथ
पहुंचकर डेरे डाल दिए.

30 हाषमोनाथ से यात्रा शुरू कर वे मोसेराह पहुंचे, और वहां
उन्होंने डेरे डाल दिए.

31 मोसेराह से यात्रा शुरू कर उन्होंने बेने-जाआकन पहुंचकर
डेरे डाल दिए.

32 उन्होंने बेने-जाआकन से यात्रा शुरू कर होर-हग्गीदगाद
पहुंचकर डेरे डाल दिए.

33 उन्होंने होर-हग्गीदगाद से कूच कर योतबाथाह पहुंचकर
डेरे डाल दिए.

34 उन्होंने योतबाथाह से यात्रा शुरू की और आबरोनाह
पहुंचकर डेरे डाल दिए.

35 उन्होंने आबरोनाह से यात्रा शुरू की और एज़िओन-गेबेर
में डेरे डाल दिए.

36 उन्होंने एज़िओन-गेबेर से यात्रा शुरू की और ज़िन के
निर्जन प्रदेश अर्थात् कादेश में पहुंचकर डेरे डाल दिए.

37 उन्होंने कादेश से यात्रा शुरू की और होर पर्वत पहुंचकर
वहां डेरे डाल दिए. यह स्थान एदोम की सीमा पर है.

38 इसके बाद पुरोहित अहरोन याहवेह के आदेश पर होर
पर्वत पर चढ़ गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गई. यह
इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने का चालीसवां वर्ष था. यह
पांचवें महीने की पहली तारीख थी.

39 अहरोन की आयु इस अवसर पर एक सौ तेईस वर्ष थी, जब
होर पर्वत पर उसकी मृत्यु हुई.

40 इसी समय कनान देश के नेगेव में कनानी राजा अराद को
यह मालूम हो चुका था कि इस्राएली इस दिशा में आ रहे हैं.

41 फिर उन्होंने होर पर्वत से प्रस्थान किया, और ज़ालमोनाह
में डेरे डाल दिए.

42 उन्होंने ज़ालमोनाह से यात्रा शुरू की और पुनोन में डेरे
डाल दिए.

43 उन्होंने पुनोन से यात्रा शुरू की और ओबोथ में डेरे डाल
दिए.

44 ओबोथ से यात्रा शुरू कर उन्होंने मोआब देश की सीमा पर
स्थित स्थान इये-आबारिम पर डेरे डाल दिए.

45 इय्यीम-आबारिम से कूच कर उन्होंने दीबोन-गाद में डेरे
डाले.

46 दीबोन-गाद से यात्रा शुरू कर उन्होंने आलमोन-
दिबलाथाइम में डेरे डाले.

47 आलमोन-दिबलाथाइम से यात्रा शुरू कर उन्होंने नेबो के
पास वाले अबारिम पर्वतों के पास डेरा डाला.

48 अबारिम पर्वतों से कूच कर येरीख़ो के सामने मोआब में
यरदन के मैदानों में डेरे डाल दिए.

49 मोआब के मैदानों में उन्होंने यरदन तट पर डेरे डाले थे,
जिसका फैलाव बेथ-यशिमोथ से लेकर आबेल-शित्तिम तक
था.

50 फिर याहवेह यरदन तट पर येरीख़ो के सामने मोआब के
मैदानों में मोशेह के सामने आए और उनसे यह बातें की:

51 “इस्राएलियों पर यह स्पष्ट कर दो, ‘जब तुम यरदन पार कर
कनान देश में प्रवेश करोगे,

52 तुम अपने सामने आए हर एक कनानवासी को खदेड़ दोगे,
उनकी ढाली हुई सारी धातु की मूर्तियों को नष्ट कर दोगे तथा
उनके सभी पूजा स्थलों को भी.

53 तुम इस देश को अधिकार में करके इसमें बस जाओगे;
क्योंकि यह देश मैंने तुम्हें अधिकार करने के लक्ष्य से दिया है.

54 तुम अपने-अपने परिवारों के अनुसार पासा फेंक देश को
बांट लेना. बड़े गोत्र को भूमि का बड़ा भाग तथा छोटे को भूमि
का छोटा भाग. पासा, जो भी दिखाए वही उसका अंश होगा.
तुम्हारा उत्तराधिकार तुम्हारे पितरों के कुलों के अनुसार ही
होगा.

55 “ ‘किंतु यदि तुम उस देश के निवासियों को वहां से न
खदेड़ोगे, तब तो वे, जो वहां रह जाएंगे, तुम्हारी आंखों की
किरकिरी तथा तुम्हारे पंजरों में कीलों के समान साबित हो
जाएंगे. तब उस देश में, जहां तुम बस जाओगे, वे ही तुम्हारे
संकट का कारण साबित होंगे.

56 जो कुछ मैंने उनके साथ करने का वचन किया है, मैं वही
सब तुम्हारे साथ करूंगा.’ ”

Numbers 34:1

1 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

2 “तुम इस्राएलियों को यह आदेश दो: ‘जब तुम कनान देश में
प्रवेश करो, तो यही वह देश होगा, जो तुम्हारे उत्तराधिकार के
लिए ठहराया गया है—हां, कनान देश उसकी सीमाओं
सहित:

3 “ ‘तुम्हारे देश का दक्षिण क्षेत्र ज़िन के निर्जन प्रदेश से एदोम
की सीमा तक पूर्व में लवण-सागर तक होगी.

4 तब तुम्हारी सीमा मुड़कर दक्षिण से अक्रब्बीम की चढ़ाई
की ओर होगी और ज़िन की दिशा में बढ़ती जाएगी और
इसका अंत होगा कादेश-बरनेअ का दक्षिण. यह हाज़ार
अद्दार पहुंचकर आज़मोन से

5 मिस्र की नदी की ओर हो जाएगी और सागर तट पर जाकर
खत्म हो जाएगी.

6 पश्चिमी सीमा के विषय में, महासागर अर्थात् इसका सारा तट
यही तुम्हारी पश्चिमी सीमा होगी.

7 तुम्हारी उत्तरी सीमा: तुम अपनी सीमा रेखा भूमध्य-सागर से
लेकर होर पर्वत तक डालोगे.

8 तब तुम होर पर्वत से लबो-हामाथ तक सीमा रेखा डालोगे
और सीमा का समापन होगा ज़ेदाद पर.

9 सीमा रेखा ज़िफरोन की दिशा में आगे बढ़ेगी और इसका
समापन होगा हाज़ार-एनान पर; यह होगी तुम्हारी उत्तरी
सीमा.

10 पूर्वी सीमा के लिए तुम हाज़ार-एनान से शेफम तक रेखा
डालोगे,

11 सीमा रेखा शेफम से रिबलाह, जो एइन के पूर्व में है, की
दिशा में बढ़ेगी. यह सीमा नीचे की ओर आगे बढ़कर किन्नेरेथ
झील की ढलान पर पहुंचेगी.

12 फिर सीमा यरदन की दिशा में जाएगी और लवण-सागर
पर जा समाप्त हो जाएगी. “ ‘यही होगी हर एक दिशा से
सीमाओं के अनुसार तुम्हें दिया गया वह देश.’ ”

13 फिर मोशेह ने इस्राएलियों को यह आदेश दिया: “यही है,
वह देश, जिसका बंटवारा तुम्हें पासा फेंककर अधिकार के
लिए करना है, जिसे याहवेह ने साढ़े नौ गोत्रों को देने का
आदेश दिया है.

14 रियूबेन गोत्र के वंशजों ने अपने पितरों के कुलों के अनुसार
अपना अंश प्राप्त कर लिया है, वैसे ही गाद गोत्र के वंशजों ने
और मनश्शेह के आधे गोत्र ने भी अपना अंश प्राप्त कर लिया
है.

15 यरदन के इसी ओर, येरीख़ो के सामने भूमि के भाग पर
सूर्योदय की दिशा, पूर्व में, इन ढाई गोत्रों ने अपना अपना
निर्धारित भाग प्राप्त कर लिया है.”

16 याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

17 “मीरास के रूप में भूमि बांटने के लिए चुने गए व्यक्ति ये हैं: पुरोहित एलिएज़र तथा नून के पुत्र यहोशू.

18 मीरास बांटने के लिए तुम हर एक गोत्र में से एक प्रधान चुनोगे.

19 “चुने गए व्यक्ति ये हैं: “यूदाह गोत्र से येफुन्‍नेह का पुत्र कालेब;

20 शिमओन के वंशजों में से अम्मीहूद का पुत्र शमुएल;

21 बिन्यामिन के वंशजों में से कीसलोन का पुत्र एलिदाद;

22 दान के वंशजों में से योगली का पुत्र बुक्की प्रधान था;

23 योसेफ़ के वंशजों में से, मनश्शेह के वंशजों का प्रधान था एफ़ोद का पुत्र हन्‍निएल;

24 योसेफ़ के पुत्र एफ्राईम के गोत्र में से नेता शिफतन के पुत्र केमुएल थे;

25 एफ्राईम के वंशजों में से प्रधान था पारनाख का पुत्र एलिज़ाफ़ान;

26 इस्साखार के वंशजों में से चुना गया प्रधान था, अज्जान का पुत्र पालतिएल;

27 आशेर के वंशजों से चुना गया प्रधान था शेलोमी का पुत्र अहीहूद;

28 नफताली के वंशजों में से चुना गया प्रधान था अम्मीहूद का पुत्र पेदेहेल.”

29 ये सब वे हैं, जिन्हें इस्राएलियों को कनान देश में मीरास की भूमि बांटने का आदेश दिया गया था.

Numbers 35:1

1 इसके बाद याहवेह ने मोआब के मैदानों में येरीख़ो के सामने मोशेह को ये निर्देश दिए,

2 “इस्राएलियों को यह आदेश दे देना कि वे अपनी मीरास में से अपने निज भाग की भूमि में से लेवियों को दे दें, कि वे उनमें रह सकें. तुम लेवियों को नगरों के आस-पास चराइयां भी दे दोगे.

3 वे नगर उनके रहने के लिए हो जाएंगे तथा चराइयां उनके पशुओं, भेड़ों तथा सारे पशुओं के लिए.

4 “वे, चराइयां, जो इन नगरों के चरागाह, जो तुम लेवियों को दे दोगे, उनका फैलाव होगा नगर की दीवार से लेकर बाहर की ओर चारों ओर साढ़े चार सौ मीटर होगा.

5 तुम नगर के बाहर, उत्तर दिशा में नौ सौ मीटर, दक्षिण दिशा में नौ सौ मीटर, पूर्व दिशा में नौ सौ मीटर, तथा पश्चिम दिशा में नौ सौ मीटर प्रमाण नापोगे, जिससे वह नगर इस पूरे क्षेत्र के बीच में हो जाएगा. यह क्षेत्र उस नगर से संबंधित उनकी चराई हो जाएगा.

6 “वे नगर, जो तुम लेवियों को दे दोगे, छः शरण शहर होंगे, जो तुम उस खूनी के लिए रख दोगे, जो भागकर यहां आएगा. इनके अलावा तुम बयालीस नगर और भी दे दोगे.

7 लेवियों को दिए गए सारे नगरों की संख्या होगी अड़तालीस; और इनके साथ उनकी चराइयां भी शामिल हैं.

8 यह ध्यान रहे कि तुम वे नगर, जो इस्राएलियों से लेकर लेवियों को दोगे, बहुत बड़े क्षेत्रफल के कुलों से अधिक नगर तथा छोटे क्षेत्रफल के कुलों से कम नगर बांट दोगे, हर एक गोत्र अपनी-अपनी मीरास के अनुपात में कुछ नगर लेवियों के लिए दान करेगा.”

9 इसके बाद याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी,

10 “इस्राएलियों से यह कहो: ‘जब तुम यरदन पार कर कनान देश में प्रवेश करोगे,

Numbers 35:1

11 तब तुम स्वयं वे नगर ठहराना, जो तुम्हारे शरण शहर होंगे,
कि जब किसी व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति की हत्या भूल से हो
गई हो, वह भागकर इन नगरों में आ छिपे.

12 ये नगर तुम्हारे लिए पलटा लेनेवाले से सुरक्षा के शरण होंगे,
कि सभा के सामने बिना न्याय का कार्य पूरा हुए उस हत्यारे
को प्राण-दंड न दे दिया जाए.

13 वे नगर, जो तुम इस उद्देश्य से दोगे, तुम्हारे लिए छः शरण
शहर नगर लिखे होंगे.

14 तीन नगर तो तुम यरदन के पार दोगे तथा तीन कनान देश
में; ये सभी शरण शहर होंगे.

15 ये छः नगर इस्राएलियों के लिए तथा विदेशी के लिए तथा
उनके बीच बसे लोगों के लिए शरण नगर ठहरेंगे, कि वह
व्यक्ति, जिससे किसी की हत्या भूल से हो गई है, भागकर यहां
शरण ले.

16 “ ‘किंतु यदि उसने वार के लिए लोहे का इस्तेमाल किया था,
जिससे वह मृत्यु का कारण हो गया, वह व्यक्ति हत्यारा है.
हत्यारे का दंड मृत्यु ही है.

17 यदि उस व्यक्ति ने हाथ में पत्थर लेकर उससे वार किया
था, कि उसकी मृत्यु हो जाए और उसकी मृत्यु हो ही गई, वह
व्यक्ति हत्यारा है; हत्यारे को निश्चित ही मृत्यु दंड दिया जाए.

18 अथवा उसने अपने हाथ में कोई लकड़ी की वस्तु लेकर वार
किया हो, कि इससे उसकी मृत्यु हो जाए और परिणामस्वरूप
इस व्यक्ति की मृत्यु हो ही गई है,

19 तो वह व्यक्ति हत्यारा है; हत्यारे को निःसंदेह मृत्यु दंड दिया
जाए.

20 यदि घृणा के कारण उसने उस व्यक्ति को धक्का दे दिया
है या घात लगाकर कोई वस्तु उस पर फेंकी है, जिससे उसकी
मृत्यु हो गई,

21 या शत्रुता में उसने उस पर अपने हाथ से ही वार कर दिया
हो, परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई है; तो जिस व्यक्ति ने
ऐसा वार किया है, उसे निश्चित ही मृत्यु दंड दे दिया जाए; वह
हत्यारा है, जैसे ही बदला लेनेवाला उसे पाए, उसकी हत्या कर
दे.

22 “ ‘किंतु यदि बिना किसी शत्रुता के, उसके द्वारा भूल से
धक्का लगने पर या बिना घात लगाए उसने उस पर कोई वस्तु
फेंक दी हो,

23 या कोई भी पत्थर की घातक वस्तु को उसने बिना स्थिति
का ध्यान रखे ऊंचे स्थान से नीचे गिरा दिया है और उस व्यक्ति
की मृत्यु हो जाती है, जबकि न तो उससे उसकी शत्रुता थी
और न उसकी मंशा उसकी हानि करने की थी,

24 इस स्थिति में सारी सभा इन्हीं नियमों के आधार पर हत्यारे
तथा बदला लेनेवाले के बीच न्याय करेगी.

25 सारी सभा हत्यारे को बदला लेनेवाले से छुड़ाकर उसे शरण
शहर में लौटा देगी, जहां वह तत्कालीन, पवित्र तेल से
अभिषिक्त महापुरोहित की मृत्यु तक निवास करता रहेगा.

26 “ ‘किंतु यदि हत्यारा किसी भी अवसर पर अपने इस शरण
शहर की सीमा से बाहर निकल जाए, जहां वह भागकर आया
हुआ था

27 और इस स्थिति में बदला लेनेवाला उसे नगर सीमा के बाहर
पकड़ लेता है और वहीं उसकी हत्या कर देता है, तो बदला
लेनेवाले को हत्या का दोषी नहीं माना जा सकेगा.

28 क्योंकि सही तो यही था कि वह शरण शहर में ही
महापुरोहित की मृत्यु होने तक सीमित रहता. महापुरोहित की
मृत्यु के बाद ही वह अपने मीरास के नगर को लौट सकता था.

29 “ ‘ये सभी तुम्हारे लिए सारी पीढ़ियों के लिए तुम्हारे सारे घरों
में न्याय की विधि होगी.

30 “ ‘कोई भी व्यक्ति यदि किसी की हत्या कर देता है, गवाहों
की गवाही के आधार पर हत्यारे को मृत्यु दंड दिया जाए, किंतु
एक व्यक्ति की गवाही पर किसी को भी मृत्यु दंड न दिया
जाए.

31 " 'इसके अलावा, हत्या के दोषी से तुम उसके प्राण दान के बदले मूल्य स्वीकार नहीं करोगे. तुम उसे निश्चय ही मृत्यु दंड दोगे.

32 " 'तुम उस व्यक्ति से बदले में मूल्य नहीं लोगे, जो अपने शरण शहर से भागा हुआ है, कि वह महापुरोहित की मृत्यु के पहले ही अपने देश जाकर रह सके.

33 " 'इसलिये तुम उस देश को अपवित्र न करो, जिसमें तुम रह रहे हो; क्योंकि रक्त भूमि को अपवित्र करता है और उस भूमि के लिए कोई भी प्रायश्चित किया जाना संभव नहीं है, जिस पर रक्त बहा दिया गया है, सिवाय उसी के रक्त के, जिसके द्वारा वह रक्त बहाया गया था.

34 तुम उस देश में निवास करते हो, तुम उसे अपवित्र नहीं करोगे, जिसके बीच में मेरा निवास है; क्योंकि मैं, वह याहवेह हूं, जिनका निवास इस्राएलियों के बीच में है.' "

Numbers 36:1

1 योसेफ़ के पुत्रों के परिवारों में से मनश्शेह के पौत्र, माखीर के पुत्र गिलआद के वंशजों के प्रधानों ने मोशेह, प्रधानों, जो इस्राएलियों के परिवारों के प्रधान थे, के सामने आकर विनती की:

2 "याहवेह ने मेरे स्वामी को आज्ञा दी है, कि इस्राएलियों को मीरास में भूमि दे दी जाए. मेरे स्वामी को याहवेह से आज्ञा प्राप्त हुई थी, कि हमारे भाई ज़लोफेहाद की मीरास उसकी पुत्रियों को दे दी जाए.

3 किंतु यदि वे इस्राएलियों में से किसी दूसरे गोत्र के पुत्रों में विवाह करती हैं, उनकी मीरास तो उस गोत्र में मिल जाएगी, जो उनके पतियों के है.

4 इस प्रकार योवेल वर्ष में उन युवतियों के गोत्र की मीरास हमारे पूर्वजों की मीरास में से घटती चली जाएगी."

5 इसलिये मोशेह ने याहवेह की आज्ञा के अनुसार इस्राएलियों को आदेश दिया, "योसेफ़ गोत्र के वंशज सही बात कह रहे हैं.

6 याहवेह ने ज़लोफेहाद की पुत्रियों के विषय में यह आदेश दिया है, 'उन्हें अपनी इच्छा के वर से विवाह कर लेने दिया जाए; सिर्फ ध्यान रहे कि वे अपने पिता के गोत्र के परिवार में ही विवाह करें.'

7 परिणामस्वरूप इस्राएलियों में मीरास एक गोत्र से दूसरे गोत्र में न मिल सकेगी. ज़रूरी है कि हर एक इस्राएली अपने-अपने पिता के गोत्र की मीरास को अपने अधिकार में बनाए रखे.

9 इस प्रक्रिया से कोई भी मीरास एक गोत्र से अन्य गोत्र में न मिल पाएगी; क्योंकि इस्राएलियों के लिए ज़रूरी है कि हर एक अपनी-अपनी मीरास को अपने ही अधिकार में बनाए रखे."

10 जैसा आदेश याहवेह ने मोशेह को दिया था, ज़लोफेहाद की पुत्रियों ने ठीक वैसा ही किया.

11 महलाह, तिरज़ाह, होगलाह, मिलकाह, तथा नोहा ने, जो ज़लोफेहाद की पुत्रियां थी, अपने ही गोत्र में से अपनी-अपनी पसंद के वर से विवाह कर लिया.

12 उन्होंने योसेफ़ के पुत्र मनश्शेह के पुत्रों के परिवार में से ही विवाह कर लिया, जिससे उनकी मीरास उन्हीं के गोत्र में उनके पिता के परिवारों ही के अधिकार में बनी रही.

13 ये सभी वे आदेश तथा नियम हैं, जो मोशेह के द्वारा याहवेह ने इस्राएलियों को येरीख़ो के पास यरदन नदी के निकट मोआब के मैदानों में दिए थे.